দশ্যে। দয় গণ্নার জন্ম লক্ষার আদশরাশির লগ্নমানামুসারে অংশ হইতে পল, বিপল; কলা হইতে বিপল, অনুপল এবং পল, বিপলাদি ভারা অংশাদি জ্ঞান।

(মহ, কন্তা,	তুলা, শীন।	র	ব, সিংহ, বু	শ্চিক, কুম্ভ।	मिथ्न, कर्करे, धसू, मकत्र				
बःभ	পল	বিপল	অংশ	পল	বিপল	অংশ	পল	বিপল		
হলা	বিপল	অনুপল	কলা	বিপল	অমুপল	কলা	বিপল	অহুপল		
31	7	1 50	1 > 1	6	1 66	1 3 1	> .	1 85		
> !	30	1 02	2	29	1 64	2	52	1 05		
9	29	1 85	0	52	: 48	0	. જર	1 36		
8	29	1 8	8	02	1 42	8	8 3	1 8		
4	86	1 20	4	8.8	00	a	co	1 60		
6	ea	1 00	0	63	1 85	0	68	1 09		
9	68	1 62	9	88	1 85	9	90	1 25		
ь	98	1 6	6	92	1 88	6	4.9	1 6		
2	60	1 28	8	49	1 83	9	20	1 43		
>-	25	1 80	100	29	1 80	50	307	1 80		
22	202	1 65	32	200	1 05	33	334	1 219		
25	222	1 25	35	233	1 06	25	259	1 25		
20	>50	1 25	20	35%	1 08	30	40.6	1 00		
35	259	1 88	>8	200	1 02	28	>6.	1 88		
30	209	1 .	24	588	1 00	50	202	1 00		
99	786	1 36	36	540	1 24	35	393	1 34		
20	269	। ७२	39	350	। २७	39	360	1 2		
74	200	1 85	34	592	1 23	36	220	1 81		
79	395	1 8	50	275	1 22	129	2 . 8	1 08		
२०	274	1 20	20	666	1 20	20	₹5€	1 2.		
52	298	1 99	52	203	1 56	1 53	२२७	1 8		
२२	२०७	1 42	1 22	665	1 30	22	२७७	1 65		
65	२१७	1 6	२७	559	1 >8	20	289	1 0		
53	355.	1 28	28	203	1 25	28	200	1 38		
20	२७५	1 80 -	24	285	1 30	25	263	1 30		
२७	280	1 65	20	203	1 5	25	298	1 619		
59	500	1 72	29	२७३	1 6	129	220	1 82		
45	२वञ	45 1	24	293	1 8	25	202	1 24		
52	266	1 88	65	२४३	1 2	1 65	075	1 >8		
00	296	1 .	00	588	1 0	00	253	1 -5		

ক্লিড-ৰ্যোভিব।

লকার লগুমানের কলা বিকলাদি ছইছে বিপলাদি জ্ঞান।

	८ सर,	কন্তা, তুল	, भीन		८भव, व	ভা, তুলা,	मीन
কলা	পল	প্ৰ	বিপল	কলা	পল	পল	বিপগ
বি,ক.	1.1	বিপল	অমূপল	বি,₹,	141	বিপল	অমূপদ
,	۰	8	38	05	8	89	36
2		30	৩২	95	8	69	92
9		29	66	00	æ	a	48
8		99	8	98		>4	8
æ	•	8 %	2.	100	æ	28	20
6	•	44	96	30	Œ	.00	96
9	3	8	42	09	a	82	82
6	>	58	ь	40	æ	22	ь
2	>	2 3	28	00	4	>	28
>-	3	92	8 .	80	4	50	9.
22	>	85	00	83	6	29	69
25	>	45	25	83	9	59	25
20	2	•	24	8.5	6	9	24
38	2	2	83	88	9	89	88
30	2	29	•	84	8	69	•
10	2	₹₩	38	8.00	9	6	20
39.1	2	৩৭	20	89	٩	> 0	95
221	2	8 😘	84	84	9	₹8	84
29	2	60	8	89	9	08	8
20	9	Œ	20	C.	٩	80	50
55	9	>8	99	6>	9	65	00
22	9	२७	65	42	ь	3	65
50	9	99	b	20	b-:	22	ь
5.8	9	85	₹8	48	br.	50	₹8
20	9	62	8 .	aa	b	59	8.
२७	8	•	60	6.0	ь	3 F	40
29	8	20	25	29	br	8 b;	>5
54	8	29	54	er	br	89	5.60
53	8	२৮	88	63	>	1	88
90	8	10 P	0	00	9	20	•

नकात्र नश्चमारमञ्जला विकलानि रहेर्ड

विभनाति खान।

	রুষ, সি	ংহ, বৃশ্চিব	, কুম্ব		বুৰ, বি	দংহ, বৃশ্চি	ক, কুন্ত
কল1	পল	পল	বিপল	কলা	পল	পল	বিপল
वे,क,		বিপল	অভূপন	বি,ক,		বিপল	অমূপল
5		۵	er	93	¢	ь	e b
2		33		03	a	36	64
9	•	23	48	00	a	२৮	48
8	•	೨৯	65	98	æ	96	
4		83		20	æ	86	
6	•	63	84	99	e	er	85
4	>	2	86	09	4	6	8 9
b	>	39	88	96	4	78	88
2	>	23	88	93	9	24	82
>0	>	93	8.	80	3	94	8 .
>>	>	89	96	85	9	86	00
32	2	63	26	82	9	26	96
20	2	2	98	80	9	ь	98
28	2	29	७२	88	9	24	. 65
20	2	59	0.	84	9	24	90
200	2	60	3 F	89	9	26	24
39	2	82	26	89	9	84	२७
36 1	2	G to	28	86	9	25	28
50	9	9	22	82	ъ	ь	22
20	9	29	2.	00	ь	36	2.
23	9	59	36	es	ь	२४	24
22	9	29	34	42	6	24	36
20	9	ន់គ	58	00	Ъ	84	>8
28	9	69	32	48	ъ	er	25
20	8	9	3.	aa	2	P.	> -
28	8	>> .	5	45	2	72	ъ
29	8	59	•	89	2	52	6
26	8	60	8	Q 17	2	94	8
28	8	82	2	63	2	85	3
00	8	63	•	60	5	@b	

ল্কার লগ্নমানের কলা বিকলাদি হইতে

विभनापि छान।

થં

	ষিথ্ন,	কর্কট, ধর	र, मक्त		मिथून,	কৰ্কট, ধ্ৰ	হু, মকর
কলা	পল	পল	বিপল	কলা	পল	পল	বিপল
বি,ক,		বিপল	অমুপল	বি,ক,		বিপল	অমূপল
3		>.	8 %	05	a	99	86
2		23	७२	95	۵	88	૭ર
0		ં ર	34	00	a	60	ab
8		89	8	98	9	9	98
a		60	e.	20	*	30	¢,
6	>	8	99	29	y	29	96
9	>	34	22	99	•	O.P.	22
ь	>	26	ь	96	•	85	.6
2	>	৩৬	48	02	5	62	49
50	>	89	8 .	80	9	> .	8.
>>	>	er	20	85	9	52	રહ
25	2	2	53	82	9	95	38
30	2	33	er	80	9	82	er
>8	. 5	90	89	88	9	co	88
20	ર	85	9.	8 4	ь	8	90
319	2	53	35	88	6	26	36
39	9	9	2	89	ь	20	2
74	9	50	84	86	ъ	96	85
79	•	23	98	88	8	99	98
२०	9	90	२०	00	b	ab	2.
23)	9	86	6	62	2	2	19
२२	9	60	65	65	2	. 53	65
२७	8	9	96	100	2	9.	94
₹8	8	36	२९	88	5	85	₹8
₹ €	8	२৯	30	ea	۵	62	> 0
519	8	99	60	63	>0.	2	60
२१	8		82	19	> .	20	8 2
54	Œ	>	45	ab	30	≥8	२৮
59	Œ	>5	>8	63	30	20	28
9.	Œ	२७	0	40	> .	86	

মেষ, কলা, তুলা ও খীন। বৃষ, সিংহ বৃশ্চিক ও কৃষ্ট।

লহার লগমান পল হইতে কলাদি। লহার লগমান পল হইতে কলাদি।

†ল ,	কলা, বি,	ক, অ,	ক, প্র	ক,অ,	প্র,ক,	পল,	কলা,	ৰি, ৰ	ক, ভ	া, ক,	প্র, ব	ক, অ,প্ৰ,ব
,	৬।	२৮।	२৯।	२५।	>	>	৬।	>	۱ ۵	١ ۽	381	29
۲.	521	. 601	eb	8२ ।	74	2	>2	1 2	. 2	8 1	२৮।	¢8
e	והל	२६।	२৮।	ا د	२१	9	22-1	৩।	9	७।	801	42
8	201	001	491	२८ ।	98	8	२८	8	8	۱ ح	¢91	8৮
¢	७२ ।	२२ ।	२७।	8¢1	8¢	æ	00	ı v	ı	>1	> 1	>8
19	७৮।	¢ •	८७ ।	ঙা	¢8	b	৩৬।	9 1	,	٥।	`२७ ।	85
9	8¢ 1	۱ هر	२৫।	२৮।	9	9	83	1 6	1 2	æ 1	821	ъ
ь	e> 1	891	¢8	821	>0	b	84	ه ا	1 4	91	ee I	૭૯
5	641	>७।	२८।	> 1	२२	۶	48	1 >•	1 4	• 1	>•1	2
,	981	88 1	601	951	0)	>0	50	1 5	21	21	₹8	। २৮

মিপুন, কর্কট, ধনু ও বকর। লক্ষার ল্যামান পল হইতে কলাদি।

পল	ক, বি	া, ক,	অ, ক,	વ્યં, ₹,	च, क्ष, क
,	æI	08 I	२५।	eeı	>•
2	>> 1	ъ	801	c •1	٠.
•	>61	801	¢• 1	२० ।	26
8	२२ ।	291	२१।	8 • 1	65
•	२१।	۱ ده	1 69	७० ।	45
. 9	७०।	२७ ।	>> 1	8>1	>
, 9	७ ।	• 1	೨೨।	991	><
ь	881	98	e e 1	951	२२
8	¢• I	1 6	>91	२७।	૭૨
>•	at 1	801	1 60	551	84

ক চিহ্নিত টেবিলের প্রথম কলমে ১ হইতে ৩০ পর্যান্ত অংশ ও কলা, ২র কলমে মেন্দ্র কন্তা, তুলা ও মীনের লন্ধার লগ্নমান পলের ত্রিংশাংশ, তৃতীয় কলমে ১ হইতে ৩০ পর্যান্ত অংশ ও কলা চতুর্থ কলমে বৃষ, সিংহ, বৃশ্চিক ও কুন্ত রাশির লন্ধার লগ্নমান পলের ত্রিংশাংশ, পঞ্চম কলমে ১ হইতে ৩০ পর্যান্ত অংশ ও কলা এবং ষষ্ঠ কলমে মিথুন, কর্কট, ধন্ত ও মকর রাশির লন্ধার লগ্নমানের ত্রিংশাংশ অন্তিত হইয়াছে। ধ চিহ্নিত টেবিলের প্রথম কলমে ১ হইতে ৩০ পর্যান্ত কলা বিকলাদি, বিতীয় কলমে দেব, কলা তুলা মীন রাশির লকার লগমান পলাছসারে কলা বিকলাদি হইতে বিপল ও অহুপলাদি। তৃতীয় কলমে ৩১ হইতে ৬০ পর্যান্ত কলা বিকলাদি অহ এবং চতুর্থ কলমে পূর্বোক্ত রাশি সকলের লহার লগমান পলাহুসারে কলা বিকলাদি হইতে বিপল অহুপলাদি সলিবেশিত হইরাছে।

त्रभीत्माइन हटकत्र विवत्र ।

রমণীমোহন চক্রের ১ম কলমে ১ হইতে ৩০ পর্যান্ত অংশ, বিতীয় কলমে অংশাহ্নারে মেবের অম্পেলীয় লগ্নানপল, তৃতীয় হইতে বাদশ কলম পর্যান্ত ৩৬০ অংশাহ্নারে বৃষ্ ইতে মীন পর্যান্ত হাদশ রাশির অম্পেলীয় লগ্নানপল অক্টিত হইরাছে। রবিনার্গেবৈ কোন রাশির যে অংশে যত পল বিপলাদি হইবে, এই চক্র হারা ভাষা শহরে জানা হাইবে। যথা—২৪৩ পলে কোন্ রাশির কত অংশ হইবে, তাহা জানতে হহলে দেখিতে হইবে যে, কোন্ রাশিতে অথাং কোন্ তাজে ঐ অক্ট দুই হয়। এইলে দেখা যাইতেছে যে, ব্ররাশির স্তন্তে ঐ অক্ট সামিবিশিত রহিরাছে। স্থতরাং ইহা বারা রাশি অবগত হওয়া গেল। অনন্তর অংশ জানিতে হইলে দেখিতে হইবে যে, ঐ ২৪০ পল ঐ কল্মের বাম্দিকে প্রথম কল্মের কোন্ অংশের সহিত এক রেখায় দৃষ্ট হয়। ইহাতে দেখা যাইতেছে যে, ঐ অক্ট প্রথম কল্মের ২ অংশের সহিত এক রেখায় বিশ্বন্ত রহিরাছে। অতএব ইহা হারা জানা গেল যে, ২৪০ পল ব্যরাশির ২ অংশ। এইরূপ পলাক্ষরারা রাশি ও তাহার সংশ কল্যি জানা যাইবে।

আনন্দমোহন চক্রের বিবরণ।

আনন্দমোহন চক্তে অর্থাৎ দশমলগ্নের টেবিলেও ঐরপে গণনা দারা লগমানপলাছে কোন্ রাশির কোন্ অংশ হইবে, তাহা জানিতে পারিবেন।

বেরূপ পলাকে অংশ পরিজ্ঞাত হওয়া যায়, তজ্ঞপ অংশেও পলাক জানা যাইবে।
স্ক্রপণনার্থ পলকে বিকলাদি করিবার জন্ত আরও ত্ইটা চক্র আজিত করা হইল।
ঐ চক্রের ১ম কলমে ১ ইইতে ১০ পল এবং ২য় কলমে ঐ সংখ্যা সুসারে যত বিকলাদি
হইতে পারে, তাহা সন্ধিবেশিত করা হইল।

महस्क नगुष्कृ है।

লয়ক্ট গণনা কৰিতে হইলে প্ৰথমত সায়ন রবিক্ট অর্থাৎ জন্ম কিছা প্রশ্নকালে রবি দৃখ্যমান বাৎসরিক গতিতে সায়ন মেবরাশির আরম্ভ হইতে অভীট কাল পর্যন্ত त्रविमार्क (कान् त्रांनित कान् अःनानित्व अविष्ठ आह्न, मर्थकानिक भूनःनक्ष्तिव ফলিত-জ্যোতিষের প্রথম খণ্ডের লিখিত ক্টগণনার নিয়মাম্নারে অথবা মংপ্রকাশিত গ্রহক্ত পঞ্জিকা দৃষ্টে তাহা নিরূপণ-করিয়া রবিক্টের সেই রাশি ও অংশাদির সংখ্যা এক স্থানে সংস্থাপিত করিবে। তৎপরে মংকৃত রমণীমোহনচক্র দৃষ্টে ঐ রবিক্টের রাশি-সংখ্যাতে কোন্রাশির কত পলাক হয়, তাহা নিরপণ পূর্কক দিতীয় হানে হাপিত क्तिएड हरेरव । अनस्तर के तियमु होत्र अवशिष्ठ अः भ कलामित्य करु भन विभनामि हरेरव মৎকৃত কলাবিকলাদি হইতে পলবিপল করার চক্র দৃষ্টে তাহা নিরূপণ পূর্বক ঐ দ্বিতীয় श्रातिशानिज भनात्कत महिल रवांग मिला रव रवांगकांक हहेरत, लाहारक हेडेन ७ वर्षाः **জন্মকালীন দণ্ডে** যত পল হইবে, তাহার সহিত যোগ দিবে। যদি যোগজাল ৩৬০০ পলের অধিক হয়, তাহা হইলে উহা হইতে ৩৬০০ পল বিলোগ করত অবশিষ্টাক্ষ তৃতীয় স্থানে স্থাপন করিবে। পরে দেখিতে হইবে যে, ঐ পলাক্ষ রমণীমোহন চক্রের কোন্ রাশির ক্তন্তের অঙ্কের সহিত প্রায় সমান হয়। যে স্থানের অঙ্কের সহিত প্রায় সমান দৃষ্ট হইবে, সেই স্তন্তের উপরিভাগে যে রাশি অন্ধিত আছে, সেই রাশিই লগ্ন এবং ঐ পলাক্ষদংখ্যার বামে ঐ চক্রের প্রথম কলমে সরল রেখা কল্পনা করিলে যে অংশের সহিত মিলিত দেখা यहित, त्मर्रे मिलच द्यान त्य जक मुछे हहेत्व, त्मरे जकमःशाहे जाम विनेता পরিগণিত ছইবে। অনস্তর যে পলাক্ষ অবশিষ্ট থাকিবে, তাহাতে যত কলা বিকলাদি হইতে পারে, মৎকৃত পল হইতে কলা বিকলাদি করিবার চক্র দৃষ্টে তাহা নিরূপণ পূর্বক তাহা ঐ রাশি ও অংশসংখ্যার দক্ষিণে স্থাপিত করিবে; তাহা হইলেই সায়নমতে লগ্নফুট স্থির हरेरव। अ प्रायम नशक्षे इंटरक अवनाः न विरवाश कविरनरे नित्रवनमरक नशक्षे हरेदा।

मृष्टीख ।

১৮০৯ শক ১লা বৈশাথ বেলা তুই প্রহরের সময় অর্থাৎ ১৫ দণ্ড ৩৫ পল সময়ে কোন বালকের জন্ম হইলে সহজে তাহার লগ্ন কুট নিরূপণ করিতে হইলে, প্রথমত তাৎকালিক সায়ন রবিক্ট •া২১৪৪।৫৮।২১।৩৪ রাখ্যাদিকে এক স্থানে সংস্থাপিত করা গেল। পরে ইহার রাশি মেষের ২১ অংশ, ৪৪ কলাদিতে কত পল হইবে. তাহা জ্ঞানিতে হইবে; স্থতরাং পূর্ব্বোক্ত রমণীমোহন চক্রের প্রথম স্তম্ভের যে স্থানে ২১ অংশ অভ্নিত আছে, তাহারে দক্ষিণে মেষের স্তম্ভে যে ১৫৮ পল, ১২ বিপল লিখিত আছে, তাহাকে একস্থানে সংস্থাপিত করা গেল। পরে মৎকৃত কলা বিকলাদি হইতে পল বিপলাদি করার চক্র দৃষ্টে জ্ঞানা যাইতেছে যে, ৪৪ কলাতে ৫ পল, ৩১ বিপল, ২৮ অমুপল; ৫৮ বিকলাতে ৭ বিপল, ১৬ অমুপল, ৫৬ প্রত্যমুপল; ২১ অমুকলাতে ২ অমুপল, ৩৮ প্রত্যমুপল, ১২ অভিপ্রত্যমু

পল এবং ৩৪ প্রত্যাস্কলাতে ৪ অতি প্রত্যাস্থান, ১৬ অত্যতি প্রত্যাস্থান ও ৮ মহাপ্রত্যাস্থান হয়। এই সমস্ত অবকে পূর্ব্বোক্ত ১৫৮ পল ১২ বিপলের সহিত যোগ করিরা বোগলার ১৬৯৫০।৪৭ পলাদি হইল। অনজ্ঞর ইইদণ্ড ১৫।৯৫ কে পল করিলে যে ৯৯৫ হয়, তাহাকে পূর্ব্বোক্ত ১৬৯৫০।৪৭ পলাদির সহিত যোগ করিলে ১০৯৮ পল, ৫০ বিপল, ৪৭ অস্থান হয়। এইকণ দেখিতে হইবে যে, এই অল রমণীমোহন চক্রের কোন্ রাশির ওছের অব্রের সহিত প্রায় সমান হইক্রে পারে। স্ত্রাং দেখা ঘাইতেছে যে, কর্বটরাশির ওজের ১০৯৬ পলসংখ্যা এ অক্লের সহিত প্রায় সমান, অর্থাৎ ঐ অল ১০৯৬ হইতে কিঞ্চিং অধিক; অত্রব ঐ ১০৯৬ পল যে কর্বট রাশির ২৭ অংশ এবং অবশিষ্ট ২ পলে যে ১০ কলা হয়, ইহাই সায়ন লক্ষ্ণ টু ইইল। ইহা হইতে অয়নাংশ ২০।৪৯।১৬।৩০ বিরোগ করিয়া যে ৬ অংশ ২০ কলা ক্রল, ইহাই ঐ সময়ের নিরয়ণ লগ্ন কুট।

এইরপেই দশনোদয় লগু নিরূপণ করিতে হয়, কেবল প্রভেদ এই য়ে, পশ্চায়ত হইলে য়য়ানে ইইলওকে পল করিয়া যোগ করিতে হইবে, তথায় পশ্চায়ত দওকে পল করিয়া যোগ করিবে আর প্রাঙ্নত হইবে, রবিক্ট উল রাশি যোগ করিবে এবং য়ে য়ানে ইইদঙ্কে পল করিয়া যোগ করিবে। ইইদুরুরিক্টুকুকে পল করিয়া ঐ পলের সহিত উয়তদওে য়ত পল হয় তাহা যোগ করিবে। যোগজায় পল আনন্দনোহন চক্রের য়ে রাশির স্তন্তের পলাক্রের সহিত প্রায় সমান হইবে, সেই স্তন্তের রাশিই লগু এবং ঐ চক্রের প্রথম কলমে সরলরেঝা করনা করিলে যে অংশের সহিত মিলিত দেখা যাইবে, সেই মিলিত স্থানে যে আর দিই হইবে, সেই অক্সংখ্যাই অংশ বলিয়া পরিগণিত হইবে। অনন্তর যে পণাক্ষ অবশিষ্ট থাকিবে, তাহাতে য়ত কলা বিকলাদি হইতে পারে, মংকত লক্ষোদয় লগুমানের শল হইতে কলাবিকলাদি করিবার চক্রদৃষ্টে তাহা নিরূপণ পূর্বাক তাহা ঐ রাশি ও অংশ-সংখ্যার দক্ষিণে স্থাপিত করিবে, তাহা হইলেই সায়নমতে দশম লগুক্ট স্থির হইবে। ঐ পায়ন দশম লগুক্ট হইতে অয়নাংশ বিয়োগ করিলেই নিরয়ণমতে দশম লগুক্ট স্থির হইবে। ঐ

আনলমোহন চক্র বারা বেরপে দশমোদয় গণনা করিতে হয়, তাহার দৃষ্টাস্ত পৃথক্রূপে গণিত করিয়া এছলে আর প্রদর্শিত হইল না। কারণ বেরপে রমণীমোহন চক্র
দৃষ্টে লগুক্টু গণনা করা হইয়াছে, ইহাও সেই প্রণালীমতে গণনা করিতে হইবে,
কেবল রমন্ত্রমোহন চক্রছলে আনলমোহন চক্র ব্যবহার করিতে হইবে এবং লক্ষেদয়
লগুমানের টেবিল দৃষ্টে পল হইতে কলা বিকলাদি এবং কলা বিকলাদি হইতে পলবিপ্লাদি প্রহণ করিবে, এইমাত্র প্রতেদ।

लयमात्रेषे ।

বিনা পরিপ্রমে গণ্ধ নির্পর করিবার জন্ধ গণ্ধসারণী নামে একটা চক্ত জন্ধিত হবৈন।
ইহা বারা জন্ন সমন্বের মধ্যে জন্ম কিবা প্রাক্ষালের উনিত গ্রেন্থের জংশ জানা বাইবে। এই
অগুনারণী দশুপলাদি ঘটিত। ইহার প্রথম ভল্ডে ১ হইতে ৩০ পর্যান্ত জংশ, রিতীর জন্তে
বৈশাধ মাস প্রবং মেবরাশি ও রবিভৃক্তির জন্ধ; তৃতীর জন্তে জ্যেষ্ঠ মাস, র্বরাশি এবং
রবিভৃক্তি; প্রস্তুপ চতুর্থ হইতে ১০ শ পর্যান্ত জল্ভে আবাঢ় হইতে চৈত্র মাস, তলিনে বিশ্ব
ইইতে মীন পর্যান্ত রাশি এবং তলিনে যথাবথ রবিভৃক্তির জন্ধ বিভ্রম্ভ ইইরাছে। রবি
দৃশ্রমান বাংস্ত্রিক গতিতে একবংস্ত্রে ৩৬০ জংশ গন্ধন করিরা থাকেল এবং দৈনিক
দৃশ্রমান গতিতে ৬০ দণ্ডের মধ্যে একবার ভ্রমণ করেন। এই নির্মেই সারণীচক্ত প্রন্ত
ইইরাছে। রবিক্টে বারা ভ্রত্তি এবং ইইনগুপলাদি বারা ভোগ্য বিবেচনা করিরা
দিয়লিখিত চক্তে জংশাদি নিরূপণ করিবে। যেরূপে সারণীচক্ত বারা লগু নিরূপণ
করিতে হইবে, তাহা নিমে ক্ষিত হইতেছে।

যে মাসের যে তারিখে যত দণ্ডাদির সময় জন্ম কিয়া প্রশ্ন হইবে, সেই আৰু এই সারণীচক্রের সেই মাসের সেই তারিখের রবির ক্টের অংশসংখ্যার দণ্ডাদির সহিত যোগ করিলে যত দণ্ড পল হইবে, সেই অরু এই চক্রের মধ্যে যে রাশির যে উল্লের আরের সহিত প্রায় ঐকা হইবে, সেই অরু অংশস্তন্তের যে আরুর সহিত প্রক পঙ্কিতে, দেখা যাইবে, সেই অরু প্রেণিক্ত রাশি অর্থাং লগ্নের উদিত অংশ ও কলাদি হইবে। বোগজার ৬০ হইতে অধিক হইলে ৬০ বিরোগ করিবে।

मृक्तासः।

১৮০৯ শকের ১৫ই চৈত্র রাজি ছই প্রহরের সময় কোন বাসকের জন্ম হইলে তংকানে কোন্ লগ্নের কোন্ অংশ উদিত আছে, সমসারণী টেবিল দৃষ্টে বেরণে ভাহা গণনা করিতে হর, দৃষ্টান্ত প্রদর্শনার্থ তাহা ক্থিত হইতেছে।

গ্রহন্দুট পঞ্জিকা দৃষ্টে এবং গণনা করিয়া দেখা গেল যে, ঐ দিবস রাজি ছই প্রাহর সমরে নিরম্বণমতে রবি মীন রাশির ১৫ অংশ ২৬ কণা ৮ বিকলাতে অবস্থিত আছে। লগ্ননারণীর প্রথম কলমের ১৫ অংশ হইতে দন্ধিণদিকে এক পঙ্জিতে মীন রাশির অভের অহ মধ্যে ৫৮ দণ্ড, ৬ পল, ৩ বিপ্লের সহিত মিলিত হওরার ঐ আই প্রহণ করিয়া ঐ ৫৮ দণ্ড, ৬ পল, ৩ বিপ্লের সহিত আম নালের সময় ৪৫ দণ্ড, ৮ পল, ৩০ বিপল যোগ দিলে যোগজাক ১০০ দণ্ড, ১৪ পল, ৩০ বিপল হয়। ঐ আই ৬০ দণ্ডের অমিই হওয়ার ১০৩ দণ্ড, ১৪ পল, ৩০ বিপল হইতে ৬০ দণ্ড বিরোপ ক্রিলে ৪৩ দৃষ্ড,

১৪ পদ, ৩০ বিশল অবশিষ্ট থাকে। এইজন দেখা বাইতেছে বে, ঐ ৪৪ গণ, ১৪ শল, ৩০ বিশল বহু রাশির অভের ৪০ গণ, ১৮ শল, ৫৭ বিশেষের সহিত আর সমান। ঐ লভ প্রথম তভের ৫ অংশের সহিত মিলিত হওরার ঐ বালফের জন্মবহে শিংহ রাশির ৫ অংশ উদিত আহে লানা বাইতেছে; স্কুতরাং নির্মণমতে লগ্ধকুই সিংহ রাশির ৫ অংশ হির হইল।

मण्डमापत्र मधु विवत्र ।

লশ্যেদর্গারণী দৃত্তে দের:প কর কিছা প্রান্তালে দশ্য লগের গণনা করা বাইন্ডে পারে, তাহা নিরে প্রকাশিত হইতেছে। দশ্য ভাব নির্পর করিতে হইলে প্রশ্ন কিছা কর কালে, রবি কোন্ রাশির কত জংশে জবহিত আছে, তাহা কানিতে হইবে, পরে রবি বে রাশির বৃত্ত জংশে থাকিবে, সেই রাশির সেই কান্র জর প্রহণ করিয়া এক ছানে রাখিবে। পরে দেখিতে হইবে বে, প্রের কিছা হ্রম কোন সমর হইয়াছে। তাহা যদি দিবা হুই প্রহরের পর হয়, ভবে বত দঙাদি পরে হইবে, তাহা প্র করের সহিত যোগ করিতে হইবে এবং হদি দিবা হুই প্রহরের পূর্বেহর, পূর্বেহর, ভাহা হইলে বিরোগ করিছে হইবে. বদি প্র জাই হইতে বিরোগ না হয়, তাহা হইলে পূর্বাক্ষে বাইট বেগেগ করিয়া বিরোগ করিছে হইবে। যদি বাইটের অধিক হয়, তাহা হইলে বাইট বিরোগ করিয়া বাহা অবশিষ্ট থাকিবে, তাহা দশমোদর সারণীচক্রের বে পঙ্জির আকের সহিত সমান বা প্রান্ত করিবে, তাহার পঙ্জিনসংখ্যা যত হইবে, সেই রাশির ভত জংশ দশম ভাব হইবে।

मुक्ठान्छ।

বদি ১২৮৫ সালের এই কার্ত্তিক তারিখে ১৮ লগু ১২ পলের সমর কোন বালকের ক্যা কিছা কোন প্রশ্ন হর, তাহা হইলে নিয়ালখিত প্রক্রিয়ামতে দশমভাব নির্ণয় ক্রিতে হইবে।

ঐ সময় দশমভাব গণনা করিতে হইলে, অগ্রে দেখিতে হইবে বে, প্রাণ্ট কিখা জন্ম হই প্রহরের পূর্বে কি পরে হইরাছে। ১৮ দশু ১২ পল সময়ে জন্ম হওরাতে দৃষ্ট হইল, বে দিবা ছই প্রহরের পর জন্ম হইরাছে; অভএব বত দশু পরে হইরাছে, তাহা এই লারণীচক্তের অকে বোপ করিতে হইবে। উপরের লিখিত দশমোদর সারণীচক্তে রবিক্ট ছুলা রাশির ৬ অংশের সংখ্যার অহ ৩০।৫৫।৩৬, ইহা এক হানে হাণন করিবা রাখিতে হইবে। পরে ঐ দিবসের ছই প্রহরের পরিমাণ ১৪ দশু ১৪ পল ইহা অপেকা
কর্ম ৫৮ পল পরে প্রার্থিক জন্ম সমর, অভএব পূর্বেহাণিতার ৩০।৫৫।৩৬ এর শহিত ও দশু দুচ্চ পল বোপ করিলে ৩৪।৫৩।৩৬ হর, এই অহ দশমোদর সারণীচক্তের

কোন্ রাশির কোন্ শঙ্কির সহিত আর সমান হইরাছে রেখিতে হইবে। দৃষ্ট হইল, ইহা কুশ্চিক রাশির ছুই শঙ্কির অকের বহিত আর সমান হইরাছে; অতএব কৃশ্চিক রাশির ২ অংশ দশম তাব ছির হইল।

লগ্ননারণী বারা তুলরণে লগ্নস্ট গণনা হইরা থাকে। স্ক্রপণনা বেরণে করিতে হর, তাহা পূর্বেই বলা হইরাছে।

এইক্ষণ ইংলগুীয় ক্যোতির্বিদ্ পঞ্চিতগণ যে বে প্রণালীমতে লগ্নস্টু সাধন করিয়া থাকেন, তাহা আমার প্রকাশিত (Extracts from works on astrology) এবং অফান্ত গ্রন্থ ইহতে নিয়ে উদ্ভূত করিলাম।

Instructions for erecting a theme of heaven and

Casting the figure of a nativity.

The theme, or squre of the heavens, (Which like a colestial map gives at one view the ascending, descending, and culminating constellations,) may be erected four different ways; viz. by a celestial globe, by the zodiacal planisphere, by trigonometrical calculations, or by "Tables of Houses," calculated for the pole or latitude of birth.

How to erect a figure of the heavens for any part of the world by means of a terrestrial glove.

"Ist, Raise the North Pole in north latitude to the degree of the latitude of the place; bring the hour and minute of the right ascension of the meridian to the brass meridian which surrounds the globe vertically-then will the sign and degree of the ecliptic, that is on the cusp of the 10th, be seen, on the meridian and that which is rising be seen on the eastern horizon. 2nd, Reduce the pole to the degree given in the table of poles, add two hours to the right ascension on the meridian, and bring two hours of that right ascension to the eastern horizon, when the longitude on the cusp of the 11th will be found to be cut by the horizon. 3rd, Alter the pole to the degree of the pole of the 12th house; add two hours to the right ascension, and bring the amount to the cast horizon, when the longitude to be placed on the 12th house will be found to be cut by the horizon. 4th, Leave the pole at that elevation, add four hours more to the right ascension, and bring the amount to the eastern horizon, when you will find the longitude of the 2nd house out by the horizon. Lastly, reduce the pole to the elevation as for the 11th house, add two hours more to the right ascension, and bring it to the horizon when the longitude on the cusp of the 3rd will be found to be cut by the horizon."

Raphael.

To erect a Figure of the Heavens by the Rules of Trigonometry for any Latitude.

To the given clock time apply the equation of time, and you will have apparent time, which is to be added to, or subtracted from, the sun's right ascension in time as occasion requires, for the right ascension of the M. C. in time, which convert into degrees and minutes, and, to that, add 30° for the oblique ascension of the eleventh house, 300 more for the oblique ascension of the twelfth, &c. till you come to the third. Then, to obtain the degree of the ecliptic upon the cusp of the M. C.; to the cosine of the obliquity of the ecliptic, add the cotangent of the R. A. of M. C. from the nearest equinox, and the sum is the cotangent of its longitude from the same equinoctial point. For the other houses you must obtain their polar elevation, and then, to the cosine of the oblique ascension of the house, add the cotangent of the pole of the house, and the sum is the cotangent of the first arc, to which, if the oblique ascension of the house is nearest to Aries, add the obliquity of the scliptic 23 deg 28'; but if it is nearest to Libra, subtract 23 deg. 28' from it, and the sum of difference is the second arc. Then say, as the cosine of the second arc is to the cosine of the first, so is the tangent of the oblique ascension of the house to the tangent of its longitude from Aries or Libra, which, if the second angle is less than 90 deg., is to be accounted from the same equinoctial point which the oblique ascension was reckoned from, but, if more than 90 deg., it is to be accounted from the contrary equinoctial point,

Placidus.

Precepts to erect, or calculate, a figure of the heavens by spherical trigonometry.

The Examples are here combined with the Precepts.

To the R. A, of the solar time of birth reckened from the preceding noon-day, add the R. A. of the sun, calculated to the same time. The sum, if under 360°, is the R. A. of the Meridian; but if the sum exceed 360°, then reject 360° from the sum, and the remainder will be the R. A. of the Meridian or tenth house required. Then, by the continued adding of 30 degrees to the R. A. of the tenth, we obtain the oblique ascensions of the eleventh, twelfth, first, second, and third houses, as in the following.

Example.	As	before	stated,	at	rectiled	time	of Napoleon'	s birth,			4.6
the tenth house	was		***		491490	1.6	*****	****	· 1	1120	50'
Add	20.				*******		01010	******	٠	30	ď

2-5		কলিত:	ৰ্জ্যোতি	1		{ न	ने के है	1
The sum is the	0. A. of 1	he eleventh , u	nder the P	ole of				
16° 54')	*****	******	104 404	****		*****	1420	59
88A	*****	***	*****			*****	30	0
The sum is the	0. A. of t	he twelfth (und	ier the Pol	e of	٠			
81° 55	000 equ	*****	*****	*****			1720	59
BBA	Astron	****	*****	*****		*****	30	0
The sum is the		ae first (under	the Pole of	ŧ				
41° 40'	49.500		*****	*****		*****	2020	59
Add	0.0x0 0.0x	*****	******	******		*****	30	0
The sum is the	O. A. of th	e second (unde	r the Pole	of				
310 3	*****		*****			•••••	2320	59
Add	*****	*****		00 * 0 0 1		*****	80	0
The sum is the	O. A. of t	he third (unde	r the Pole	of				
16° 54')	*****		*****	*****	,		262°	59
	ree and minu	te of the Eslip		tenth is	fon			
The dogs	ree and minu		tic on the			nd from	ita R.	A.
The dog:	A. exceeds	te of the Eslip	tic on the	we use t	he e	nd from ccess abo	ita R. ve 90°,	A. a.
The dogs Now as the R. being the R. A	A. exceeds	te of the Eclip 90°, and is less	tic on the than 180°, case the R.	we use t	he es	nd from ccess abo h, 112° 5	ita R. ve 90°, i9′ less	A. a.
The dogs Now as the R. being the R. A	A. exceeds from O Ca distance fr	te of the Eclip 90°, and is less ancer O'. In this	tic on the than 180°, case the R.	we use t	he e: tent	nd from ccess abo h, 112° 5	ita R. ve 90°, i9′ less	A. a. 90°
The dogs Now as the R. being the R. A leaves 120 55	A. exceeds from O Ca distance fr	te of the Eslip 90°, and is less ancer 0°. In this com 0° Cancer 0	tic on the than 180°, case the R. Y. We then	A. of the say, by	he es tent Form	nd from coss abo h, 112° 5 ula No. 2,	its R. ve 90°, i9' less	A. a. 90°
The dogs Now as the R. being the R. A leaves 120 55 As Radius Sin	A. exceeds from 0° Ca distance from	te of the Eclip 90°, and is less ancer 0°. In this rom 0° Cancer 0	tic on the than 180°, case the B. Y. We then	A. of the say, by	he estent Form	nd from keess abo h, 112° 5 ula No. 2,	its R. ve 90°, 9° less 10-00	A. an 90°
The degr Now as the R. being the R. A leaves 120 55 As Radius Sin To Cosine	A. exceeds from 0° Ca distance from of R. A. a'	te of the Eclip 90°, and is less meer 0°. In this com 0° Cancer 0°.	tic on the than 180°, case the R.	A. of the say, by	he estant Form	nd from scees abo h, 112° 5 ula No. 2,	its R. ve 90°, 9° less 10°00 9°90	A. an 90° 0000
The dogs Now as the R. being the R. A leaves 120 55 As Radius Sin To Cosine So is Tangent	A. exceeds from 0° Ca fistance free of of R. A. a' f Longitude	te of the Eclip 90°, and is less meer 0°. In this com 0° Cancer 0°.	tic on the than 180°, case the B.	we use t A. of the say, by :	he estent Form	nd from scees about 112° 5 ula No. 2, 200° 18′ 59	its R. ve 90°, 9° less 10°00 9°90	A. an 90° 0000 6251 2750
The dogs Now as the R. being the R. A leaves 120 55 As Radius Sin To Cosine So is Tangent	A. exceeds from 0° Ca distance fr e of Cf. A. a' f. Longitude So we see th	te of the Eclip 90°, and is less ancer 0°. In this rom 0° Cancer 0°. Cancer 1°. Cancer 1°.	tic on the than 180°, case the B. Y. We then	A. of the	he extent Form 33° 2 22 4 21 tenth	nd from scees about 112° 5 ula No. 2, 200° 18′ 59	its R. ve 90°, 9° less 10°00 9°90	A. an 90° 0000 6251 2750
The dogs Now as the R. being the R. A leaves 120 55 As Radius Sin To Cosine So is Tangent	A. exceeds from 0° Ca distance fr e of Cf. A. a' f. Longitude So we see th	te of the Eclip 90°, and is less uncer 0°. In this rom 0° Cancer 0°. Cancer a' Cancer hat 21° 16′ is u	tic on the than 180°, case the B.	A. of the say, by	he extent Form 33° 2 22 4 21 tenth	nd from scees about 112° 5 ula No. 2, 200° 18′ 59	its R. ve 90°, 9° less 10°00 9°90	A. an 90° 0000 6251 2750
The degr Now as the R. A leaves 120 58 As Radius Sin To Cosine So is Tangent of	A. exceeds from 0° Ca distance from of R. A. a' Longitude So we see th	te of the Eclip 90°, and is less ancer 0°. In this rom 0° Cancer 0°. Cancer 1°. a' Cancer 1°. at 21° 16° is up d the Cusp of E	tic on the than 180°, case the B. V. We then pon the cus leventh Ho Formula 1	A. of the sport the pure, we related to the sport the sp	he estant Form 330 2 22 4 21 tenth nust	nd from keess abo h, 119° 5 ula No. 3, 200° 18′ 59 16 honse,	its R. ve 90°, 9° less 10°00 9°96 9°65	A. an 90° 00000 5251 2750 9001
The dogs Now as the R. being the R. A leaves 120 58 As Radius Sin To Cosine So is Tangent To Tangent of	A. exceeds from 0° Cs distance fr e of Cf Longitude So we see th To fine	te of the Eclip 90°, and is less ancer 0°. In this rom 0° Cancer 0°. Cancer 1°. a' Cancer 1°. at 21° 16° is up d the Cusp of E operate by	tic on the than 180°, case the B. Y. We then on the customer than the customer tha	A. of the say, by :	Form 33° 2 22 d 21 tenth must	nd from scess abo h, 112° 5 ula No. 2, 200° 18' 59 16 house,	its R. ve 90°, 9° less 10°00 9°96 9°65	A. an 90° 00000 6251 2750 99001
The degr Now as the R. A leaves 120 58 As Radius Sin To Cosine So is Tangent of We have	A. exceeds from 0° Ca fistance fr of R. A. a' fit Longitude So we see th To fine	cancer Cancer a' Cancer d the Cusp of E operate by is case the Pole	tic on the than 180°, case the B. V. We then pon the cus leventh Ho Formula 1 of the elevere the O.	a say, by	he extent Form \$300 2 122 1 tenth nust	nd from scess abo h, 112° 5 ula No. 2, 200° 18' 59 16 house,	its R. ve 90°, 9° less 10°00 9°96 9°65	A. an 90° 00000 6251 2750 99001
The degr Now as the R. A leaves 120 58 As Radius Sin To Cosine So is Tangent of We have	A. exceeds from 0° Ca fistance fr of R. A. a' fit Longitude So we see th To fine	Cancer Ca	tic on the than 180°, case the B. V. We then pon the cus leventh Ho Formula 1 of the elevere the O.	a say, by	he extent Form \$300 2 122 1 tenth nust	nd from keess about, 112° 5 ula No. 2, 200° 18′ 59 16 house, 54′, and by 52° 59	its R. ve 90°, 9° less 10°00 9°96 9°65	A. an 90° 00000 00000 A. 52°
The degr Now as the R. A leaves 120 55 As Radius Sin To Cosine So is Tangent of We have 143° 59°, to fin	A. exceeds from 0° Ca	Cancer C.	tic on the than 180°, case the B. V. We then pon the cus leventh Ho Formula 1 of the elevere the O.	p of the buse, we real ancer O'	he extent Form \$300 2 122 1 tenth nust	nd from keess about, 112° 5 ula No. 2, 200° 18° 59° 16° house, 254′, and by 52° 59° a say.	its R. ve 90°, 19° less 10°00 9°96 9°65 9°55 10°00 10°	A. an 90° 00000 00000 A. 52°

नगुष्क् है।] कृति	নত-ক্যোতিৰ	1			700
To Co-tangent of the 4th	***	***	20	50	10 41963
Here we take the difference the 4th a	ba	***	23	28	
For the 5th	***		_ 2	88	
Because the O. A. 142° 59' is more th	an 90°, and less	than 3	70°.		
Then say,					
As Cosine of 5th (co-src)	***	***	2	98	0:09046
le to Cosine of 4th	•••	***	20	50	9.97068
So is Co-tangent of O. A. a' Cancer	•••	***	52	58	6.87738
To C -tangent of longitude a' Cancer	***	***	54	48	9-84847
This 54° 48' a' 0° Cancer 0' answers		1	Leo 24	48	which is
the cusp of the eleventh house.					
To find the Cusp of the Twol	fth House.				
The O. A. is 172° 59'_88° 59' from		We use	82° 59	as the a	rgument of
O. A. in finding the longtude from	o Cancer O.				
By Fo	ormula No. 7,	say			
As Radins					10.00000
Is to Sine of O. A. from 0° Cancer O	•	***	820	59'	9.99674
So is Co-tangent of Pole of the tw	velfth	***	81	3	10-22087
To Co-tangent of the 4th	000	***	81	14	10-21711
Here again we take the difference of and of	the 4th,		28	28	
For the 5th	***	•••	_7	46	
Then say,					
As Cosine 4th (co-arc)		***	70	46"	0.00400
Is to Cosine 4th	***	***	31	14	9-93200
So is Co-tangent of O. A. a' Cancer	949	•••	82	59	9-09019

To find the Cusp of the Ascendant, or First House.

83

380

56

56' Virgo

9.08619

To Co-tangent of longitude a Cancer ...

which gives for the cusp of the twelfth house

The O. A. of the first, as before found, is 202° 59°. This exceeds 180°, and is less than 270°; we therefore, by Formula No. 7, use the excess above 180°, viz. 22° 59°, forthe argument of O. A. from 0° Libra 0°.

348	নিত-জ্যো	তিৰ।		[न	भुक्कु है।
& Radius	***	616			10 00000
Is to Cosine O. A. form Libra	***	***	220	59	9-96408
So is Co-tangent of the latitude of h	oirth	***	41	40	10-35065
To the Tangent of a' 4th		409	44	. 2	10-01473
We again take the difference beween	a the 4th and	i	23	28.	
For the 5th	***	• • •	20	84 I	because the
O. A. 202° 59' is above 90° and 16	ess than 270	o; then by	the soco	nd unal	ogy of the
7th Formula we say,	٠,	2.3			
As Cosine of the 5th (co-arc)	000	***	200	34"	0.02860
Is to Cosine of the 4th		0.0 9	44	. 2	9.85669
So is Tangent of O. A. from Libra	***		22	59	9.62750
To Tangent of Longitude from 0° I.	ibra O	409	18	2	9.51279
Therfore the Cusp of the Ascendant	t is	***	18	2 L	ibra
The O. A. of the 2d is 232° 5 argument of O. A. from Libra by the			Libra U,	to be t	ised as the
As Radius	•••	***			10.00000
Is to Cosine O. A. from Libra	100	***	520	591	9.77962
So is Co-Tangent of Pole of 2d Ho	1180	***	31	3	10.22037
To Co-Tungent of a' 4th	***	•••	45	0	10.00000
The difference beween the 4th and	***	***	23	28	
is the 5th	***	***	21	32	
Ву	the second	Analogy,			
As Cosine of 5th (co-arc)	***	866	210	32"	0-03142
Is to Cosine of 4th	***	**	45	0	9-84949
So is Tangent O. A. from Libra	000	***	52	59	10-12262
To Tangent of Longitude from 0° 1	ibra	•••	45	14	10.00353
This Arc 45° 14° answers to 15° 14 8	Corpis for t	t.		use.	

To find the Cusp of the Third House.

The O. A. of the Third House is 262° 59' which is 82° 59' more than 180°, but less than 270°: we use 82° 59' as the Argument of O. A. from O° Libra O'.

By the 7th Formula say.

4 4						
As Radius	***	***	***		***	10.00000
Is to Cosine of O. A. a' Li	ibra	***		820	59'	9.08692
So is Co-Tangent of pole		use	***	16	54	10.51738
To Co-Tangent of a 4th		499	***	68	6	9-60430
The difference between the	o 4th and	104	***	23	28	
is the 5th	***	***	***	44	38	
	By the	e second A	nalogy, say			
As Cosine of 5th (co-arc)	***	***	410	38'	0.14775
Is to Cosine of 4th	100		***	68	6	9.57169
So is Tangent of O. A. a	Libra -	***	***	82	59	10 90981
To Tangent of Longitude	e from O	Libra O'		76°	47	10 62925
This Arc 76° 47' gives 16	6° 47′ Sagit	tarius for	the Cusp of	the 3d Ho	uso,	

Having found the Cusps of the six Eastern Houses, whereby the rest of the twelve become known-

भावेषितिशाल है। है म।

ইংরাজি মতে দশমাদি লগ্নসারণী দারা লগ্নাদি নিরূপণ করিতে হইলে অগ্রে সাইডিরিয়াল টাইম জানিতে হয়। এজন্য ইংরাজী পঞ্জিকা হইতে প্রতি দিবসের সাইডিরিয়াল টাইম উদ্ধৃত করিয়া তাহার একটা চক্র অভিত করিয়া নিমে দেওয়া হইল।
এই সাইডিরিয়াল টাইম লগুন নগরের গণিত সমন্ন বিধায় ঐ সমন্ন হইতে ৫৮ সেকেণ্ড
বিরোগ করিলেই অন্মদ্দেশের সাইডিরিয়াল টাইম স্থির হইবে। এই সাইডিরিয়াল টাইম
চক্রে ১৮০৮ শকের ১০ই চৈত্র হইতে ১৮০৯ শকের ৩০ শে কাল্পন পর্যান্ত প্রতিদিনের
সাইডিরিয়াল টাইম অভিত করা গেল। এই চক্রে বর্তমান এক বংসরের সাইডিরিরাল টাইম দেওরা হইরাছে বটে, কিন্ত ইহা দারা অতিরিক্ত কালেরও গণনা করা যাইতে
পারিবে। এই সাইডিরিয়াল টাইমের প্রথম কলমে অর্থাৎ প্রথম স্তন্তে মাসের এক হইতে
ত দিন অভিত করা হইরাছে। দিতীয় স্তন্ত হইতে ত্রেয়াদশ স্তন্ত পর্যান্ত পর্যান্তনে হৈত্র
মাস হইতে ফাল্পন মাস পর্যান্ত অভিত হইরাছে। সেই মাস সহজে জানিবার জন্ত প্রতি
কলমের মন্তক্লেপরি মাসের নাম লিখিত হইল। ঐ সকল মাসের নিমে প্রতি কলমে
সাইডিরিয়াল টাইমের ঘণ্টা, মিনিট, সেকেণ্ডের অভ অভিত হইল। বে মাসের যে
ভারিখের সাইডিরিয়াল টাইম জানিতে হইবে, তাহা প্রথম কলমে অভাই মাসের অভাই
ভারিখের অভ হইতে অভীই মাসের কলমে একটা রেখা কর্মনা ক্রিয়া সর্বভাবে

সাইডিরিয়াল টাইম, ১৮০৮ শকের ১০ই চৈত্র

	े देख	देवभाश	देखार्छ	<u> </u>	শ্ৰাবণ	ভান্ত
ভারিখ	म, मि, तम,	च, मि, त्म,	খ, মি, সে,	च, मि, त्म,	च, मि, दम,	च, मि, त्म,
5	*** *** ***	> 36 50	७ २१ ७३	c >> c>	9 25 3	2 85 75
2	*** ***	३ २२ २२	0 0) 08	£ 008>	9 02 66	≥ 8% ₽
•	*** ***	2 00 22	७ ७६ ७२	6 39 86	9 90 66	> ¢ · ¢
	*** *** ***	3 09 30	७ ७३ २४	@ 85 82	9 89 45	2 63 7
	*** *** ***	\$ 85 58	9 80 28	@ 8@ Ob	9 45 85	a theb
6		> 8¢ F	• 99 22	£ 83 0€	9 64 86	> > 28
9	***	2 89 6	96774	e e-> >>	9 42 83	>
4	*** *** ***	> 40 >	0 66 26	e ea ab	५०० ५	> > > 89
2		> ८७ ८४	0 69 99	\$ 5 28	b 9 08	> > > > 89
> !	· ২ ৩৮	2 • 61	8 0 4	6 6 52	P >> 0>	> > > 85
22	• 6 04	2 8 65	8 9 8	466 0	P 38 29	>0 25 09
> 2	• > • >>	2 7 87	8 5 5 5	\$ 32 38	P >> <8	30 20 08
>9	e 28 54	2 32 88	8 58 69	\$ 39 33	b २.३ २०	>0 82 00
28	• 24 58	2 36 85	8 >5 48	8 23 9	6 59 39	30 00 2
50	• 55 55	२ २० ७१	9 22 62	5 3 a 8	P 02 28	\$0 09 0
30	• २७ ५१	2 28 08	8 २७ ६९	6 25 .	p 00 30	>0 8> 5
59	• ৩ 58	२ २७ :७०	88 00 88	७ ७२ ११	७ ०० १	> 86 >6
24	• 48 >0	२ ७१ २१	■ 98 80	e 36 63	P 89 9	20 89 7:
22	• ८५ १	2 06 28	8 25 39	8000	b 89 o	> 40 >
२•	• 85 9	5 80 50	8 8> 55	≥ 88 89	b c. 69	> 68 4
52	• 85 •	2 85 59	8 89 00	७ अन् ८०	b 48 45	22 2
25	· 8> ¢9	२ ८७ ३०	8 60 50	9 65 80	b cb 85	>> 8 63
२७	• 60 60	2 65 20	8 48 50	\$ 65 515	> 286	22 P.64
₹8	• 68 60	2 89 9	8 67 30	9 0 00	2 8 8 6	>> >5 6:
24	> > 84	0.0	e 5 20	9 8 22	2 3 . 09	>> > > 8 w 8 8
२७	> 680	9 9 65	6 6 70	9 6 50	2 78 09	>> 30 86
२१	40 G C	3 9 6 9	6 >0 3	9 25 50	२ २१ ०५	>> 58 5:
26	> >0 00	9 55 62	e >8 .	9 34 33	क २२ २क	>> 34 0
49	2 24 25	\$ >4 85	6 24 5	9 20 36	a रक्ष ४६	22 05 01
40	\$ 5 5 5	७३४६०	6 5 6 5	9 28 32	à ७० २२	>> 06 9:
9>		2865 6	€ 3€ € €	१ २४ क	٦ ٩٥ ١٣	>> 80 35
૭૨	,			9 02 4	2 24 26	

হইতে ১৮০৯ শকের ৩০ শে ফাল্লন পর্য্যন্ত।

ادرا	আখিন	কার্ত্তিক	অ গ্ৰহায়ণ	পৌষ	<u> মাঘ</u>	ফাৰ্ন
চারিখ	ৰ, মি, সে,	च, भि, त्म,	च, मि, त्म,	ঘ. মি, সে,	ঘ, মি, সে,	খ, মি, সে,
3	>> 88 24	\$0 92 85	>6 8 . 64	39 00 36	১৯ এ৪ ৩২	२३ २५ ६२
2	>> 8F 5>	>0 80 or	54 88 48	39 00 34	३३ ७৮ २३	२५ ७२ १३
9	33 65 34	30 €0 38	> 8 8 6>	59 80 55	>> 82 26	2> 05 85
8	>> 60 >8	>0 68 9>	>	39 89 b	১৯ ८४ २२	25 8 . 83
	25 . 22	30 67 39	>6 69 88		50 Co 50	22 88 02
lo lo	58 8 9	38 3 35	30 . 85	59 65 8	22 68 26	25 85 04
	52 b 8	38 633	36 8 34	>9 ee >	29 64 25	२५ ६२ ७३
9	25 25 2	38 30 39	>6 P 08	59 eb 49		२५ ६५ २५
b	>> >0 69	78 78 78		2 5 48		22 0 24
8				>> 6 60	₹• ७ €	22 8 23
>.	>5 >9 68	28 24 20	20 20 39	2F 20 89	50 30 2	25 29
:2	>> >> 60	>8 22 9	70 50 50	2F 23 88	50 20 64	
>5	SR R9 89	३९ २७ ७	>> 58 50	>> >> 80	20 39 48	
20	>5 0> 80	78 0	१० ४५ १५	३४ २२ ७१	२० २५ ६५	55 20 2
38	>5 24 8,	18 90 69	20 05 20	७० ०० ००	₹0 ₹8 84	₹₹ ₹• ₹
36	१२ ७३ ७७	\$8 29 60	20 00 20	34 30 50	२० २२ ६९	२२ २६
36	Se c8 56	38 85 60	30 80 0	अरू ७८ २७	२० ७० ८५	२२ २৮
39	>5 89 00	28 38 86	>≈ 88 ⊙	१० ०० २०	२० ७१ ७१	55 07 8.
24	25 62 56	\$8 88 86	36 84 65	Str 90 59	₹ 8 98	२२ ७६ ६।
KC	>2 66 50	38 60 09	36 63 64	SV 89 38	₹ 8€ 90	3 € 39 €
₹.	25 69 25	18 69 04	> 66 65	>> &> >>	₹ 88 34	55 80 8
25	३७ ७ ३७	>6 > 25	45 63 ex	>> ee 9	30 60 50	२२ 89 8
22	30 9 32	>6 6 59	39 0 80	25 45 O	₹0 €9 ₹0	45 C2 8
20	30 33 3	36 256	39 982	35 0 0	25 5 59	₹₹ €€ 0
28	30 36 6	>4 >0 22	39 33 03	:> 9 44	25 6 50	२२ ६३ ड
₹€	३७ ३३ र	36 29 29	39 38 38		52 220	20 00
20 1	20 55 69	26 52 26	39 38 98	>> > 60	२२ ३० ७	२० १ २
29	20 50 88	>6 56 55	>9 30 34	>> >8 60		२० ३३ २
24			Y	३० ३४ ८७		20 30 3
	20 00 65	1	39 39 38	79 55 82	3> 30 65	
25	20 08 8h	36 30 4	39 33 33	१५ २७ ०५	2) 28 & 6	२७ ३३ ३१
0.	>4 ap 34	>6 09 >		>> 20 06	43 8º	२० २० >
0)	*** *** ***			*** *** ***	••• •••	
८२ ।						

টানিলে যিশিত স্থানে সেই মাসের সেই তারিখের সাইডিরিরাল টাইম স্থানিতে পারিবেন।

সাইডিরিয়াল টাইম কি, তাহা পাঠকবর্গের বিদিতার্থে বলা হইতেছে। যে কোন দিবদ বে দমরে মাধ্যাহ্নিক রেপার উপর কোন নক্ষত্র দৃষ্ট হয়, সেই সময়াবধি তাহার পর দিবদ সেই রেথার উপর যে সময়ে তাহাকে পুনর্বার দেখা যায়, সেই সময় পর্যান্ত কালকে নাক্ষত্রিক দিন কছে, ইহাকেই সাইডিরিয়াল টাইম বলা যায়। নাক্ষত্রিক দিনের পরিমাণ ২০ ঘণ্টা, ৫৬ মিনিট, ৪৪ সেকেণ্ড। পৃথিবী নিজ মেরুদেণ্ড অবলম্বন করিয়া এই সময়ের মধ্যে একবার পরিভ্রমণ করিয়া থাকে। এই সাইডিরিয়াল টাইম প্রত্যহ বেলা হই প্রহরকাল পর্যান্ত গণিত হইয়া থাকে; বিশেষত যে স্থানে রাশিচক্র এবং বিষ্করেথার মিলন হয়, সেই স্থান হইতে প্রত্যেক দিবসের সাইডিরিয়াল টাইম গণিত আরম্ভ হয়।

हैश्ताकामाक मनमामि नशमात्री।

এই সারণীচক্রের প্রথম স্বস্তে মাধ্যাজ্ঞি রেণার সরল উপান আছ, দিতীয় স্তান্ত দশম ছানের, তৃতীয় ভত্তে একাদশ স্থানের, চতুর্থ ভত্তে ছাদশ স্থানের, পঞ্চম স্তত্তে লগের, বঠ স্তত্তে ছিতীয় স্থানের ও স্থম স্ততে তৃতীয় স্থানের রাশি এবং উদিতাংশাদি লিখিত হইয়াছে।

বে মাসের যে তারিথে যত ঘণ্টা ও যত মিনিট সময়ে লগ্নকুট নির্ণর করিশার প্রয়োজন হইবে, প্রথমতঃ সেই দিনের সাইডিবিরাল টাইম কত, জানিরা তাহা হইতে ৫৮ সেকেও বিয়োগ করিয়া এক লানে রাখিবে। পরে প্রশ্ন কিষা জন্মকালে দিবা ছই প্রহর হইতে যত ঘণ্টা মিনিট গত হইরাছে, ভাহার প্রতি ঘণ্টার ১০ সেকেও গ্রহণ করিয়া যত হটবে, তাহা ঐ গত ঘণ্টা মিনিটের সহিত যোগ করিয়া পূর্ব্বল্লাপিত সাইডিরিয়াল টাইমেয় সহিত যোগ করিবে, আর যদি দিবা ছই প্রহরের পূর্ব্বে জন্ম কিছা প্রশ্ন হর, তাহা হইলে তাহার পূর্বিদিনের সাইডিরিয়াল টাইম গ্রহণ করিয়া তাহা হইতে ৫৮ সেকেও বিযুক্ত করিয়া যত ঘণ্টা মিনিট হইবে, তাহার সহিত ঐ পূর্বেদিনের ছইপ্রহর হইতে প্রশ্ন কিছা জন্মকাল পর্যায় যত ঘণ্টা মিনিট সেকেও গত হইরাছে, তাহা বোগ করিতে হইবে এবং ঐ গুক্তাছ যদি ২৪ ঘণ্টার অধিক হর, ভাহা হইলে ঐ আর হইতে ২৪ বিযুক্ত করিলে যে অর অবশিপ্ত থাকিবে, তাহা সারণীচক্রের মাধ্যাহিক রেখার সকল উথান সম্ভের মধ্যে যে অরের সদৃশ কিছা প্রায় সমান দৃষ্ট হইবে, সেই অল্লের সংলগ্ন দক্ষিণে তাহার পরস্ভিত্তে যে আর জানের উদিতাংশ ছইবে। আর ঐ দশম স্থানের উদিতাংশ অল্পের সংলগ্ন দক্ষিণে তাহার পরস্তান্তে যে আর তিনিত আছের সংলগ্ন দক্ষিণে তাহার পরস্তান্তে যে আর লিবিত আছে, তাহা একাদশ স্থানের উদিতাংশ অল্পের সংলগ্ন দক্ষিণে তাহার পরস্তান্তে যে আর লিবিত আছে, তাহা একাদশ স্থানের উদিতাংশ হানের উদ্বিতাংশ হানের সংলগ্ন দক্ষিণে

ভাহায় পর অত্তে যে আছ দৃষ্ট হইবে, ভাহা ছাদশ ছানের উদিভাংশ। ঐ ছাদশ ছানের উদিভাংশ আছের সংলগ্ধ দক্ষিণে ভাহার পর অত্তে যে আছ দেখিবে, ভাহা লগের উদিভাংশ ভাহার পর অত্তের আছ দিতীর ছানের উদিভাংশ হইবে। ঐ বিতীর ছানের উদিভাংশ আছের সংলগ্ধ ভাহার পর অত্তে যে আছ দৃষ্ট হইবে, ভাহা ভৃতীর ছানের উদিভাংশ হইবে। দশম ছানের বিপরীভ যে রাশি হইবে, ভাহা ভৃত্ব ছান আনিবে এবং দশম ছানের যে উদিভাংশ হইবে, চতুর্ধ ছানেরও সেই উদিভাংশ ভইবে। একাদশ ছানের বিপরীভ যে রাশি, পঞ্চম ছানেরও সেই উদিভাংশ হইবে, ভ্রামেরও সেই উদিভাংশ হইবে। একাদশ ছানের বিপরীভ যে রাশি, পঞ্চম ছানেরও সেই রাশি হইবে, একাদশ ছানের উদিভাংশ যত, পঞ্চম ছানের উদিভাংশ তত আনিবে। ছাদশ ছানের বিপরীভ বে রাশি, বাছ ছানেরও সেই রাশি, ছাদশ ছানে যত উদিভাংশ, ষাঠ ছানেরও তত উদিভাংশ হইবে। লায়স্থানের বিপরীভ যে রাশি, ভাহা সপ্তম স্থানের বিপরীভ যে রাশি, ভাহা অত্তমস্থান ছানের তি জা ছানের যে উদিভাংশ, অত্তম ছানেরও সেই উদিভাংশ। ভৃতীর স্থানের বিপরীভ যে রাশি, ভাহা অত্তমস্থানের বিপরীভ যে রাশি, ভাহা সপ্তম স্থানেরও সেই উদিভাংশ। ভৃতীর স্থানের বিপরীভ যে রাশি, ভাহা নবম স্থানের জানের যি জালের যাদি, ভাহা নবম স্থানের জানের উদিভাংশ। ভৃতীর স্থানের বিপরীভ যে রাশি, ভাহা নবম স্থান; অতএব ভৃতীর স্থানের উদিভাংশ বত হইবে, নবম স্থানের উদিভাংশও তত জানিবে।

দৃষ্টান্ত। ইংরাজী ১৮৮৭ সালের ৩১ ডিসেম্বর বাঙ্গালা ১২৯৪ সালের ১৭ পৌধ বেলা ধ্বাটা ১৭ মিনিটের সমর কোন বালকের জন্ম হইলে ঐ সমর কোন্ লয়ের ও দশমাদি কোন্ কোন্ রার্মির কত অংশ উদিত, তাহা এই দশমাদি লয়সারণী বারা কিরপে নির্মন করিতে হইবে, তাহা নিমে লিখিত হইতেছে।

ইংরাজী ১৮৮৭ সালের ৩১ ডিসেম্বর বাঙ্গালা ১৭ পৌষ তাবিথের ইংরাজী পঞ্জিকার সাইডিরিয়াল টাইম ১৮ ঘণ্টা ৩৮ মিনিট ২০ সেকেণ্ড হয়, উহা হইতে ৫৮ সেকেণ্ড বিয়োগ করিলে ১৮ ঘণ্টা ৩৭ মিনিট ২৫ সেকেণ্ড অবশিষ্ট থাকিল, ইহা এক স্থানে রাণন কর। পরে ক্ষমকালে বেলা অপরাহু সময়ের ৫ ঘণ্টা ১৭ মিনিটের প্রতি ঘণ্টার ১০ সেকেণ্ড করিয়া রৃদ্ধি করিলে প্রায় ৫৩ সেকেণ্ড হয়, অতএব ঐ ৫ ঘণ্টা ১৭ মিনিটের সহিত ৫৩ সেকেণ্ড বোগ করিলে ৫ ঘণ্টা ১৭ মিনিট ৫৩ সেকেণ্ড হইল, এইকণ এই অঙ্ক পূর্বিয়াপিত সাইডিরিয়াল টাইম ১৮ ঘণ্টা ৩৭ মিনিট ২৫ সেকেণ্ডের সহিত যোগ করিলে যুক্তান্ধ ২০ ঘণ্টা ৩৫ মিনিট ১৮ সেকেণ্ড হইল।

দশমাদি লগ্নসারণী চক্রের মাধ্যাহ্নিক সরল উথান ভত্তে দৃষ্টি করিয়া ঐ ভত্তের নিম্নভাগে প্রায় ঐ অভ্যের সদৃশ অর্থাৎ ২৩ ঘণ্টা ৫৬ মিনিট ২০ সেকেও দৃষ্ট হইল। অভ্যাহ্র সাধ্যাহ্নিক সমল উথান ভত্তে ঐ ২০ ঘণ্টা ৫৯ মিনিট ২০ সেকেও অক প্রহণ করিছে

ইইবে। পত্তে ঐ ২৩ ঘণ্টা ৫৬ মিনিট ২০ সেকেও অভ্যের সংলগ্ন ভাষার পর ভত্তের অক
২১ অংশ পাওয়া গেল। এইকণ ঐ ভত্তের উপরিভাগে দশম হান ও বীন রাশি লিখিত

আনুত্ৰ, অভওৰ উহা হাৰা বাদা ধ্যের যে, বেশা ৩ ৭কী ১৭ বিনিটেয় কৰৰ কশন হাদ নীৰ বাশিৰ ভংকাশে ৭৯ অংশ উদৰ।

কী নাগন হানেছ ২৯ অংশের সংগাধ ভাহার পর ভাতে ও অংশ সৃষ্ট হইল, অভএব কী ভাতের উপরিভাগের লিখিত একানশ স্থান একা কী ভাতের মধ্যে অভিচ ব্র রাণির

অংশ ভংকালে উনর কানা গেল। কী একানশ স্থানে রুম রাণির ও অংশ অভের সংলগ

চাহার পদ্ধ ক্তাতে ও অংশ অভ নৃত হইভেছে, উহা বাদশ হানের এবং কী বাদশ স্থানের

আজের অভিত নিশ্ব রাণির ও অংশ উদিত। কী বাদশ হানের ও অংশ অভের সংলগ পর
ভাতে ৮ অংশ ৩৬ কলা নৃত হইভেছে; অভএব কী নগ্যতভের অভিত কর্মট নথের ৮ অংশ

ত ক্লা ভংকালে উনিত হির হইল। উহার সংলগ বিতীয় অভের ও অভ কীরণ বিতীয়

ভানের ভাতের অভিত সিংহ রাশির ও অংশ নির্পর হংবে এবং কী সিংহ রাশির ও অংশ

আভের সংলগ ভাহার পর ক্তাতে কী প্রপালীতে লিংহ রাশির ২৯ অংশ উন্ত হির হইবে।

হশহ, একাহশ, খাদশ, লগ্ন, বিভীর ও তৃতীয় ছানের রাশির নাম উল্লেখে উলিক আশোদি নির্ণর হইল। এইক্ষণ উক্ত প্রণালীমতে ঐ বশন ছানের উল্লিখিত দীন রাশির বিপরীত কল্পা রাশির ২৯ অংশ চতুর্থ ছান। একাদশ স্থানের উল্লিখিত ব্য রাশির বিপরীত ক্লো রাশির ৩ অংশ পঞ্চম হান, বাহশ হানের লিখিত মিপুন রাশির বিপরীত বৃহর শশ্ম বঠ হান শা লগ্ন হানের লিখিত কর্কটের বিপরীত মকরের ৮ অংশ ৩৬ কলা স্থান হান। ছিতীয় ছানে সিংহ রাশির বিপরীত কুছ রাশির ৩ অংশ অইল ছান এবং তৃতীয় ছানের উল্লিখিত সিংহের বিপরীত কুছের ২৯ অংশ নব্ম ছান কানিবে। ইংরালীয়তে এই ক্শমাদি লগ্ন ছির হইল। এইক্সে ঐ লগ্ন চুট হইতে অর্নাংশ বিরোগ ক্রিলেই ক্সান্তেশ্বর লগ্নসারণীয়তে লগ্ন নির্ণর হইবে।

এই ইংরাজীমতে সাইডিরিয়াল টাইন অবলবন করিরা ইংরাজীমতে গণনা বারা দশমানি লারসারণীতে জনকালে কর্কট লগের ৮ আট অংশ ৩৬ ছবিল কলা বলিরা উনিভাংশ ছির হইরাছে। অধুনা ঐ কর্কটের ৮ অংশ ৩৬ কলা হইতে বর্জনান অর্নাংশ হলাজমহলংও অন্তক্ষা বিবাসে করিলেই অবেশান্ত্সারে নির্ম্নণমতে লগ ও উনিভাংশ নির্মান্ত করি ৮ অংশ ৩৬ ছবিল কলা ঐ ২০ অংশ ৩৯ কলা ৫০ বিকলা ২৪ অন্তক্ষা হইতে কর বিধার এই আট অংশ ৩৬ ছবিল কলার সহিত পূর্ব রাশি বিধ্নের আগত করে বিধার এই আট অংশ ৩৬ ছবিল কলার সহিত পূর্ব রাশি বিধ্নের আগত বর্ষা করিলে ও৮ অংশ ৩৬ কলা হইলে বর্তনান অর্নাম্য ২০ জন্ম লাভ করে করিলো লাভ অংশ ৩৬ কলা হইলে বর্তনান আর্নাম্য ২০ জন্ম লাভ করের করেলার করিলে বিশ্বনের ৮৭ অংশ ৪৬ কলা ৯ বিহলা ৩৬ অন্তক্ষা অর্থনার ব্যক্তির করের আন্তর্ভান করিলা স্থিতি আর্বার অংশানি ইনিটানিত লাভার অংশানি হইতে অর্বারণে বিবাস করিব। আন্তর্ভার অন্তর্ভানী গরের উন্তর্ভার নির্মার হইলে।

ইংলগুর জ্যোতির্বিৎ পণ্ডিতগণের লগ্ননিরপণের সঙ্কেত মতে কলিকাভার ও ভলিকটম মানের লগ নিরূপণের একটা দফান্ত দেওয়া হইল।

A table of the Poles of the houses for the latitude of Calcutta.

Í	7th house	3rd, 5th, 9th	2nd, 6th, 8th
П	or	or	or
1	Ascendant	11th house	12th house
	22'degrees 35'	7 degrees, 56 min	15 degrees, 32 min.

From the above table its is evident that pole of the ascendant or 7th house is 22 degrees 85', that of 3rd, 5th, 9th and 11th houses is 7 degrees 56' and that of 2nd. 6th 8th or 12th houses is 15 degrees 32'.

The following is an example shewing how to find the ascending degree in Calcutta when the right ascension of the meridian is given.

If the right ascension of the meridian in Calcutta be I hour 2 minutes and 40 seconds what dogree of the Zodiac is ascending?

1 hour 2 minutes and 40 seconds is equal to 15 dogrees 40 minutes, adding 90 degrees to this, we get 105 Degrees 40 minutes. which is the oblique ascension of the ascendant. Subtracting this oblique ascension from 180 Degrees, we get 74 Degrees 20 minutes, the distance of the cusp of the ascentant from Libra. Then Log. Cosine 74 Degrees 20 minutes 9 43142 Log. Cotangent 22d. 35' (Pole of the ascendant) 10 38099 Log. Contangent angle A, 37d. 0 m. 9. 81241 47 d. 0 m. Subtract (the oblique ascension being nearest Libra) 20d. 28 m. The difference is angle B. 33d. 32 m. Log. Cosine angle B (A. Comp.) 0. 07907 ***** Log. Cosine angle A, 57d. 0 m. 9. 78610 Log. tang. oblique ascension from Libra 74d. 2Qm. ...*** 10. 55212 Log. tang. of longitude from Libra=66d. 46. m.

As the oblique ascension of the ascendant is on the lefthand side from Libra, it is evident that the ascendant degree is somewhere in one of the signs that preced Libra. By calculation we find that 20 Degrees 14 Minutes of Cancer is the answer, because this point of the Zodiac is 66 Degrees 46 Minutes distant from the first point of Libra.

घकी। इहेट जाम, मिनिवे इहेट कला अवर तिरुक्त इहेट क

नव त्र	অংশ	সময়	जः नामि	সময়	व्यःभानि	সময়	অংশাদি	সময়	অংশাদি	সময়	জং শাহি
খণ্টা	व्यश्म	মি.	অং, ক,	মি,	অং, ক,	শে,	জং, ক,	্েন,	क, वि,	८म,	ক, বি,
701	36	3	0 1 36	3	9186	8	012	>	0126	92	918
٤	9.	2	. 1 90	૭૨	101 0	ъ	013	5	. 10.	95	141
9	84	9	. 180	23	100	>5	010	9	0 84	99	412
8	60	8	31 0	98	P100	20	. 1 8	8	21 .	98	.p10
¢	98		3130	20	P186	20	0 ; @		2126	36	P 18
4	20	8	3 100	96	21 .	85	0 1 0		2100	96	1 6
9	300	9	5180	99	3136	२४	019	9	218€	99	912
5	250	1	21 0	94	2100	७२	0 6	4	1510	94	210
2	300	2	2130	೨ನ	2186	00	. 1 9	2	15126	1	218
> .	>6.0	>0	2100	8.	301 0	8.	0120	>0	1 300	8 .	201
>>	366	33	2 184	83	30 1 36	88	0122	>>	₹ 18€	85	10012
25	> b •	>5	91 .	85	30100	86	0125	>5	01 .	85	19010
30	396	30	0136	8.0	30 180	62	0170	20	0125	80	12.18
38	530	>8	0100	88	331 .	69	. 1 >8	>8	0100	88	221
36	₹₹€	54	9186	84	331 36	40	. 1 >6	26	0186		3212
36	280	35	81 0	85	33 100			20	81 .	8.0	2210
>9	200	59	81:4	89	35 84		1	39	8136	89	3218
24	290	34	8 1 00	84	321 .		1	>4	8100	85	25
33	₹₩€	35	8 1 8 4		25 126			29	8 84	89	2512
₹•	9.0	3.	4 0	20	25 100			2.	¢ 1 0	60	12510
53	354	25	2130	63	52 84			52	@ 1 >6	62	25 18
22	200	22	6 00	42	201 0			22	@ 100	65	100
20	386	20	€ 8€	60	30 30			२೨	€ 8€	60	2012
28	200	28	9 0	48	50 00			₹8	40 0	48	2010
, .		24	9130	22	30 86			₹₫	9138	ee.	2018
		50	\$ 100	29	381 0			२७	4 90	44	>81
		29	9 80	49	38 36	İ		२१	9 8¢	49	28: 3
		26	9100	ab-	28 1 00			२४	91 .	¢b.	2810
		23	9136		38 86			23	9136	63	2813
		00	9100		>e •			9.	9100	100	1261

এই টেবিলের প্রথম কলমে ঘণ্টা ও বিতীয় কলমে অংশসংখ্যা সন্ধিবেশিত হইয়াছে। ইবা বারা বত ঘণ্টার ্যত অংশ হয়, তাহা জানা বাইবে।

এই টেবিলের ৩র ও ৫ম কলমে মিনিটের অন্ধ এবং ৪র্থ ও ৬ ঠ কলমে অংশাদি সরি-বেশিত হইরাছে। ইহা ছারা বত মিনিটে বত অংশ-কলাদি হইবে, তাহা জানা ঘাইবে। এই টেবিলের ৭ম কলমে ৪ সেকেও হইতে ৬০ সেকেণ্ডের অন্ধ এবং ৮ম কলমে জংশ-ক্লাণির আৰু বিজ্ঞস্থ হইরাছে। ইং। ছারা ছুলরূপে বত সেকেওে বত জংশ ক্লাদি ছইবে, তাহা জানা বাইবে।

এই টেবিলের ১ম ও ১১শ কলমে সে.কণ্ডের ५, র এবং ১০ম ও ১২শ কলমে কলা-বিকলার সংখ্যা আছিত ২ইয়াতে। ইহা ছারা ১ হইতে ৬০ সেকেণ্ডে যত কলা বিকলা হইবে, তাহা জানা যাইবে।

ক্ষা কিছা প্রশ্নকালে কাতবালকের কিছা প্রশ্নকারকের শুভাগুভ গণনা করিছে হইলে, যেরপে গ্রহক্ট ও লগ্ধক্ট গণনা করিয়া জন্মকুগুলীমধ্যে ক্টের অংশকলাদি সন্নিবেশিত করিতে হর, তাহা দৃষ্টাস্তসমেত ক্থিত হইরাছে। একণ তোবণীপ্রহে ঐ ক্যকুগুলীর অন্ধিত গ্রহগণের দৃষ্টিকলাদি গণনা করিয়া শুভাগুভ ফলের বিচার যেরপ দিখিত আছে, তাহা নিয়ে ক্থিত হইতেছে।

প্রহগণের বল সাধনের অথা ভোষণী গ্রন্থকার গ্রাহের উপর গ্রহের দৃষ্টিগণনার সঙ্কেত ব্যক্ত করিয়াছেন। ঐ গণনার প্রণালী বর্ণনার অথ্যে সাধারণত দৃষ্টি কাহাকে বলে, পাঠকবর্গের বিদিতার্থে ভাছা বল। ঘাইতেছে।

গ্ৰহাণাং দৃষ্টি স্থানকথনং।

তৃতীয়ে দশমে চৈব পাদদ্ফিরদাহতা। অর্জন্ফিশ্চ নবমে পঞ্চম চ প্রকীর্ত্তি। চতুর্বে চাষ্টমে চৈব পাদোনা পরিকীর্ত্তিতা। সপ্তমে পরি-পুর্বা চ ফলমেবং প্রথক্তরাতে । তৃতীয়দশমাবার্কিঃ পশ্যন্ পূর্ব দলপ্রদঃ। তিকোশগান্ গুরুশ্চিব চতুর্বাষ্ট্রমগান্ কুজঃ। পাদৈকদ্টির্দশমে তৃতীয়ে বিপাদ-দৃষ্টির্বপঞ্চকে তু। ত্রিপাদদ্ফিশ্চতুরষ্টকে চ সম্পূর্ণদৃফ্টিঃ সমসপ্তকে স্থাং।

প্রশ্ন কিছা জন্মকালে যে প্রছ যে রালিতে অবস্থিত থাকেন, তাহা হইতে গণনার তৃতীর আর দশম স্থানে সেই প্রহের একপাদ দৃষ্টি, পঞ্চম আর নবম রালিতে অর্জেক, চতুর্থ এবং অস্টম রালিতে তিনপাদ দৃষ্টি এবং সপ্তম রালিতে সম্পূর্ণ দৃষ্টি হয়। ইহাতে বিশেব এই যে, তৃতীয় আর দশম স্থানে শনিপ্রহের পূর্ণ দৃষ্টি আর নবম ও পঞ্চম রালিতে বৃহস্পতির পূর্ণদৃষ্টি এবং চতুর্থ আর অস্টম রালিতে,মঙ্গলের পূর্ণদৃষ্টি। এতদ্ভির অক্তাক্ত স্থানে অর্থাৎ প্রথম, ছিতীর, ষঠ, একাদশ ও ছাদশ স্থানে গ্রহগণের দৃষ্টি নাই। গ্রহগণের বলাবল এবং এই সকল দৃষ্টি অন্থানে আকর্বণের শক্তির ন্যাধিক্য বিবেচনা করিরা কলাকল বলিবে।

म्लाकार्थ।

ভূতীয় ও দশম স্থানে একপাদ দৃষ্টি, অর্থাৎ রবিদার্গের যে অংশে গ্রহ অবস্থিত, সেই

আংশ হইতে গণনা করিলে বে ছানে ৩০ আংশ এবং বে ছানে ১৭০ আংশ হইবে, সেই ছানে একপাদ দৃষ্টি। ঐদ্ধপান্ধ ১২০ ও ২৪০ আংশে বিপাদ বা আর্জ্ন টি। আর ৯০ ও ২১০ আংশে ত্রিপাদ দৃষ্টি হর এবং ১৮০ বাংশে গ্রহগণের সম্পূর্ণ দৃষ্টি হইয়া থাকে। এই সকল ছানের পূর্ব্বোক্ত অংশসকলের নৃংনাধিক্য হইলে ত্রৈরাশিক্যতে দৃষ্টি পণনা পূর্ববিক কলের তারতম্য বিচার করিতে হইবে। ইহাতে বিশেষ এই যে ৬০ এবং ২৭০ আংশে শনির সম্পূর্ণ দৃষ্টি, আর ১২০ ও ১৪০ আংশে বৃহস্পতির পূর্ণ দৃষ্টি এবং ৯০ আংশ ও ২১০ আংশে মঙ্গলের সম্পূর্ণ দৃষ্টি হইয়া থাকে। ইহাই সাধারণ দৃষ্টির নিরম বলা হইল, কিন্তু কোন গ্রহের উপর দৃষ্টি গণনা করিতে হইলে বে প্রহের দৃষ্টি গণনা করিতে হইবে, গ্রহের ফুটরাখ্যাদি হইতে সেই গ্রহের ফুটরাখ্যাদি বিয়োগ করিয়। উভর গ্রহের দ্রতা নির্ণন্ধ করিতে হইবে। তাধিষয় ও তাহার প্রক্রিয়া তোষণীগ্রন্থকার বেরূপ লিথিয়াছেন, তাহা পশ্যাৎ কথিত হইবে।

এক্ষণে গ্রহগণের সাধারণ দৃষ্টি পাঠ ক্বর্গকে অবগত ক্রাইবার জন্য দৃষ্টান্ত সহ একটা চক্র অন্ধিত ক্রিয়া নিম্নে প্রদর্শিত হইতেছে।



উদাহরণ।

ব্যল্থে কোন বালকের কয় অথবা কোন প্রশ্ন হইলে নিয়লিথিত দৃষ্টান্ত মতি দৃষ্টি নির্গন করিবেন। বথা—ভক্র ও মলল তুলা রালিতে হিড আছেন, ঐ তুলা রালি হইডে গণনার ব্যরাশি অটম, অটম হানে ত্রিপাদ দৃষ্টি; এজয় ঐ লগে ওক্রের ত্রিপাদ দৃষ্টি আছে। ঐরপ মললেরও ত্রিপাদ দৃষ্টি হয়, কিঙ বিশেষ দৃষ্টি হেডু ঐ স্থানে মললেরও সম্পূর্ণ দৃষ্টি আছে। রবি বৃশ্চিক রাশিতে অবস্থান করিতেছেন, ঐ বৃশ্চিক হইতে গণনার ব্য রাশি সপ্তম, সপ্তম স্থানে গ্রহগণের সম্পূর্ণ দৃষ্টি, অতএব ঐ লগে রবির সম্পূর্ণ দৃষ্টি আছে। বৃধ গ্রহ ধয় রাশিতে অবস্থিত থাকার ঐ রাশি হইতে গণনার ব্য রাশি বয়, মকর রাশিতে বৃহম্পতি বর্ত্তমান আছেন, ঐ মকর হইতে গণনার ব্য রাশি পক্ষম, পঞ্চম স্থানে বৃহম্পতির সম্পূর্ণ দৃষ্টি আছে। কুজরাশিতে চক্র অবস্থান করিতেছেন, ঐ কুম্ভ হইতে গণনার ব্যরাশি চতুর্থ, চতুর্থ স্থানে ত্রিপাদ দৃষ্টি; এজয় ঐ লগে চক্রেরও ত্রিপাদ দৃষ্টি আছে। শান গ্রহ মীন রাশিতে বর্ত্তমান আছেন। ঐ মীন হইতে গণনার ব্যরাশি তৃতীর, ঐ তৃতীর স্থানে বর্ত্তমান আছের। ঐ মীন হইতে গণনার ব্যরাশি তৃতীর, ঐ তৃতীর স্থানে সকল প্রহের পাদদৃষ্টি; কিন্ত বিশেষ দৃষ্টি হেডু ঐ লগে শনি গ্রহের পূর্ণ দৃষ্টি হইরাছে।

এই দৃষ্টি ত্বল, কিন্ত বিদয়তোধিণীমতে অর্থাৎ অংশান্ত্সারে স্কল দৃষ্টিগণনা করিলে বিশেষ ক্ষম কল গণনা করিতে পারিবেন।

তোষিণীমতে দৃষ্টি গণনা।

बन्त्राक्ष्ट्रेष्ट्वर धटल श्राट्या नानाविधर कलम्। खन्त्राकानसन्दर्भकामि विज्यार मृत्व ॥

ষেহেতু গ্রহণণ দৃষ্টিসমূত নানাবিধ ফল দান করে, অতএব পণ্ডিতগণের সম্ভোষার্থ গ্রহণণের দৃষ্ট্যানয়ন বলিতেছি।

দৃশ্যোনাদবলোকিতাদিবিচরাদেকাদিতঃ খাজভূযুগাত্রানিখদৃগ্গুণেন্দু-খাবিরৎপাদা দৃশাং খণ্ডকাঃ। ভৌমানীনবমে গুরোর তিন্তুখে মন্দাৎ ত্রিখে খর্তবো ৬০ ভোগ্যন্ত্রাংশখরামভাগদহিতোনাঃ স্থাঃ ক্ষৃটা দৃষ্টয়ঃ।

বে গ্রহ বে কোন গ্রহকে দেখেন, তিনি এটা, সার বে গ্রহকে দেখিতেছেন, তিনি দৃষ্ঠ। বখন যে গ্রহের দৃষ্টি গণনা করিতে হইবে, সেই গ্রহের দ্কুট-রাষ্ঠাদি হইতে যে গ্রহের উপর দৃষ্টি গণনা করা হইতেছে, সেই গ্রহের ফুট-রাষ্ঠাদি হীন করিয়া যাহা শেষ

থাকিবে, ভাছাতে বে সংখ্যা থাকিবে, সেই সংখ্যা-পরিমিত দৃষ্টি-চক্রের কোষ্ঠা হইতে থণ্ডা গ্রহণ ক্রিরা ডংগরে অন্নথণা গ্রহণ করত ভোগ্য নিশ্চর করিবে। তৎপরে সেই ভোগ্যধারা অভর-শেব অংশাদিকে পূরণ করিয়া গ্রিশ হারা ভাগ করিলে থাহা লব্ধ হইবে, ভাছা থণ্ডার এণ ধন * বিবেচনা করিয়া থণ্ডাতে হীন বা থোগ করিলে বে অক হইবে, ভাছাই সেই গ্রহের উপর সেই গ্রহের দৃষ্টি এবং তদন্তসারে ফল হইবে।

রবি, চক্রদ, বৃধ ও শুক্তের দৃষ্টিথণ্ডা চক্র। ১ নং।

রাশিসংখ্যা	>	2	9	8	e	*	9	4	2	>0	22	>:
খণ্ডা	•	•	>¢	90	84	90		೨۰	84	>4	•	
অনুগণ্ডা	•	>4	90	84	90	۰	೨۰	80	>0			
ভোগ্য	٠	>¢	>@	5¢	36	% •	. లం	24	9,	>4		

1	মঙ্গলিতা ২ নং।				গুরেশঃ ৩ নং।					শ্নেঃ ৪ নং।			
. 8	e	5	۵	٩	6	9	8		2	9	2	>.	
0.	60	90	90		50	se	80		•	*	8¢	40	
90	40	40	26	90	8¢	60	8€	•	•	٥.	90		
٥.	>6	90	8¢	60	>6	84	>e	*	•	9.	>¢	60	

>নং চক্রে রবি, চন্দ্র, বুধ ও ওক্তের দৃষ্টি বিবরণ। এই চক্রের প্রথম কলমের ১ম হইতে ১২শ কোন্নায় বথাক্রমে রাশির সংখ্যা এবং

শতা অপেকা অনুধ্যা ন্য হইলে গতাকে ৰণগতা এবং গতা অপেকা অনুধ্যা অধিক হইলে
পতাকে বনগতা কহে।

ভরিন্ন কলমে ১ম হইতে বাদশ রাশির নিরে গ্রহণণের ৩০ কলার পূর্ণদৃষ্টি অন্থসারে বে ঘরে বত পরিমাণে দৃষ্টি হইতে পারে, তাহার সংখ্যা বিক্তন্ত হইরাছে। ৩র কলমের ২র কোঠার ছই রাশিতে ৩০ অংশে বে একপাদ দৃষ্টি অর্থাৎ ১৫ কলা অন্ধিত ইইরাছে; ৩র কোঠার ১২০ অংশে বে অর্জদৃষ্টি অর্থাৎ ৩০ কলা; ৪র্থ কোঠার ১৫০ অংশে বে ত্রিপাদদৃষ্টি অর্থাৎ ৪৫ কলা; ৫ম কোঠার ১৮০ অংশে যে পূর্ণদৃষ্টি অর্থাৎ ৬০ কলা বিক্তন্ত হইরাছে। এইরূপে ৬ঠ কোঠার ০ শৃত্য, সপ্তমে ৩০ কলা, ৮মে ৪৫ কলা, ৯ম কোঠার ১৫ কলা, ১০ম কোঠার ০, একালশে ০ শৃত্য এবং বাদশ কোঠার ০ শৃত্য অন্ধিত হইরাছে। ৪র্থ কলমে ভোগ্য অর্থাৎ ২র ও ৩র কলমের লিখিত অক্ষ্রেরের পরস্পার অন্তরিত অক্ষ্রেরত হইরাছে। ইহা ভোগ্য অর্থাৎ দৃষ্টির সংখ্যা।

२ नः हरकः मञ्जरलत पृष्टि विवतन ।

এই চক্রের ১ম কলমের ১ম হইতে ৪র্থ কোটা পর্যাপ্ত রাশির আহ, তরিয়ে ঐ ঐ রাশিতে যত পরিমাণ কলা দৃষ্টি হইবে তাহার আহ; ৩য় কলমের ১ম কোটায় ৯০ আংশে যে পূর্ণদৃষ্টি অর্থাৎ ৬০ কলা; ২য় কোটায় ২১০ আংশে যে পূর্ণদৃষ্টি অর্থাৎ ৬০ কলা; ৪র্থ কোটায় ২৭০ আংশে যে পাদদৃষ্টি অর্থাৎ ১৫ কলা আহিত চইলাছে। ৪র্থ কলমে পূর্কাবৎ ভোগ্যের আহ লিথিত হইয়াছে।

এইরূপে ৩নং ও ৪নং টেবিলের কোঠাতেও দৃষ্টি অনুসারে কলার অক্কসংখ্যা সন্নিবেশিত হইয়াছে।

অতি সহজে গ্রহগণের দৃষ্টিসাধন করিবার জন্ত অন্তপ্রকার চারিটী চক্র নিয়ে লিখিত হটন।

রবি, চন্দ্র, বুধ ও শুক্রের দৃষ্টিণণ্ডা চক্র।

त्र ह तूर	5 3	1 3	9	8		4	9	5	\$	>0	22	25
			>6	00	80	60	0	೨۰	8¢	36	•	•
		যোগ	যোগ	যোগ	যোগ	বাদ	যোগ	্যাগ	বাদ	বাদ		
		- 1	- 1) II	n.	2	>	- 11	>	- 11	•	
			মঙ্গ	লের	দৃষ্টি ঽ	1.01	চক্ত ।				7.5	
म	1 >	(মঙ্গ	লের } s	मृष्टि ^२	191	। কাব	b	<u>م</u>	3.	>>	25
म) :	2	ম ঞ্	1	मृष्टि व ७०	9	। ক্		3	>0	22	25
म	1:	হ ।	9	8	e	•	9	b		১ • ১৫ বাদ	>>	>2

वृह्ण्णिकत पृष्टिबका हजा।

Ž.	ং বোগ	० >€ ट्यांश >॥	8 ७ • वान ॥	& ৪৫ যোগ	% % वान २	ণ খোগ ২	৬• বাদ	8e वान >	১ e বাদ ॥	*	>:
				4							
_	1 5	**	নির ৪	नृष्टि श	@1 B				>0		13

দৃষ্টি বিচারের পুর্বেজানিতে হইবে বে, কোন্ গ্রহের দৃষ্টি কোন্ আহের বা ভাবের উপর গণনা করিতে হইবে। ৬০ বাইট কলাতে গ্রহদিগের পূর্ণ দৃষ্টি, ৪৫পরতাল্লিশ কলাতে · ত্রিপাদ দৃষ্টি, ৩• ত্রিশ কলাতে অর্দ্ধ দৃষ্টি, ১৫ পনের কলাতে একপাদ দৃষ্টি নির্ণীত আনছে। প্রথম চক্র খারা রবি, চক্র, বুধ ও ভক্র এই চারিটী গ্রহের দৃষ্টি গণনা করিতে হইবে। ২র চক্র ছারা মঙ্গলের দৃষ্টি, ৩র চক্র ছারা গুরুর দৃষ্টি, ৪র্থ চক্র ছারা শনির দৃষ্টি গণনা করিতে হইবে। বে গ্রহের দৃষ্টি গণনা করিতে হইবে, তাহার নাম দ্রষ্টা আর বে গ্রাহের বা ভাবের উপর দৃষ্টি গণনা করিতে হইবে, তাহার নাম দৃষ্ঠ। প্রতি কোষ্ঠায় ১২টা ব্ৰস্ত আছে, তাহাতে যে ১ এক হইতে ১২ বার ভক্তে ১২ বার পর্যাপ্ত আৰু দিপিত আছে, তাহা রাশির অহ, রাশির অহের নিমে থণ্ডার অহ, ঐ সকল স্তন্তের খণ্ডার অংক যে পরিমাণে অংশ যোগ বা বিরোগ করিতে হইবে, তাহা ঐ ঐ স্তন্তের খণ্ডার অকের নিম্নে লিখিত আছে। একবে দেরপে ঐ সকল খণ্ডার বোগ বা বিরোগ করিতে হইবে, ভাহা লিখিত হইভেছে। জন্তী গ্রহের ক্টের রাশ্রাদির অহ হইভে দৃশ্র গ্রহ বা ভাবের ক্টরাখ্যাদিকে বিষোগ করিলে যে রাখ্যাদির আৰু হইবে, তাহা এক স্থানে স্থাপন করিয়া তাহার রাশির অহসংখ্যক স্তম্ভের থণ্ডার অঙ্ক গ্রহণ করিয়া অন্ত স্থানে রাখিবে। তৎপরে দেখিবে বে, ঐ থণ্ডার নিয়ে কত পরিমাণে অস্কসংখ্যার যোগ বা বিরোগ লিখিত আছে, তাহা জানিয়া পূর্বস্থাপিত রাশি অংশাদির রাশি পরিত্যাপ করিয়া অংশকলাদির আৰু প্ৰহণ করত হীন বা ঋণ করিয়া অন্ত স্থানে স্থাপিত খঙার আছে যোগ বা বিয়োগ कतिरन वाहा हरेरन, जाहा मिटे मिटे अरहत कृष्ठे हि क्लामि हरेरन ; किन्न थश्रात निय শৃক্ত হইলে যোগ বা বিরোগ না করিরা থণ্ডাকেই ক্ষুট দৃষ্টি জানিবে। বদি থক্তার ॰ শৃক্ত ও ভরিত্রে • শুক্ত থাকে, তবে দৃষ্টি হইবে না। •

পূর্বেবে চারিটা চক্র অভিত করা হইলাছে এবং অক্তপ্রকার বে চারিটা চক্র দৃষ্টি গণনার অক্ত উপরে
কবিত হইল, এই উভরের কল সমান হইবে।

তোদিণীমতে দৃষ্টিগণনার দৃষ্টান্ত।

১৮০৯ শকের ১লা বৈশাধ দিবা তুই প্রহরের সময় কোন বালকের জন্ম হইলে তাহার কোষ্ঠীর ভভাতত ফল গণনার জন্ত যেরপে গ্রহগণের দৃষ্টি গণনা করিতে হয়, ভাষা কথিত হইতেছে; এই খণ্ডের ৭৬ পৃষ্ঠার জন্মকৃওগার উদাহরণ চক্রে গ্রহপণের তাৎকালিক স্ফুট অন্ধিত করা হইরাছে। ঐ কুগুলী দৃষ্টে বেরপে রবি, চক্র, মঙ্গল, বুধ, রুহম্পতি শুক্র ও শনির দৃষ্টি গণনা করিতে হইবে, তাহার দৃ**টান্ত ষ্থা—রবিগ্র**ছ মেষরাশির • অংশ, ৫৫ কলা, ৪৬ বিকলাদিতে অবস্থিত, বচনামুদারে স্বস্থানে রবির দৃষ্টি না থাকায় রবির উপর রবির দৃষ্টি ৽া৽ ; ঐ স্থান হইতে রবির কি প্রিমাণ দৃষ্টি চক্তের উপর নিপতিত हरेबारक, जाहात गणनात व्यणांनी अहे त्य, त्रतित कृषे ।।। ee। ८७ हरेल हरक्त कृष्ठे ৮।৫।৩৯।২ হীন করিলে ৩।২৫।১৬।৪৪ অবশিষ্ট থাকে। পরে ১নং চক্রের লিখিত ঐ তরাশির খণ্ডা ১৫ ও অনুখণ্ডা ৩০, ইহাদের পরস্পর অন্তর করিলে ১৫ অর্বশিষ্ট থাকে. ইহাকে ভোগ্য কহে। অনন্তর ঐ ভোগ্য ১৫ দ্বারা গ্রহক্টের বিরোগাবশিষ্ট অংশাদি ২৫।১৬।৪৪ কে গুণ করিয়া গুণফল ৩৭৯।১১ কে ৩০ বারা ভাগ করিলে লব্ধ ১২।৩৮ হয়। পরে লক্কান্ক ধনথণ্ডা অর্থাৎ যোগার্হথণ্ডা হেতু পূর্ব্বোক্ত থণ্ডা ১৫ এর সহিত যোগ করিরা ২ণা৩৮ হইল, ঐ ২৭ কলা ৩৮ বিকলাই চল্লের প্রতি রবির দৃষ্টি। অর্থাৎ রবি চন্ত্রকে অর্দ্ধাপেকা ২ কলা ২২ বিক্লা ন্যুনরূপে দর্শন করিভেছে। ইহার ফলও ঐ পরিমাণেই श्रुटें ।

মঙ্গলের প্রতি রবির দৃষ্টি গণনা করিতে হইলে পূর্ব্বোক্ত রবির ক্ট ।।।৫৫।৪৬ হইতে ঐ সময়ের মঙ্গলের ক্ট ।।২।২।৪ হীন করিলে ১১৷২৮৷৪২ অবশিষ্ঠ থাকে। পরে ১নং টেবিলের লিথিতামুসারে দেখা যাইতেছে যে, ঐ ১১ রাশির থণ্ডা • শৃক্ত ও অমুথণ্ডা • শৃক্ত, ইহাতে জানা যাইতেছে বে, মঙ্গলের প্রতি রবির দৃষ্টি কিছুমাত্র নাই।

বুধের প্রতি রবির দৃষ্টি গণনা করিতে হইলে রবির ক্ট ।।৫৫।৪৬ হইতে বুধের তাৎকালিক ক্ট ১১।৩৩৯।১৫ হীন করিলে ।২৭।১৬।৩১ অবলিট থাকে, পরে ১নং টেবিলের লিখিতারুসারে দেখা বাইতেছে যে, ঐ • অর্থাৎ ১২ রাশির খণ্ডা • শৃষ্ট এবং অমুখণ্ডাও • শৃষ্ট। ইহাতে জানা গেল যে, ঐ সময় বুধের প্রতি রবির দৃষ্টি কিছুমাত্র নাই।

বৃহস্পতির প্রতি রবির দৃষ্টিগণনা;—রবিক্ট •া৽া৫৫।৪৬ হইতে বৃহস্পতির তাৎকালিক ক্ট ৬৷১১৷২১৷১৮ হীন করিলে ৫৷১৯৷৩৪৷২৮ অবশিষ্ট থাকে। পরে ১নং টেবিলের লিবিভালুদারে দেখা বাইভেছে যে, ঐ ৫ রাশির খণ্ডা ৪৫ ও অলুখণ্ডা ৬•। এই
খণ্ডাবরের অন্তর অর্থাৎ ভোগ্য ১৫ বারা ঐ সবশিষ্টাক ১৯৷৩৪৷২৮ কে শুণ করিলে শুণকল

২৯৩৩৭ হর। ইহাকে ৩-ছারা ভাগ করিলে শব্ধ ৯।৪৭ হর।- পরে পূর্বোক্ত থণ্ডা ৪৫ এর সহিত ঐ ৯।৪৭ যোগ করিলে ৫৪।৪৭ কলাদি হইল, ইহাই রহস্টির প্রতি রবির দৃষ্টি।

শুক্রের প্রতি রবির দৃষ্টিগণনা ;—রবির ক্ট •।•।৫৫।৪৬ হইতে শুক্রের তাৎকালিক ক্ট সংহা৪৮।২৮ হীন করিলে ১০।২৮।৭।১৮ অবশিষ্ট থাকে। পরে দেখা বাইতেছে বে, ১নং টেবিলের লিখিত ঐ ১০ রাশির খণ্ডা ১৫, অফুখণ্ডা • শৃক্ত এবং ভোগ্য ১৫; স্ব্তরাং ঐ তোগ্য ধারা অবশিষ্টান্থ ২৮।৭।১৮ কে শুণ করিরা শুণফগকে ৩০ ধারা ভাগ করিলে লব্ধ ১৪।৪ হয়। পরে উহা বাণথখা হেতু পূর্বোক্ত খণ্ডা ১৫ হইতে ইহা হীন করিলে ০।৫৬ অবশিষ্ট থাকে, ইহাই শুক্রের প্রতি রবির দৃষ্টি।

শনির প্রতি রবির দৃষ্টিগণনা ; রবির ক্ট ।।।৫৫।৪৬ ইইতে শনির তাৎকালিক কুট ২।২৫।৪৭।৫৮ হীন করিলে ৯।৫।৭।৪৮ অবশিষ্ট থাকে। পরে দেখা বাইতেছে বে, ১নং টেবিলের লিখিত ঐ ৯ রাশির খণ্ডা ৪৫ এবং ভোগ্য ঝণ (বিরোগার্হ খণ্ডা) ৩০; অনস্তর ঐ ৩০ দারা অবশিষ্টাত্ব ৫।৭।৪৮ কে গুণ করিরা গুণফলকে ৩০ দিরা ভাগ করিলে লক্ক ৫।৮ হয়। অনস্তর ঝণখণ্ডা হেতু পূর্কোক্ত খণ্ডা ৪৫ ইইতে ৫।৮ হীন করিরা লক্ক ৩৯।৫২ ইইল, ইহাই শনির প্রতি রবির দৃষ্টি।

লামের উপর রবির দৃষ্টিগণনা;—রবির ক্ষুট ০।০।৫৫।৪৬ হইতে লয়ক্ট অভা২০।৩৪
হীন করিলে ৮।২৪।৩৫।১২ অবশিষ্ট থাকে। পরে ১নং টেবিলের লিখিত ৮ রাশির খণ্ডা
৩০ ও অমুখণ্ডা ৪৫, এই উভয়ের অস্তর অর্থাৎ ভোগ্য ১৫ হারা ঐ রাক্তাদির অবশিষ্ট
অংশাদি ২৪।৩৫।১২ কে গুণ করিলে ৩৬৮।৪৮ গুণফল হয়। অনস্তর ঐ গুণফলকে
৩০ দিয়া ভাগ করিলে লন্ধ ১২।১৭ হয়, পরে ধনশণ্ডা হেডু ঐ ১২।১৭ কে থণ্ডা ৩০ এর
সহিত যোগ করিলে ৪২।১৭ হয়, এই ৪২ কলা ১৭ বিকলাই লগের প্রতি রবির দৃষ্টি।

চক্তের দৃষ্টি-পণনার উদাহরণ।

স্থানে চল্লের দৃষ্টি না থাকার চল্লের প্রতি চল্লের দৃষ্টি কিছুমাত্র নাই।

রবির প্রতি চল্লের দৃষ্টিগণনা;—তাৎকালিক চল্রন্দুট চাথাজনং হইতে তাৎকালিক রুদ্দুট চাথাজনং হইতে তাৎকালিক রুদ্দুট চাথাজনং হইতে তাৎকালিক রুদ্দুট চাথাজনং ইইতে তাৎকালিক রুদ্দুট্ট চাথাজনং ইইতে তাৎকালিক রুদ্দুট্ট চাথাজনং করি বিশ্বের লিখিত খণ্ডা তুল্ অনুখণ্ডা ৪৫, এই উভরের অন্তর ১৫ হারা অবশিষ্টাক গাও ৯৮ কে গুল করিরা শুলফল ৭০।৪৯ হইল। ঐ ৭০।৪৯ কে ৩০ দিয়া ভাগ করিলে লব্ধ হাহহ হর, ধনখণ্ডা হেতু ঐ হাহহ কে পূর্ব্বোক্ত খণ্ডা ৩০ এর সহিত বোগ করিলে তহাহহ হর, ঐ ৩২ কলা হহ বিকলাই রবির উপর চল্লের দৃষ্টি।

বে প্রক্রিয়াস্থারে রবির উপর চক্রের দৃষ্টি গণনা করা হইল, ঐ প্রক্রিয়াস্থারে গণনা করিলে মললের উপর চক্রের দৃষ্টি ৩১ কলা, ৩৬ বিকলা; বুধের প্রতি ৪৩ কলা, বৃহস্পতির প্রতি • শৃষ্ট কলা; ডক্রের প্রতি ২ কলা, ৫• বিকলা; শনির প্রতি ৪৯ কলা, ৫৬ বিকলা এবং লয়ের প্রতি চল্লের দৃষ্টি ১৫ কলা, ২১ বিকলা হইবে।

यक्रलत्र पृष्टिभगना ।

স্বস্থানে মৃদলের দৃষ্টি না থাকার মৃদলের প্রতি মৃদলের দৃষ্টি কিছুমাত নাই।

চল্লের প্রতি মঙ্গলের দৃষ্টিগণনা;—মঙ্গলের তাৎকালিক ক্ট • । ২। ২৭। ৪ ছইন্ডে চল্লের তাৎকালিক ক্ট চালেও৯। ২ হীন করিলে ৩) ২৬। ৪৮। ২ অবশিষ্ট থাকে। পরে ১নং টেবিলের লিখিত ঐ ৩ রাশির খণ্ডা ১৫, অমুখণ্ডা ৩০ এবং এই উভরের অস্তর ১৫। ঐ অবশিষ্টাছ ২৬। ৪৮। ২ কে ১৫ হারা শুণ করিলে শুণকল ৪০২। ০।৩০ হয়, ঐ ৪০২। ০।৩০ কে ৩০ হারা ভাগ করিয়া লক ১৩।২৪ ছইল। পরে ধনধণ্ডা হেতু ঐ ১৩।২৪ কে পূর্বোক্ত থক্তা ১৫ এর সহিত যোগ করিলে বে ২৮ কলা, ৪৯ বিকলা হয়, উহাই চল্লের প্রতি মঙ্গলের দৃষ্টি।

এই প্রকারেই সকল প্রহের উপর মকলের দৃষ্টি গণনা করিতে হয়, কেবল যে প্রহের উপর মকলের দৃষ্টি গণনা করিতে হইবে, সেই প্রহের স্কুটকে মকলের স্কুট হইতে বিয়োগ করিলে অবশিষ্ট রাখ্যাদি যদি ৪।৫।৮।৯ হয়, তবে ২ নং টেবিলের থণ্ডা গ্রহণ করিতে হইবে; নতুবা ১ নং টেবিলের থণ্ডা গ্রহণ করিয়া দৃষ্টি গণনা করিতে হইবে। ২ নং টেবিলে গ্রহণ করিয়া বেয়পে দৃষ্টিগণনা করিতে হইবে, তাহার দৃষ্টাস্ত নিমে লিখিত হইল। যথা—

মন্দের তাৎকালিক কুট • ।২।২৭।৪ হইতে বৃহস্পতির তাৎকালিক কুট ৬।১১।২১৮ হীন করিলে ৫।২১।৫।৪৬ অবশিষ্ট থাকে, পরে ২ নং টেবিলে দেখা যাইতেছে যে, ঐ ৫ রাশির খণ্ডা ৬০, তরিয়ন্থ অমুখণ্ডা ৬০ এবং এই উভরের অন্তর ০ শৃত্ত। পরে ঐ শৃত্ত হারা অবশিষ্টাক ২১।৫।৪৬ কে গুল করিলে গুণফল ০।০ হয়। অনস্তর ঐ ০।০ কে ৩০ হারা ভাগ করিলেও ০।০ হয় এবং ঐ ০।০ কে খণ্ডা ৬০ এর সহিত যোগ করিলেও ৬০।০ হয়, ঐ ৬০ কলাই বৃহস্পতির প্রতি মন্দলের দৃষ্টি; অর্থাৎ মন্দল বৃহস্পতিকে সম্পূর্ণ দর্শন করিতেছে।

এইরূপ প্রক্রিরা ছারা গণনা করিলে রবির প্রতি মঙ্গলের দৃষ্টি •া॰, বুধের প্রতি ৪া॰, শুক্রের প্রতি •া১১, শুনির প্রতি ৫০া২ এবং লর্য়ের প্রতি মঙ্গলের দৃষ্টি ৫৬া৬ হর।

वूरधद्र मृष्टिशगना।

স্বস্থানে ব্ধের দৃষ্টি না থাকার ব্ধের প্রতি ব্ধের দৃষ্টি ।। অর্থাৎ কিছুমাত্র নাই।
চল্লের প্রতি ব্ধের দৃষ্টিগণনা; –ব্ধের তাৎকালিক ক্ষুট ১১।৩,৩৯।১৫ হইতে চল্লের

ভাৎকালিক ফুট চাথাতনং হীন করিলে ২২৮০ । ১৩ অবশিষ্ট থাকে। পরে ১ নং টেবিলের লিখিত ঐ ২ রাশির থণ্ডা শৃন্ত, অন্থণ্ডা ১৫, এই উভরের অন্তর ১৫ বারা ঐ অবশিষ্টাক ২৮০ ৷ ১৩ কে গুণ করিলে গুণফল ৪২০ ৷ ৩১৫ হয়, ইহাকে ৩০ দিয়া ভাগ করিলে লব্ধ ১৪০ হয়। ঐ ১৪ কলা • শৃন্ত বিকলা পূর্ব্বোক্ত থণ্ডা • এর সহিত যোগ করিলে ১৪ কলা • শৃন্ত বিকলা হয়, ইহাই চক্রের প্রতি বুধের দৃষ্টি।

এই নিম্নাম্পারে গণনা করিলে রবির প্রতি বুধের দৃষ্টি ০। •, মঙ্গলের প্রতি ০। •, বৃহস্পতির প্রতি ৪১।৯, শুক্রের প্রতি ১৪।৩৫, শনির প্রতি তথা২৬ এবং লগ্নের প্রতি বুধের দৃষ্টি ২৭ কলা, ১৯ বিকলা হইবে।

বৃহস্পতির দৃষ্টিগণনা।

স্থানে বৃহস্পতির দৃষ্টি না থাকার বৃহস্পতির প্রতি বৃহস্পতির দৃষ্টি কিছুমাত্র নাই।
রবির প্রতি বৃহস্পতির দৃষ্টিগণনা;—বৃহস্পতির তাৎকালিক ফুট ৬।১১।২১।১৮ ছইডে
রবির তাৎকালিক ফুট ৽া৽া৫৫।৪৬ হীন করিলে ৬।১৽া২৫।৩২ অবশিষ্ট থাকে। পরে
১নং টেবিলের লিখিত ঐ ৬ রাশির খণ্ডা ৬০, অমুখণ্ডা ০ শৃল্প, এই উভরের অস্তর ৬০
ভোগ্য হারা পূর্ব্বোক্ত অবশিষ্টান্ত ১০।২৫।৩২ কে গুণ করিলে গুণফল ৬২৫।৩২ হর ।
অনস্তর ঐ ৬২৫।৩২ কে ৩০ হারা ভাগ করিলে লক্ত ২০।৫১ হর ; ঝণখণ্ডাহেতু ঐ ২০।৫১
কে পূর্ব্বোক্ত থণ্ডা ৬০ হইতে বিরোগ করিলে ৩১ কলা ১ বিকলা হর, ইহাই রবির প্রতি
বৃহস্পতির দৃষ্টি।

এই নিয়মেই অক্সান্ত গ্রহের প্রতি বৃহস্পতির দৃষ্টিগণনা করিতে হয়, কেবল প্রজ্ঞেদ এই বে, যে গ্রহের প্রতি বৃহস্পতির দৃষ্টিগণনা করিতে হইবে, সেই গ্রহের ক্ষুটরাশ্রাদিকে বৃহস্পতির ক্ষুটরাশ্রাদি হইতে হীন করিলে যদি অধ্যাপাদ রাশি অবশিষ্ট হয়, তবে ৩ নং টেবিলের থঙা গ্রহণ করিয়া যেরূপে বৃহস্পতির দৃষ্টি গণনা করিতে হয়, তাহা পাঠকবর্গকে অবগত করাইবার অক্স নিম্নে একটা দৃষ্টাস্ত প্রদর্শিত হইতেছে বধা;—

শনির প্রতি বৃহস্পতির দৃষ্টি গণনা; –বৃহস্পতির তাৎকালিক ক্ষুট ৬০১১।২১০৮ হইডে শনির তাৎকালিক ক্ষুট ২০২৫।৪৭।৫৮ হীন করিলে ৩০২৫।৩০০২০ অবশিষ্ট থাকে। পরে ৩ নং টেবিলের লিখিত ঐ ০ রাশির খণ্ডা ১৫, অমুখণ্ডা ৬০ এবং ছোগ্য ৪৫। ঐ ভোগ্য ৪৫ দারা অবশিষ্টাছ ১৫।৩০০২০ কে গুণ করিলে গুণফল ৭০০ হর। ঐ ৭০০ কে ৩০ দিরা ভাগ করিলে লব্ধ ২০০২০ হইবে, অনস্কর ধনখণ্ডাহেতু ঐ ২০০২০ কে পুর্কোক্ত খণ্ডা ১৫ এর সহিত বোগ করিলে ও৮২০ হর, ইহাই শনির প্রতি বৃহস্পতির দৃষ্টি।

এই নিম্বাস্পারে গণনা করিলে চক্রের প্রতি বৃহস্তির দৃষ্টি ১২।১৯, মঞ্চলের প্রতি

৪২।১২, বুধের প্রতি ১৫।২৪, ভফের প্রতি ৪৯।১৯ এবং লরের প্রতি ২২ কলা, ৩০ বিকলা। ছইবে।

एटजन्द्र मृष्टिगनना।

বহানে ওক্রের দৃষ্টি না থাকার ওক্রের প্রতি ওক্রের দৃষ্টি কিছুমাত্র নাই।

ধেরণে রবি ও চন্দ্রের দৃষ্টিগণনা করা হইরাছে, দেইরূপেই শুক্রের দৃষ্টিগণনা করিতে হইবে। ঐ নির্মান্থনারে গণনা করিলে রবির প্রতি শুক্রের দৃষ্টি ০।০, চন্দ্রের প্রতি ৪৩।০৪, মঙ্গলের প্রতি ০।০, বুধের প্রতি ০।০, বৃহস্পতির প্রতি ০।০, শনির প্রতি ১১।৩০ এবং লগ্নের প্রতি শনির দৃষ্টি ১৮।৩২ হইবে।

भागत पृष्टिश्वना ।

স্বস্থানে শনির দৃষ্টি না থাকার শনির প্রাত শনির দৃষ্টে কিছুমাত্র নাই।

বে নিরমান্থনারে রবি, চক্র ও ব্ধের দৃষ্টিগণনা করা হইরাছে, সেই নিরমেই শনির দৃষ্টিগণনা করিতে হইবে, কিন্ত যে প্রহের উপর শনির দৃষ্টিগণনা করিতে হইবে, সেই গ্রহের ক্ষুট শনির ক্ষুট হইতে বিয়োগ করিলে যদি ২০০৯০০ রাশি অবশিষ্ট থাকে, তবে ৪ নং টোবিলের থণ্ডা গ্রহণ করিয়া পূর্ববং গণনা করিবে; নতুবা ১ নং টেবিলেরই থণ্ডা গ্রহণ পূর্বক যথানিরমে শনির দৃষ্টিগণনা করিতে হইবে।

ঐ ৪ নং টেবিলের খণ্ডা গ্রহণ করিয়া যেরূপে শনির দৃষ্টি গণনা করিতে হয়, তাহার দৃষ্ঠান্ত,---

শনির ভাংকালিক ক্ট ২।২৫।৪৭।৫৮ হইতে রবির তাৎকালিক কুট ০।০।৫৫।৪৬ হীন করিলে ২।২৪।৫২।১২ অবশিষ্ট থাকে। পরে ১ নং টেবিলের লিখিত ঐ ২ রাশির খণ্ডা ০ শৃক্ত, অমুখণ্ডা ৩০, এই উভরের অস্তর ভোগা ৬০ দারা অবশিষ্টান্ধ ২৪।৫৩/১২ কে খণ করিলে ১৪৯২।১২ হর, ঐ গুণফলকে ৩০ দারা ভাগ করিলে লন্ধ ৪৯।৪৪ হর, অনস্তর ৪৯।৪৪ কে পুর্বোক্ত খণ্ডা ০ এর সহিত যোগ করিলে বে ৪৯ কলা, ৪৪ বিকলা হর, ইংই রবির প্রতি শনির দৃষ্টি।

এইরপে গণনা করিরা স্থির হইল যে, চল্লের প্রতি শনির দৃষ্টি ১৯।৪২, সকলের প্রতি ৪৬/১২, বুখের প্রতি ৩৭/৫১, বৃহস্পতির প্রতি ৩৭/১০, শুক্রের প্রতি ৩/০ এবং লগ্নের প্রতি ॰ কলা, • বিকলা।

গ্রহগণের পরস্পরের উপর দৃষ্টিগণনা করির। বেরণে জন্মপত্রিকা অর্থাৎ কোঞ্চিতে চক অন্ধিত করিয়া তল্পধ্যে দৃষ্টির পরিমাণ লিখিতে হর, ভবিষর পাঠকগণের বিদিভার্থ নিমে একটা চক্র অন্ধিত ক্রিয়া তল্পধ্যে উপরিলিখিত দৃষ্টির আহ সকল সরিবেশিত
দ্রা হইল।

দৃষ্টি দলিবেশের চক্র।

	त्ररवः	চন্ত্ৰত	মঙ্গলন্ত	ৰ্থক	'खरनाः	943	भारतः
त्रदर्ग	•†•	૭ ૨ ૨૭	• •	•1•	בּיבפי	•1•	88148
हरता	२११७৮	•1•	२৮।२८	>81•	५२। ५७	80108	>>182
মজলে	0 0	७५।७७	• •	0 0	82152	0 0	8 % 18 ર
न्रव	• •	8210	•10	• •	>4128	• •	99165
खटत्री	€8 8 9	ol •	6010	6168	• •	8 • 18 •	09150
उ त्क	•1 &6	२।६०	0155	>8196	89122	21•	ol.
শনৌ	9-165	69 168	e•12	৩৩।২৬	৩৮/২•	22100	•1•
नदभ	82159	>615>	¢919	२१।ऽ३	२२।७•	>	0 0

এই চক্রের প্রথম কলমে রবি হইতে লগ্ধ পর্যান্ত বিন্যন্ত হইরাছে। বিভীর কলমে রবি ও প্রথম কলমের লিখিত গ্রহণণের উপর রবির দৃষ্টির পুরিমাণ কলাছ এবং ভৃতীয় কলমে চক্রের দৃষ্টির কলাছ সন্নিবেশিত হইরাছে। ঐরপ চতুর্থ কলমে মঙ্গলের, পঞ্চম কলমে বৃধ্বের, বঠ কলমে বৃহস্পতির, সপ্তম কলমে গুক্রের এবং অন্তম কলমে শনির দৃষ্টির অহস্বাধা লিখিত হইরাছে। বথা—বঠ কলমের প্রথম কোঠার রবির উপর বৃহস্পতির দৃষ্টি ক্র কলা, ৯ বিকলা; তরিরে বিভীর কোঠার চক্রের উপর ১২ কলা, ১৯ বিকলা; তরিরে ভৃতীর কোঠার বৃধ্বের উপর ১২ কলা, ১৯ বিকলা; তরিরে ভৃতীর কোঠার বৃধ্বের উপর ১৫ কলা, ২৯ বিকলা; তরিরে ওবে বৃহস্পতির উপর ৩ শৃক্ত; তরিরে ওবিকলা ওক্রের উপর ৪৯ কলা, ১৬ বিকলা; তরিরে ৭মে শনির উপর ৩৮ কলা, ২০ বিকলা এবং ভ্রিনে ৮ম কোঠার লগ্নের উপর ১৮ কলা, ৩২ বিকলা দৃষ্টি বিশ্বক্ত হইরাছে। এইরপ চক্রদৃষ্টে অন্তান্ত প্রহের দৃষ্টির কলার পরিমাণ হইবে।

বেরপে গ্রহগণের দৃটিগণনা করিতে হর এবং ঐ দৃটিগণনা করিরা যে প্রণালীতে করপিরিকার চক্রমধ্যে সরিবেশিত করিতে হর, তাহা দৃটাস্তসমেত বিশেষরণে বর্ণিত হইণ; কিন্ত কোন্ গ্রহ কতদ্র বলবান্ তাহা না জানিলে প্রান্থ বা জাতবালকের ভভাভত কল উত্তমরূপে ক্থিত হইতে পারে না; এজন্ত বেরপে গ্রহগণের বলগণনা করিতে হর, তাহা দৃটাস্তসহ নিরে প্রকৃতিত হইতেছে।

তুক কথন।

আদিতানেবে রবতে শশাঙে কস্তাগতে জে চ গুরো কুলীরে।
মীনে

শুজে মকরে মহীতে শনৌ তুলারামিতি ভুক্পেহাঃ

রবির মেব, চল্লের বৃষ, বৃধের কন্তা, বৃহস্পতির কর্কট, গুজের দীন এবং শনির
তুলা ভুক্তান।

উচ্চ ও নীচ স্থান।

পূর্ব্যের মেবরাশি উচ্চস্থান, ঐ রাশির দশ অংশকে উচ্চাংশ কছে। বৃব রাশি চক্তের উচ্চস্থান, উচ্চাংশ তিন। মঙ্গণের উচ্চস্থান মকর, উচ্চাংশ আটাইস। বৃধের উচ্চস্থান কয়া, উচ্চাংশ পঞ্চদশ। বৃহস্পতির উচ্চস্থান কর্মট, উচ্চাংশ পাঁচ। শুক্রের উচ্চস্থান মান, উচ্চাংশ সপ্তবিংশতি। শনির উচ্চস্থান ভূলা, উচ্চাংশ বিংশতি। ইহার অপর নাম তৃক।

স্থোর তুলারাশি নীচ স্থান, ঐ রাশির দশ অংশকে নীচাংশ করে। বৃশ্চিক রাশি চল্লের নীচ স্থান, নীচাংশ ঐ রাশির তিন অংশ। মসলের নীচ স্থান কর্কট, নীচাংশ আটাইস। বুধের নীচ স্থান মীন, নীচাংশ পঞ্চদশ। বৃহস্পতির নীচ স্থান মকর, নীচাংশ পাঁচ। শুক্রের নীচ স্থান কন্তা, নীচাংশ সপ্তবিংশতি এবং শনির নীচ স্থান মেহ, নীচাংশ বিংশতি।

গ্রহগণের উচ্চাংশ।

	রাশি,	,	बरम,		বাশি	i,	व्यः म	
শ্ববি	•	ı	>					
हत	>	t	•	রু হ স্পতি	9	•	¢	
मक्न	>	١	24	9 4	>>	•	29	
बुध		ŧ	>6	শনি	•	l	2.	

खङ्गरमत नीहाःम ।

	রাশি	t,	ष्यःनं,		রাশি	3	অংশ,
পুৰি	99	á	>•	ৰুধ	>>	ŧ	>6
5-व	9	1	•	বৃহস্পত্তি	2	١	•
যুক্ত	9	1	24	74	•	1	29
				भवि	•	ı	2.

গ্ৰহবীৰ্ষ্যং বিনা যত্মাজনায়তে ন দশাক্ৰমঃ। তত্মাদানয়নং তত্ম বড়্বলকা বদাম্যহম্॥

প্রাহগণের বল ব্যতীত দশা সংস্থাপনের ক্রম হর না; একারণ বজ্বলসাধনের উপায় বলিতেছি।

नी हास्त्र वश्राप्या अस्त्र वतः करवर ।

প্রহদিগের তুলবল কথিত হইতেছে। যথন যে গ্রহের তুলবল সাধন করিতে হইবে, ভখন দেই গ্রহের ফুটরাখ্যাদি হইতে খীর নীচাংশ হীন করিয়া যদি শেব রাখ্যাদি থাকে, ভবে রাশিকে ত্রিশ দিয়া পূরণ করিয়া অংশের সহিত যোগ করিবে। যদি অন্তর করিবার সময় গ্রহফুটাপেকা নীচ রাখ্যাদি অধিক হয়, তাহা হইলে ঐ নাচ রাখ্যাশকে উপরে সংস্থাপন করিয়া অন্তর করিবে। অন্তর করিলে যদি অবশেষ ছয় রাশি অপেকা অধিক হয়, তাহা হইলে বাদশ রাশি হইতে প্নরায় তাহা বাদ দিবে। পুনরায় বদি রাশি শেষ থাকে, তাহা হইলে তাহাকে ত্রিশ বারা পূরণ করিয়া অংশের সহিত যোগ করত ও বারা ভাগ করিলে যাহা লক্ক হইবে, ভাহাই সেই গ্রহের তুলবল।

पृष्टीख ।

রবির নীচাংশ ও রাশি ১০ অংশ হইতে রবির তাৎকালিক ক্টুট নালবেলিও হীন করিলে আমান্তাসন্ত অবশিষ্ট থাকে, ইহাকে ও ধারা ভাগ করিলে ৫৬ কলা, ৫৯ বিক্লা লব্ধ হয়; ইহাই রবির ভূজবল।

চল্লের তুক্বল সাধন—চল্লের নীচাংশ ৭ রাশি ও সংশকে চল্লের তাৎকালিক ক্ট্ চাথাতমাং হইতে হীন করিলে চাথাতমাং অবশিষ্ট থাকে, উহাকে ও দারা ভাগ করিলে ১০ কলা, ৫৩ বিকলা লব্ধ হর, ইহাই চল্লের তুক্বল।

মন্ত্রের তুক্তবল সাধন; —মন্ত্রের নীচাংশ ও রাশি ২৮ অংশ হইতে মন্ত্রের তাৎ-কালিক ক্ট এবাহণাও কে হীন করিলে আহৎ:৩২।৫৬ অবশিষ্ট থাকে, তাহাকে ও দিয়া ভাগ করিলে বে ৩৮ কলা, ৩১ বিকলা লব্ধ হয়, ভাহাই মন্ত্রের তুক্তবল। ৰুধের ভূকবল ;—ব্ধের নীচাংশ ১১ রাশি ১৫ অংশ হইতে ব্ধের তাৎকালিক ক্ট ১১৷৩০৯৷১৫ রাশ্রাদিকে হীন করিলে বে ০৷১১৷২০৷৪৫ রাশ্রাদি অবশিষ্ট থাকে, তাহাকে ৩ দিয়া ভাগ করিলে এ৪৭ কলাদি লব্ধ হয়, ইহাই বুধের তুকবল।

বৃহস্পতির তুক্দবল; নর্হস্পতির নীচাংশ ৯ রাশি ৫ অংশ হইতে বৃহস্পতির ভাংকালিক ক্ষুট ৬১১১২১১৮ রাস্তাদি হান করিলে ২২৩৩৮৪ অবশিষ্ট থাকে। পরে ঐ অবশিষ্টান্তকে ও বারা ভাগ করিলে ২৭ কলা ৫৩ বিকলা লব্ধ হর, ঐ ২৭৫৩ কলাদিই বৃহস্পতির তুক্বল।

শুক্রের তুক্ষবল;—শুক্রের নীচাংশ ৫ রাশি ২৭ অংশ হইতে শুক্রের তাৎকালিক ক্ট সাহায়চাহ৮ রাশ্রাদি হীন করিলে ৪।২৪।১১।৩২ রাশ্রাদি অবশিষ্ট থাকে। পরে ঐ ৪।২৪।১১।৩২ রাশ্রাদিকে ৩ দিয়া ভাগ করিলে যে ৪৮ কলা ৪ বিকলা লব্ধ হয়, তাহাই শুক্রের তুক্ষবল।

শনির তুক্বল; —শনির তাৎকালিক ক্ট হাহ৫।৪৭।৫৮ রাশ্রাদি ইইতে শনির নীচাংশ
রাশি ২০ অংশ হীন করিলে হা৫।৪৭।৫৮ রাশ্রাদি অবশিষ্ট থাকে, পরে ঐ হা৫।৪৭।৫৮
রাশ্রাদিকে ও দিরা ভাগ করিলে বে ২১।৫৬ কলাদি লব্ধ হয়, ঐ ২১ কলা, ৫৬ বিকলাই
শনির ভুক্বল 1

১৮০৯ শকের ১লা বৈশাধ দিবা ছইপ্রহর সময়ে কোন বালকের জন্ম হইলে তাহার ভূসবল যেরপে গণনা করিতে হয়, তাহা বলা হইল; একণ মূলত্রিকোণাদি বলসকল বেরপে গণনা করিতে হয়, তাহার দৃষ্টান্ত মূল বচনসমেত ক্থিত হইতেছে।

অত্যে মৃলত্রিকোণাদির বিবরণ বিবৃত করিয়া তৎপর তাহাদিগের বলগণনার সঙ্কেত বলা হইবে।

মেব রাশি যক্তবের মূলত্রিকোণ। বৃষ রাশি চল্লের মূলত্রিকোণ। সিংহ রাশি রবির, কস্তারাশি বৃধের, তুলারাশি শুক্রের, ধয়ুরাশি বৃহস্পতির এবং কুল্ক রাশি শনির মূলত্রিকোণ হয়।

গ্রহদিগের নৈদর্গিক মিত্রকথন।

রবির মিত্র, চক্র, মঙ্গণ ও বৃহস্পতি। চক্রের মিত্র রবি এবং বুধ। মঙ্গলের মিত্র রবি, চক্র ও বৃহস্পতি। বুধের মিত্র রবি ও শুক্র। বৃহস্পতির মিত্র, স্থ্য, চক্র ও মঙ্গল। শুক্রের মিত্র বুধ ও শনি। শনির মিত্র বুধ ও শুক্র।

নৈদৰ্গিক শত্ৰুকথন।

রবির শক্র শুক্র । চজের শক্র নাই । মঙ্গলের শক্র বুধ । বুধের শক্র চক্র । বৃহ-ম্পতির শক্র বুধ ও গুক্র । গুক্রের শক্র রবি ও চক্র । শনির শক্র রবি, বঙ্গল ও চক্র ।

নৈস্মিক সম্ভাগন।

রবির সম্বুধ। চজের সম্মদশ, রুহস্পতি, শুক্ত ও শনি। মদবের সম্শনি ও শুক্ত ।বুধের সম্মদদ, রুহস্পতি ও শনি। বুহস্পতির সম্শনি। শুক্তের সম্বুহস্পতি ও মদদ। শনির সম্বুহস্পতি।

তাৎকালিক শক্ত ও মিত্রকখন।

ক্ষকালে, কিছা প্রশ্নকালে, কিছা বিবাহাদিকালে কিছা কোন সমন্ন গ্রহণণের তাৎকালিক মিত্রামিত্র জানিতে হইলে তাহা জানার নিরম এই বে, সেই সমন বে রাশিতে বে গ্রহ থাকিবে, সেই রাশি হইতে গণনা করিয়া চতুর্থ, দিতীয়, দাদশ, ভৃতীয়, একাদশ ও দশম স্থানে বে বে গ্রহ থাকিবে, তাহারা পরম্পর মিত্র হইবে, তত্তির শক্ত।

মিত্রাদিচক্রম।

	त्रदरः	চন্দ্রপ্ত	মক্লস্ত	বৃধক	७८त्राः	ওক্ত	भटनः
নৈসর্গিক-মিত্রং	हः सः वृ	त्र तू	র চং বৃ	त्र ७	র চং মং	ৰু শ	त् छ
নৈস্থিক-শক্তঃ	ত শ	•	ৰু	Б१	वू छ	त हर	র চং ম
নৈসৰ্গিক-সমঃ	ৰু	মং বু ভ শ	**	মং বু শ	**	मः वृ	বৃ
তাৎকালিক-মিত্রং	ৰু শুশ	व् वृ	বৃভশ	র চং ম ং শু শ	51	র মণ বুশ	त मः वू ७
তাৎকানিক-শক্তঃ	हः यः वृ	त्र मः ७ भ	न्न हर वृ	ą	র মং বু ৩ খ	ह ः वृ	চং বৃ
अ रिमिजः	0	ब्	•	র শু	50	ৰু শ	बू ७
মিত্রং	ब्	वृ	ভ শ	मः भ	•	मर	•
चिंशमंद्धः		•	•	•	व् ७	5 %	53
मकः		१ ७ भ	•	বৃ	4	বৃ	₹
স্মঃ	हः सः वृ	র	ज हर बूब्	5:	त मर	র	न गः

অধিমিত্রাদিকধন।

যে আহ যে এতের নৈসর্গিক মিত্র, সম ও শক্র বলিয়া অভিহিত হয়, বলি সেই গ্রহ তাৎকালিক মিত্র হয়, তবে যথাক্রমে অধিমিত্র. মিত্র ও সম হইবে। আর বে গ্রহ স্বাত্তা-বিক শক্র, সম ও মিত্র বলিয়া কথিত হয়, সেই গ্রহ তাৎকালিক শক্র হইলে বথাক্রমে অধিশক্র, শক্র এবং সম হইবে। অর্থাৎ নৈস্থিকি মিত্র গ্রহ তাৎকালিক মিত্র হইলে অধিমিত্র; সমগ্রহ তাৎকালিক মিত্র হইলে মিত্র; শক্র গ্রহ তাৎকালিক মিত্র হইলে সম হইবে এবং নৈস্থিকি শক্রগ্রহ তাৎকালিক শক্র হইলে অধিশক্র; সমগ্রহ তাৎকালিক শক্র হইলে সম হইবে।

মিত্র, শক্ত, সম, তাৎকালিক মিত্ত, শক্ত এবং অধিমিত্রাদি গণিত করিয়া যেরূপে শুমাপত্রিকাতে চক্র অন্ধিত করিতে হয়, উপরে মিত্রাদি চক্রে তাহা প্রদর্শিত হইয়াছে।

ক্ষেত্রকথন।

মেব মন্সলের ক্ষেত্র, বৃষ গুজের ক্ষেত্র, মিথুন বৃধের ক্ষেত্র, কর্কট চাজের ক্ষেত্র, সিংছ রবির ক্ষেত্র, কন্তা বৃধের ক্ষেত্র, ভূলা গুজের ক্ষেত্র, বৃশ্চিক মন্সলের ক্ষেত্র, ধঞ্চ বৃহস্পতির ক্ষেত্র, মকর ও কুন্ত শনির ক্ষেত্র এবং মীন রাশি বৃহস্পতির ক্ষেত্র।

হোরাকখন।

রাশির অর্কাংশের নাম হোরা। তন্মধ্যে বিষম রাশির প্রথম অর্কাংশে রবির হোরা, বিতীয় অর্কাংশে চক্রের এবং সমরাশির প্রথম অর্কাংশে চল্লের হোরা ও বিতীয় অর্কাংশে রবির হোরা জানিবে।

एकानकथन।

রাশির তিন অংশের এক এক অংশকে দ্রেকাণ কছে। তর্মধ্যে বে গ্রন্থ বে রাশির অধিপতি, নেই গ্রন্থ রোশির অধিপতি, নেই গ্রন্থ রাশির অধিপতি গ্রন্থ রাশির অধিপতি গ্রন্থ বিজ্ঞানের অধিপতি এবং বে গ্রন্থ বালার অধীশর, নেই গ্রন্থ তৃতীয় দ্রেকাণের অধিপতি।

সপ্তাংশকথন।

রাশির সপ্তম ভাগের এক ভাগের নাম স্থাংশ। মেব রাশির স্থাংশ মেবরাশি হইতে, বৃষ রাশির বৃশ্চিক হইতে, মিগুনের মিথুন, কর্কটের মকর, সিংহের সিংহ, কন্তার দীন, তুলার তুলা, বৃশ্চিকের বৃষ, ধন্তর ধন্তু, মকরের কর্কট, কুভের কুন্ত এবং দীনের কন্তারাশি হইতে স্থাংশ বিবেচনা করিবে।

স্পার্টার্থ ;— মের রাশির সপ্তাংশ গণনা করিবার জন্ত মের রাশির ত্রিশ অংশকে সাভ ভাগ করিলে মের রাশির অধিপতি মঙ্গলই তাহার প্রথম সপ্তাংশের অধিপতি হন। ঐরপ ব্বের অধিপতি শুক্র বিতীর সপ্তাংশের, মিধুনের অবিপতি বুধ তৃতীর সপ্তাংশের, কর্কটের অধিপতি চক্র চতুর্থ সপ্তাংশের, সিংহের অধিপতি রবি পঞ্চম সপ্তাংশের, কস্কার অধিপতি বুধ বর্চ সপ্তাংশের এবং তুলারাশির অধিপতি শুক্র সপ্তাংশের অধিপতি। ঐরপ বৃহ রাশির সপ্তাংশ গণনা করিতে হইলে বৃহ রাশির ৩০ অংশকে সাত ভাগ করিলে বৃশ্চিকের অধিপতি মঙ্গল তাহার প্রথম সপ্তাংশের অধিপতি হন এবং ধন্তর অধিপতি বৃহস্পতি বৃহস্পতি বিত্তার ও চতুর্থ সপ্তাংশের, বৃহস্পতি পঞ্চম সপ্তাংশের, মঞ্চল বর্চ সপ্তাংশের ও শুক্র সপ্তাংশের অধিপতি। এইরপে উপরের লিখিত নির্মালসারে অভাভ রাশির সপ্তাংশ ভির করিতে হইবে।

बवाः भ।

রাশির নবম ভাগের এক ভাগের নাম নবাংশ। মেব, সিংহ, ধয়্ এই তিন রাশির মেবাবিধি করিয়া নবাংশ গণনা করিবে অর্থাং ঐ তিন রাশির প্রথমাংশ মেব এবং মেবের অধীশর মকল, ঐ মকলই প্রথমাংশের অধীশর হরেন। বিতীয়াংশ র্ম, ঐ রাশির অধিপতি ভক্ত, ভক্রই বিতীয়াংশের অধিপতি হরেন। তৃতীয়াংশ মিধুন, মিধুনের অধিপতি বৃধ, বৃধই তৃতীয়াংশের অধিপতি হয়েন। এই প্রকার মেবাদি নয় রাশির অংশ ক্রমে যে যে গ্রহ অধিপতি হয়েন। এই প্রকার মেবাদি নয় রাশির অংশ ক্রমে যে বে রাশির যে যে গ্রহ অধিপতি হয়েন, তাহারা সেই সেই অংশের অধিপতি হন। এইরূপ মকর, বৃষ, কলা তিন রাশির মকরাদি করিয়া; তুলা, কুস্ক, মিধুন তিন রাশির তুলাবিধি করিয়া এবং কর্কট, বৃশ্চিক, মীন এই তিন রাশির কর্কটাবিধি করিয়া নবাংশ গণনা করিবে।

बामभारभकथन।

রাশিকে বাদশ ভাগে বিভক্ত করিলে তাহার এক এক ভাগের নাম বাদশাংশ। বে রাশির বাদশাংশ নিরূপণ করিতে হইবে, বে গ্রহ সেই রাশির অধিপতি, সেই গ্রহই প্রথম বাদশাংশের অধিপতি হইবে। আর বে গ্রহ সেই রাশির বিতীয় রাশির অধিপতি, সেই গ্রহই বিতীয় বাদশাংশের অধিপতি হইবে, এইরপে পর পর সমস্ত বাদশাংশের অধিপতি নির্ণয় করিতে হইবে।

ত্রিশাংশকথন।

রাশির ত্রিশ ভাগের এক এক ভাগকে ত্রিংশাংশ কহে। বিব**র স্থানির ক্রথা**ৎ মেব, মিগুন, সিংহ, তুলা, ধন্থ এবং কুন্ত এই কর রাশির প্রথম পাঁচ জংশ পর্যান্ত ক্রিনাংশের অধিপতি মকল। ভাহার পর পঞ্চম জংশ পর্যান্ত শনির, তৎপরে অষ্টম জংশ বুল্পভির, তদনন্তর সপ্তম জংশ বুদের এবং তৎপরে পঞ্চম জংশ ভক্তের ত্রিংশাংশ। আরু সম্মাণিতে ঠিক উহার বিপরীতভাবে ত্রিংশাংশ বসিবে, অর্থাৎ সম রাশিতে প্রথম পঞ্চম জংশ ভারের, ভাহার পর পঞ্চম ভাগ বুদের, ভাহার পর জাইম জংশ বৃহস্পতির, ভাহার পর সপ্তম ভাগ শনির এবং তদনন্তর পঞ্চম জংশ মকলের ত্রিংশাংশ হইবে।

Sele > almalim

mythrate sciolog los as to loc instructing cc ocips In los be

	1	- 1						300							
	pertical a	2	€0155	100	*	*	 0 *	įT.	•	10°	2	j gc	lo√	•	þr.
	profilmently o	٩	900	[4]	OV	*	10	lo v	(a)	•	10-6	6	Joc	lo.	•
	policity of		·0166	D	杯	lov	10"	10	lov.	pr	•	lod	10	(Oc	lo.
	perpention of	9	• 3 ¢	lo-é	0	(AT	lov.	1	*	lov	ia:	D	loc	16	jus
	jestjentfp :	D	•015¢	lac	10%	10	ja:	lov	*	扩	lov	ia:	•	lo-c	16
	political a	8	0 0.5	Š	ļģr.	lo.	P	व	tor	100	*	ĮφΨ	jar	•	io.
	politically of	,	·016	lo-(ě	 QT	10%	•	W	₽°	*	*	QV	jar.	•
- E	polimite a		• I D	•	lo.	*	QC	P	•	评	ov	*	有	lov.	þr
0.0	pripite o		•015	jar .	•	Port.	2	jo c	100	(2)	ja-	W	*	*	lov
वाम्भार्टभाज	Territories	:	0100	qu	la.	ig of	00	P	i ⊽∗	امر	OV	for	lan	lo.	lo.e.
N L	मार्गाम व	q	१ शहे	व	P	D	*	ja:	₩.	. 🔊	*	þr	jor	P	*
<u> </u>	FITTE F		0 5:0° 5	D	16	(4 *	*	•	Š	ia.	*	D	16	je.	*
9	malbie a	a	9010	किर्	la.	Ĭ Q V	l ov	lo√	₩.	pr	lo v	loc	lo.	IOV	lov
100			॰ १। ०८	M e	•	10	(AT	क्रि	•	W	ja:	Įψ:	•	*	jar .
	### 8		>5100	í	ja	*	•	ě	ja"	*	P	ě	ja	*	P
9	मःभेष्टि व		0105	المر	10°	lov	port	la.	V	₩v	10-6	la _e	lae.	lov	lo-f
			· \$ @	D	*	pr	(Oc	P	1	je -	Jac	•	*	ja "	(cc
	Inhibit o	:	•>10	(er	*	0	5	14"	扩	•	Š	(4)	1	•	16
	ाक्ष्या	,	ő	los	妆	ж	OV	jar	•	la.	ě	Qr	किर्	P	ja:
	श टलकोन		*	jor.	lan	D	ja:	 ♥	*	10	100	jer .	D	joré	ě
	भ्रक्षेत्र ।	8		(M.	Ð	lot	*	jāc.	M	•	jar.	UW	*	*	Or
	(हाउ)	-	ş	4	कि	°/ 10	Qr	* C	v	کا	[01	*	lås	26	 G C
	(हरजा		•	(de	6	la:	6	, for	2	(pc	2	jor	10	(o:	26

সপ্তা: শচক্র	ſ
--------------	---

ত্রিংশাংশচক্র।

	महीरन	A	A	প্র	F	প্র	A		<u> </u>	*	T	新
	5	~	9	60	•	9	•	majimazij	<u>जिल्ल</u> ार	७ विश्मारम	in it	विश्नारम
রাশি	801416018	A18 C18014	>2163126182	१ ८।८०।ता५८	35126183165	रदाहरादशहर	0 0 0 0 0	4	N		8	一
८म ४	# १		ৰ্	53	त्र	ৰু	0	e य	> e	বৃ	२¢ वू	9
वृ ष	মং	ই	4	*	বৃ	यः	0	0	>२ बू	^২ ত্	२६	9
মিথুন	ৰু	इ १	র	ৰু	9	মং	বৃ	e म	> ° म	व व	२८ त्	9:
存布员	*	*	ब्	यः	0	ৰু	চং	9	३२ बू	२•	२६	0
সিংহ	র	ब्	9	মং	বৃ	4	4	e N	> 1	34	२६	9
<u>কন্তা</u>	বৃ	मर	•	ब्	Б:	র	व्	0	১২ বু	२०	२ <i>६</i> भ	৩
তুল1	3	म ः	ৰ	*	*	ৰূ	মং	<u>@</u> म	20	बू बू	38	9
বৃশ্চিক	9	ब्	5:	द	ब्	3	यः	0	३२	२ • वू	26	৩
ধন্ত	ৰূ	¥	Ť	3	মং	3	3	4 म	> ·	বৃ	२¢	9
শকর	55	ब्र	ৰু	3	भः	বৃ	4	0	>२ वू	२०	२८	ত্
क् य	न	व	মং	9	ब्	5१	র	ध	> "	3 इ	२६	9
भीन	ब्	7	भः	वु	4	4	व्	8	३ २ व	२ • वू	₹ 4	9

क्लिक हरेए जानेनाः एमत हरकात विवत्।

এই চক্রের প্রথম ক্লমে ভাষণ রাশির নাম, বিতীয় কলমে ঐ সক্ল রাশির অধি-পতির নাম, ৩য় কলমে হোরাধিপতিয় নাম, চতুর্থ কলমে জেরুগাধিপতির নাম, ৫ম ক্লমে ন্যাংশাধিপতির নমি এবং ৬ঠ কলমে ঐ সক্ল রাশিয় বাদশাংশাধিপতির নাম বিলক্ত হইরাছে। এই সকল অধিপতির নামের উপরিভাগে অংশাদির অস্ক লিখিত হুইরাছে। দৃষ্টি করিলে সহজেই বোধগম্য হুইবে।

সপ্তাংশ ও ত্রিংশাংশচক্রের বিবরণ।

সপ্তাংশ চক্রের ১ম কলমে মের হইতে মীন রাশির নাম, ২র কলমে প্রথম সপ্তাংশের অধিপতি, তর কলমে ২র সপ্তাংশের অধিপতি, ৪র্থ কলমে ৩র সপ্তাংশের, ৫ম কলমে ৪র্থ রপ্তাংশের, ৬ঠ কলমে ৫ম সপ্তাংশের, ৭ম কলমে ৬ঠ সপ্তাংশের এবং ৮য় কলমে রপ্তম সপ্তাংশের অধিপতি লিখিত হইরাছে এবং ত্রিংশাংশ চক্রের ১ম কলমে মেবরাশির ১ম ত্রিংশাংশ হইতে ৫ম ত্রিংশাংশের অধিপতি এবং ২র কলম হইতে ১২শ কলমে বধাক্রমে মীল পর্যন্ত রাশি সকলের ১ম হইতে ৫ম ত্রিংশাংশের অধিপতি বিক্তক্ত হইরাছে। দৃষ্টি করিলেই সহজে বোধগম্য হইবে।

মূলত্রিকোণে বাণাকী তদক্ষমধিনিত্রভে। স্বাগৃহে স্থাবলং ত্রিংশং তদকং মিত্রমন্দিরে। তদক্ষং সমরাশো স্থাভদকং শত্রুমন্দিরে। তদক্ষধিশত্রো স্থাদ্রাহ্ণং তৎ সপ্তবর্গক্ষ্।

স্থানবল উক্ত হইতেছে। গ্রহ যদি সীয় মূলত্রিকোণ গৃহে থাকে, তাহা হইলে তাহার ৪৫ কলা ত্রিপাদ ৰল, যদি অধিমিত্রগৃহে থাকে, তাহা হইলে উক্ত বলের অর্ক ২২।৩০ কলা বল, যদি স্থায় গৃহে থাকে, তাহা হইলে তাহার ৩০ কলা অর্ক বল, আর মদি মিত্রগৃহে থাকে, তাহা হইলে ১৫ কলা পাদ বল, যদি সমগ্রহের গৃহে থাকে, তাহা হইলে উক্ত পাদবলের অর্ক ৭।৩০ কলা, শক্রগ্রহের গৃহে থাকিলে পাদার্দ্ধার্ক ৩৪৫ কলা বল এবং অধিশক্র গ্রহের গৃহে থাকিলে সেই গ্রহের পাদার্দ্ধার্ক ১।৫২।৩০ কলা বল হয়। উক্ত রীতি অনুসারে গ্রহদিগের অধিষ্ঠিত ক্লেত্রাদির অধিপত্তি প্রহের সহিত মিত্রাদির বিবেচনা করিয়া সপ্তবর্গের বল সাধন করিবে।

मृल जिर्देशिष वनश्यात मुक्ते सा

পূর্ব্বোক্ত বচনামুসারে জানা ঘাইতেছে তে, মঙ্গল নিজ মূলত্রিকোণে অবস্থিত, জাত্তব তাহার বল ৪৫ কলা • বিক্লা।

ক্ষেত্রবল;—পূর্ব্বাক্ত বন্ধকৃত্তলীর চক্রদৃষ্টে জানা হাইতেছে যে, রবি মেহরাশিতে ফ্রেলর ক্ষেত্রে অবস্থিত। মিত্রাদি-চক্র-দৃষ্টে জানা হাইতেছে যে, মঙ্গল রবির ন্ম; শতএব রবির ক্ষেত্রবল ৭।৩০ কলাদি। চক্র ধনুরাশিতে বৃহস্পতির ক্ষেত্রে আবস্থিত, বৃহস্পতি চক্রের মিত্র; অতএব চক্রের বল ১৫ কলা। মঙ্গল মেহরাশিতে স্বক্ষেত্রে

ভাৰছিত আছে; ভাতএৰ মাজনের বল ৩০ কলা। বুধ মীনরাশিতে বৃহস্পতির ক্ষেত্রে ভাৰছিত, বৃহস্পতি বুধের শক্ত; ভাতএৰ ভাহার বল ৩০৪৫ কলাদি। বৃহস্পতি তুলার ভাকের ক্ষেত্রে অবস্থিত, ভাক বৃহস্পতির অধিশক্ত; ভাতএৰ বৃহস্পতির বল ১০২০০ কলাদি। ভাক বৃষরাশিতে স্বক্ষেত্রে ভাবস্থিত; ভাতএৰ ভাকের বল ৩০ কলা। শনি মিধুনে বুধের ক্ষেত্রে ভাৰছিত, বুধ শনির ভাধিমিত্র; ভাতএৰ শনির ক্ষেত্রবল ২২০০ কলাদি।

হোরাবল;—উলিখিত জনকালে জানা বাইতেছে বে, রবি মেব রাশির প্রথমার্চ্চ আংশের মধ্যে অবন্থিত, ঐ প্রথমার্চ্চ রবির নিজ হোরা; অত এব রবির হোরাবল ৩০।০ কলাদি। চক্র বন্ধুরাশির প্রথমার্চ্চ ভাগ ১৫ অংশ মধ্যে অবন্থিত; ঐ ১৫ অংশ প্রথম ভাগ রবির হোরা, অভ এব চক্র রবির হোরার অবন্থিত, রবি চক্রের সম; এজন্ত চক্রের হোরার বল ৭।৩০ কলাদি। মলল ঐ সমর মেবরাশির প্রথমার্চ্চ মধ্যে রবির হোরার অবন্থিত, রবি মললের সম; অভ এব মললের বল ৭।৩০ কলাদি। বৃধ মীন রাশির প্রথমার্চ্চ ১৫ অংশ মধ্যে অবন্থিত, উহা চক্রের হোরা, চক্র বৃধের সম; অভ এব বৃধের বল ৭।৩০ কলাদি। বৃহস্পতি তুলারাশির প্রথমার্চ্চ ১৫ অংশ মধ্যে অবন্থিত, ঐ ১৫ অংশ রবির হোরার অবন্থিত, রবি বৃহস্পতির সম; এজন্ত বৃহস্পতির বল ৭।৩০ কলাদি। শুক্র বৃষ্বাশির প্রথমার্চ্চ ১৫ অংশ মধ্যে অবন্থিত, ঐ রাশির ১৫ অংশ চক্রের হোরা, অত এব বৃহস্পতির বল রবির হোরার অবন্থিত, চক্র শুক্রের অধিশক্র; এজন্ত শুক্রের হোরা, অত এব শুক্র চক্রের হোরার হিত, চক্র শুক্রের হোরা, অত এব শুক্র চক্রের হোরার অবন্থিত, চক্র শুক্রির হোরার অবন্থিত, ১৫ অংশ মধ্যে অবন্থিত, ঐ প্রশাদির হারার চক্রের হোরা, অত এব শুক্র চক্রের হোরার অবন্ধিত, চক্র শুনির অধিশক্র; এজন্ত শুনির হোরাবল ১।৫২।৩০ কলাদি।

দ্রেকাণবল ;—পূর্ব্বোক্ত জন্মসমনের ক্টু ও জন্মকুগুলীর চক্রদৃষ্টে জানা যাইতেছে বে, রবি মেবরাশির প্রথম ১০ জংশ মধ্যে জবস্থিত, ঐ দশ জংশের অর্থাৎ প্রথম দ্রেকাণের অধিপতি মঙ্গল, অতএব রবি মঙ্গলের দ্রেকাণে অবস্থিত, মঙ্গল রবির সম ; এজন্ত রবির ক্রেকাণবল ৭৩০ কলাদি। চন্ত্র ধন্মনাশির প্রথমন্ত্রেকাণ অর্থাৎ প্রথম দশ অংশের সধ্যে অবস্থিত, বৃহস্পতি ঐ প্রথম দ্রেকাণের অধিপতি, অতএব চন্ত্র বৃহস্পতির ক্রেকাণে দ্বিত, বৃহস্পতি চন্ত্রের মিত্র; স্কুজাং চন্ত্রের ক্রেকাণবল ১৫০ কলাদি। মঙ্গল ঐ সমন্ত্র মেবরাশির প্রথম ১০ জংশ মধ্যে অবস্থিত, মঙ্গল ঐ প্রথম দ্রেকাণের অধিপতি, অতএব মঙ্গল বীর ক্রেকাণে অবস্থিত; এজন্ত মন্থলের বল ৩০০ কলাদি। পূর্ব্বোক্ত জন্মসমন্ত্রে বৃধ মীনরাশির ক্রেকাণে অবস্থিত; এজন্ত মন্ত্রেকাণে অবস্থিত, বৃহস্পতি প্রথম ক্রেকাণের অধিপতি, স্কুজাং বৃধ বৃহস্পতির ক্রেকাণে অবস্থিত, বৃহস্পতি বৃধের শক্ত ; এজন্ত বৃধের বল এ৪৫ ক্রাদি। বৃহস্পতি তুলারাশির দ্বিতীর ১০ জংশ মধ্যে জর্থাৎ বিতীর ক্রেকাণে ক্রিবিত,

শনি বিতীয় দ্রেকাণের কবিণতি, স্করাং বৃহস্পতি পনির দ্রেকাণে বিভ; পনি বৃহস্পতির পক; এজন্ত বৃহস্পতির বল ৩৪৫ কলাদি। ঐ সময় শুক্ত বৃষরাশির ৩ জংল মধ্যে জর্বাৎ প্রথম দ্রেকাণে জবন্ধিত, শুক্ত ঐ প্রথম দ্রেকাণের অধিপতি, এজন্ত শুক্ত বীয় দ্রেকাণে জবন্ধিত; অতএব শুক্তের বল ৩০। এবং শনিও ঐ সময় মিগুন রাশির ভৃতীয় দ্রেকাণে জবন্ধিত, ঐ দ্রেকাণের অধিপতি শনি, অতএব শনি বীর দ্রেকাণে বিত; স্কুরাং শনির দ্রেকাণবল ৩০। কলাদি।

 সপ্তাংশবল ;—পূর্ব্বোক্ত জন্মসমরে রবি মেবরাশির প্রথম সপ্তাংশে অব্ভিতি করি-তেছে, মকল ঐ মেবরাশির প্রথম সপ্তাংশের অধিপতি, মকল রবির সম, অভএব রবির সপ্তাংশবল ৭।৩০ কলাদি। ঐ সময়ে চক্র ধহুরাশির বিতীয় সপ্তাংশ মধ্যে অবস্থিত, শনি ঐ দ্বিতীয় সপ্তাংশের অধিপতি, আর ঐ শনি চাক্রের শক্ত, অতএব চাক্রের সপ্তাংশবল ৩৪৫ কলাদি। মঙ্গল মেবরাশির প্রথম সপ্তাংশে অবস্থিত; মঙ্গল ঐ রাশির প্রথম সপ্তাং-শের অধিপতি, স্তরাং মঙ্গল স্বীয় সপ্তাংশে অবস্থিত; একন্ত মঙ্গলের সপ্তাংশবল ৩০ কলা। বুধ ঐ সময় মীনরাশির ৪ অংশ মধ্যে অবস্থিত, উহা ক্সারাশির প্রথম সপ্তাংশের অন্তর্গত, বুধ কঞ্চারাশির প্রণম স্থাংশের অধিপতি, স্ক্তরাং বুধ ঐ সমর স্বীয় স্থাংশে অবস্থিত, এজন্ত বুধের সপ্তাংশবল ৩০।০ কলাদি। বুহস্পতি ঐ সময় তুলারাশির ১২ অংশ মধ্যে অবস্থিত, ঐ ১২ অংশ তুলারাশির তৃতীয় সপ্তাংশের অন্তর্গত, বৃহস্পতি ঐ তৃতীয় मপ্তাংশের অধিপতি, ইহাতে জানা বাইতেছে যে, বৃহস্পতি স্বীর স্প্তাংশে **অ**বস্থিত; এজন্ত বুহস্পতির সপ্তাংশবন ৩০। কলাদি। গুক্র ঐ সময় বুবরাশির ৩ আংশ মধ্যে অবস্থিত, ঐ ব্যরাশির ৩ অংশ বৃশ্চিকের অধিপতি মললের সন্তাংশের কন্তর্গত, অতএর ভক্র মঙ্গলের - সপ্তাংশে অবস্থিত, মঙ্গল ভক্রের মিত্র, স্মৃতরাং ভক্রের সপ্তাংশবদ ১৫।০ ক্লাদি এবং শনি এ সময় মিখুনরাশির সপ্তম সপ্তাংশে অবস্থিত, ধহুরাশির অধিপতি রুহম্পতি ঐ সপ্তম সপ্তাংশের অধিপতি, স্কতরাং শনি রুহম্পতির সপ্তাংশে অবস্থিত, বুহুম্পতি শনির শক্র, অতএব শনির সপ্তাংশবল ৩।৪৫ কলাদি স্থির হইল।

† নবাংশবল,—পূর্ব্বোক্ত জন্মকালে গ্রহগণের ক্ষৃট ও জন্মকুগুলী দৃষ্টে জানা বাইতেছে বে, ঐ সমর রবি মেষরাশির ১ জংশের মধ্যে অবস্থিত, ঐ ১ জংশ ঐ রাশির প্রথম নবাংশের

^{*} এক রাশি অর্ধাৎ ৩০ অংশকে ৭ দিরা ভাগ করিলে তাহার প্রথম সপ্তাংশের পরিমাণ ১)১৭/৮/৩৪ অংশাদি; ইহা হইতে ৮/৩৪/১৭/৮ অংশাদি পর্যন্ত ২র সপ্তাংশ; ২র হইতে ১২/৫১/২৫/৪৩ অংশাদি পর্যন্ত এব ; এর এইতে ২১/২৫/৪২/৫১ অংশাদি পর্যন্ত এর ; এর এইতে ২১/২৫/৪২/৫১ অংশাদি পর্যন্ত এর ইতে ২৫/৪২/৫১/২৫ পর্যন্ত ৬৯ এবং ৬৯ এইতে ৩০ অংশ পর্যন্ত সপ্তম সপ্তাংশ।

[†] এক রাশি অর্থাৎ ৩০ অংশকে » দিরা ভাগ করিলে তাহার এখন নবাংশের পরিষাণ ও অংশ,

অন্তর্গত, উহার অধিপতি মলল, মধল রবির লয়, অতএব রবির নবাংশবল ৭।৩০ কলাদি।
চক্র ধন্ননাশির ৬ অংশের মধ্যে অবস্থিত, ঐ রাশির ৬ অংশ ঐ রাশির বিতীন নবাংশ;
ব্বরের অধিপতি গুলের নবাংশের অন্তর্গত, অতএব চক্র গুলের নবাংশে অবস্থিত, গুলে চক্রের লফ, এজর চক্রের নবাংশেরল ও৪৫ কলাদি। মলল ঐ সমর মেবরাশির ২ অংশে অর্থাৎ
ক্রের নবাংশের মধ্যে থাকার মলল বীর নবাংশে অবস্থিত, অতএব মললের নবাংশবল
৩০।০ কলাদি। উক্ত সমরে বৃধ্পত্র মীনরাশির ৪ অংশ মধ্যে অবস্থিত, উহা কর্কটের
ভূতীর নবাংশের অন্তর্গত, মুতরাং বৃধ উহার অধিপতি, এজন্ত বৃধ বীর নবাংশে থাকার
ব্বের নবাংশবল ৩০।০ কলা। বৃহস্পতি ঐ সমর ভূলারাশির ৫ম নবাংশ মধ্যে অবস্থিত,
উহা মকরের অধিপতি শনির নবাংশের অন্তর্গত, অতএব বৃহস্পতি শনির নবাংশে
অবস্থিত, ঐ শনি বৃহস্পতির শক্র, এজন্ত বৃহস্পতির নবাংশের অন্তর্গত, স্থতরাং
শুলের ১ নবাংশ মধ্যে অবস্থিত, ঐ নবাংশ শুলের স্বীর নবাংশের অন্তর্গত, স্থতরাং
শুলের নবাংশবল ৩০।০ কলাদি। আর ঐ সমর শনি মিথুনরাশির ২৬ অংশের
মধ্যে অবস্থিত, ঐ ২৬ অংশ তুলার অন্তম নবাংশের অন্তর্গত, শুক্র ঐ নবাংশের অবিপতি,
অতএব শনি শুক্রের নবাংশে অবস্থিত, ঐ শুক্র শনির অধিমিত্র, স্থতরাং শনির নবাংশ-বল ২২।৩০ কলাদি নির্গাত হইল।

• বাদশাংশবল; —পূর্ব্বোলিখিত জন্মসমরের গ্রহক্ট ও জন্মকুওলী দৃষ্টে জানা বাইতেছে বে, রবি মেবরাশির প্রথম অংশের মধ্যে অবস্থিত। ঐ মেবের প্রথম অংশ মঙ্গতের > বাদশাংশের অন্তর্গত; স্কুতরাং রবি মঙ্গলের বাদশাংশে অবস্থিত; আর মিত্রাদিচক্র
দৃষ্টে জানা বাইতেছে বে, মঙ্গল রখির সম; অতএব রবির বাদশাংশবল ৭ কলাও বিকলা।
ঐ সমর চক্র ধন্থরাশির ছর অংশের মধ্যে অবস্থিত, ঐ ছয় অংশ ধন্থরাশির ভৃতীর বাদশাংশের অন্তর্গত, শনি ঐ বাদশাংশের অধিপতি; স্কুতরাং চক্র শনির বাদশাংশে
অবস্থিত; শনি চক্রের শক্র; এজন্ত চক্রের বাদশাংশবল ও কলা ৪৫ বিকলা। মঙ্গল
ঐ সমরে মেবরাশির ২০০ অংশাদির মধ্যে অবস্থিত, উহা মেবরাশির প্রথম বাদশাংশের
অন্তর্গত, মঙ্গল ঐ বাদশাংশের অধিপতি, অতএব মুক্ল স্বীর বাদশাংশে থাকার উহার

২০ কলা ; ইহা হইতে ৬ অংশ ৪০ কলা পৰ্য্যন্ত ২য় নৰাংশ, ২য় হইতে ১০ অংশ পৰ্য্যন্ত বন্ধ, বন্ধ হইতে ১০২০ অংশাদি পৰ্যান্ত ৪ৰ্ব, ৪ৰ্ব হইতে ১৬৪০ পৰ্য্যন্ত ৫ম, ৫ম হইতে ২০ অংশ পৰ্য্যন্ত বন্ধ, উহা হুইতে ২০৯২০ অংশাদি পৰ্য্যন্ত নপ্তম, ৭ম হুইতে ২৬৪০ পৰ্য্যন্ত ৮ম এবং ৮ম নবাংশ হুইতে ৩০ অংশ পৰ্য্যন্ত মৰ্ম নৰাংশ।

এক রাশিকে অর্থাৎ ৩০ অংশকে ১২ দিরা ভাগ করিলে তাহার এখন ভারশাংশের প্রিমাণ
 অংশ, ৩০ কলা, উহা হইতে ৫ অংশ পর্যাক্ত ২য়, ২য় হইতে ৭।৩০ পর্যাক্ত ৩র, ৩র হইতে ১০ অংশ পর্যাক্ত
 এর্থ ইইতে ১২।৩০ পর্যাক্ত ৫ম, ৫ম হইতে ১৫ পর্যাক্ত বঠ, বঠ হইতে ১৭।৩০ অংশাদি পর্যাক্ত ৭ম, ৭ম

বল ৩০ কলা। বৃধ ঐ সমরে মীনরাশির ২য় বাদশাংশের মধ্যে অবস্থিত, উহা মেবরাশির অধিপতি মললের বাদশাংশের অন্তর্গত, স্থতরাং বৃধ মললের বাদশাংশে অবস্থিতি করিতেছে, মলল বৃধের মিত্র; এজন্ত বৃধের বাদশাংশবল ১৫ কলা। বৃহস্পতি ঐ সমরে তুলারাশির ১২ অংশের মধ্যে অবস্থিত, ঐ ১২ অংশ তুলারাশির ৫ম বাদশাংশের অন্তর্গত, শনি ঐ বাদশাংশের অধিপতি, স্থতরাং বৃহস্পতি শনির বাদশাংশে অবস্থিতি করিতেছে, শনি বৃহস্পতির লক্ত্র, এজন্ত বৃহস্পতির বাদশাংশন মধ্যে করিছিত, ঐ বাদশাংশ মধ্যে অবস্থিত, ঐ বাদশাংশ মধ্যে অবস্থিত, এ বাদশাংশ মধ্যে অবস্থিত, বৃধ শুক্তের অন্তর্গতির বাদশাংশের অন্তর্গত, বৃধ শুক্তের অন্তর্গতির বাদশাংশের অন্তর্গত, বৃত্রাং শুক্ত বৃধের বাদশাংশে অবস্থিত; বৃধ শুক্তের অন্তর্ধিমিত্র; এজন্ত শুক্তের বাদশাংশবল ২২৷০০ কলাদি এবং শনি উলিখিত জন্মকালে মিথুনরাশির ১১শ বাদশাংশ মধ্যে অবস্থিত, উহা মেব রাশির অধিপতি মলনের বাদশাংশের অন্তর্গত, অতএব শনি মললের বাদশাংশে অবস্থিতি করিতেছে, মলল শনির সম; এজন্ত শনির বাদশাংশবল ৭ কলা, ৩০ বিকলা স্থির হুইল।

* ত্রিংশাংশবল; —পূর্ব্বোরিধিত জন্মসময়ের গ্রহক্ট ও জন্মকুওলী দৃষ্টে জানা বাই-তেছে যে, রবি মেবরাশির ৫ অংশ মধ্যে থাকার ঐ রাশির প্রথম ত্রিংশাংশে অবস্থিত, উহা মেবের অধিপতি মকলের ত্রিংশাংশের অন্তর্গত, অতএব রবি মকলের ত্রিংশাংশে অবস্থিত, মজল রবির সম; এজন্ত রবির ত্রিংশাংশবল ৭ কলা ৩০ বিকলা। চন্ত্র ঐ সমরে ধন্তুরাশির ৬ অংশবধ্যে থাকার ঐ রাশির ২র ত্রিংশাংশের অর্থাৎ ১২ অংশ মধ্যে অবস্থিত, উহা মকরের অধিপতি শনির ত্রিংশাংশের অন্তর্গত, অতএব চন্ত্র শনির ত্রিংশাংশে অবস্থিত, শনি চন্ত্রের পক্র; এজন্ত চন্ত্রের ত্রিংশাংশবল ৩ কলা ৪৫ বিকলা। মকল উরিধিত জন্মকালে মেবরাশির ৩ অংশমধ্যে থাকার ঐ রাশির ১ম ত্রিংশাংশে অর্থাৎ ৫ অংশমধ্যে অবস্থিত, উহা মেবের অধিপতি মকলের ত্রিংশাংশের অন্তর্গত, অতএব মকল স্থীর ত্রিংশাংশে অবস্থিতি করিতেছে; এজন্ত মন্থলের ত্রিংশাংশেল ৩০ কলা। ব্য ঐ সমরে মীনরাশির ৪ অংশ মধ্যে থাকার ঐ রাশির ১ম ত্রিংশাংশে অর্থাৎ ৫ সংশমধ্যে অবস্থিত, উহা বুরের অধিপতি শুক্রের ত্রিংশাংশের অন্তর্গত; অতএব বুর

ইইতে ২০ অংশ পৰ্যান্ত ৮ম, ৮ম হইতে ২২।৩০ পৰ্যান্ত নবম, নবম হইতে ২০ অংশ পৰ্যান্ত ১০ম, ১০ম হইতে ২৭।৩০ পৰ্যান্ত ১১শ এবং ১১শ হইতে ৩০ অংশ পৰ্যান্ত ১২শ বাদশাংশ।

^{*} এক রাশি অর্থাৎ ৩০ জংশকে ৩০ দিরা ভাগ করিলে ত্রিংশাংশের পরিমাণ ১ জংশ হর, কমশঃ গর পর এক এক জংশ বোগ করিলে এখন, দ্বিতীর ইত্যাদি ত্রিশ পর্যন্ত ত্রিংশাংশ হইবে। অবুর রাশিতে এখন পাঁচ জংশ পর্যন্ত ত্রিংশাংশের ক্ষ্মিপতি সলল, ঐ ৫ হইতে ১০ পর্যন্ত পনি, ১০ হইতে ১৮ পর্যন্ত বংশার্ড, ১৮ হইতে ২৫ জংশ প্রান্ত রুণ এবং ২৫ হইতে ৩০ পর্যন্ত ত্রিংশাংশের অধিপতি শুক্র। আর

শুক্রের জিংশাংশে অবৃদ্ধিত করিতেছে, শুক্র বুধের বিজ ; এজন্ত বুধের জিংশাংশবল ১৫ কলা। বৃহস্পতি ঐ সমরে তুলারাশির ১২ অংশ মধ্যে থাকার ঐ রাশির ওর জিংশাংশে অর্থাৎ ১৮ অংশমধ্যে অবৃদ্ধিত, উহা মীনরাশির অধিপতি বৃহস্পতির জিংশাংশর অন্তর্গত; অভএব বৃহস্পতি সীর জিংশাংশে অবৃদ্ধিত; এজন্ত বৃহস্পতির জিংশাংশরণ ৩০ কলা। শুক্র ঐ সমরে বৃষরাশির তিন অংশমধ্যে থাকার ঐ রাশির ১য় জিংশাংশে অর্থাৎ ৫ অংশের মধ্যে অবৃদ্ধিত, উহা ঐ রাশির অধিপতি শুক্রের জিংশাংশের অন্তর্গত, মুত্রাং শুক্র স্বীর জিংশাংশে অবৃদ্ধিত করাতে উহার বল ৩০ কলা এবং শনি উল্লিখিত জ্বরুবালে মিথুন রাশির ২৩ অংশমধ্যে অবৃদ্ধিত করিতেছে বলিরা ঐ রাশির ৫ জিংশাংশে অর্থাৎ ৩০ অংশের মধ্যে বিদ্যামান আছে, উহা বৃষের অধিপতি শুক্রের জিংশাংশের অন্তর্গত, মুত্রাং শনি শুক্রের জিংশাংশের অন্তর্গত, স্থিতরাং শনির শুক্রের জিংশাংশের অন্তর্গত, স্থানাং শনি শুক্রের জিংশাংশে অবৃদ্ধিত; শুক্র শনির আধিমিত্র; এজন্ত শনির জিংশাংশের হং কলা, ৩০ বিক্লা শ্বির হইল।

ওজ ও যুগারাশিকখন।

মেব, মিপুন, সিংহ, তুলা, ধছু ও কুন্ত, ইহারা বিষম ওজ বা অব্যা রাশি । বৃব, কর্কট, কক্সা, বৃশ্চিক, মকর ও মীন, ইহারা যুগা বা সম রাশি।

বুগাভাংশগভো চন্দ্রপ্রকো বাণেন্দুরীর্য্যদৌ। অধুগাভাংশগা অক্তে ভাবন্ত এব বীর্যাদাঃ।

চক্র এবং শুক্র বলি যুগা রাশি বা যুগারাশির নবাংশে অবস্থিতি করে, তাহা হইলে ভাহাদিগের বল ১৫ কলা, আর অক্লাক্ত গ্রহ যদি অযুগা রাশি বা অযুগারাশির নবাংশে থাকে, তাহা হইলে তাহাদিগের বল পাদ অর্থাৎ ১৫ কলা হইবে।

बुगाबुग्रज्ञाभिवत्मत्र मृछी छ।

এই থণ্ডের ৭৬ পৃষ্ঠার লিখিত ক্মাকুণ্ডলী দৃষ্টে মেষ অবধি ওক যুগ্মাদি ক্রমে গণনা করিরা কানা বাইতেছে বে, রবি ও মলল অব্থারালি মেষে, বৃহস্পতি তুলার এবং শনি অব্থারাশি নিপুনে অবস্থিত; স্ত্তরাং ইহাদের বল ১৫ কলা। ঐরপ গণনা বারা ছির কইতেছে বে, শুকু যুগ্রাশি বুবে অবস্থিত; অভএব ইহার বল ১৫। কলাদি এবং চল্ল

বৃশ্বরাশিতে এখন গাঁচ অংশের অধিগতি গুজ, ৫ হইতে ১২ অংশ পর্যন্ত বিংশাংশের অধিগতি বৃধ, ১২ হইতে ২০ পর্যন্ত বৃহস্পতি, ২০ হইতে ২০ পর্যন্ত শনি এবং ২৫ অংশ হইতে ৩০ অংশ পর্যন্ত বিংশাংশের অধিপতি বছল হইতে ।

জর্ম রাশি ধহতে ও বুধ বৃথারাশি দীনে জবস্থিতি করিতেছে; স্তরাং ইহাদিসের উভরের বল ০া০ শৃস্ত হির হইল।

যুগাযুগাভাংশবলের দৃষ্টান্ত।

পূর্বোক্ত নবাংশচক্রে মেব অবধি ওজ্যুগ্নাদিক্রেমে গণনা বারা দেখা বাইতেছে বে, রবি ও মঙ্গণ অব্গু মেবরাশির প্রথম অবৃগ্ন নবাংশে অবস্থিত, ইহা অবৃগ্রাশির নবাংশের অন্ধর্গত, প্রতরাং উহাদের বল ১৫ কলা। চক্র ধন্তরাশির বিতীর নবাংশে অবস্থিত, ইহা বুগারাশি ব্বের অধিপতি শুক্রের নবাংশের অন্ধর্গত; প্রতরাং ইহার বল ১৫ কলা। শুক্র বুষরাশির প্রথম নবাংশে অবস্থিত, উহা বুগারাশি মকরের অধিপতি শনির নবাংশের অন্ধর্গত, এজন্ত ইহার বল ১৫ কলা। বুধ, মীনরাশির বিতীর নবাংশে অবস্থিত, উহা অবৃগ্রাশি সিংহের অধিপতি রবির নবাংশের অন্ধর্গত; প্রতরাং ইহার বল ১৫ কলা। বুহস্পতি তুলার চতুর্থ নবাংশে অবস্থিত, উহা বুগারাশি মকরের অধিপতি শনির নবাংশের অন্ধর্গত, প্রতরাং ইহার বল ৩ শৃক্ত এবং শনি মিথুনরাশির অন্তম নবাংশে অবাস্থত; উহা বুগারাশি বুবের অধিপতি শুক্রের নবাংশের অন্ধর্গত; প্রতরাং ইহার বল ৩ শৃক্ত বির হইল।

शूल्य, जी ७ क्रोव थह कथन।

রবি, মলল এবং বৃহস্পতি পুরুষ ; চক্র ও শুক্র স্ত্রী এবং বুধ ও শনি ক্লীব গ্রহ জানিবে।
আদিমধ্যান্তপা রাশেঃ পুৎষণ্ডস্ত্রীগ্রহা অপি।

যদি পুরুষ গ্রহ অর্থাৎ রবি, মদল ও বৃহস্পতি স্থিতিরাশির প্রথম জেকাণে থাকে, তবে তাহাদিগের বল ১৫ কলা এবং ক্লীবগ্রহ বৃষ ও শনি বদি স্থিতিরাশির বিভীন জেকাণে অবস্থিতি করে, তবে তাহাদিগের বল ১৫ কলা এবং ত্রী গ্রহ চক্র ও শুক্র যদি স্থিতিরাশির শেব জেকাণে অবস্থিতি করে, তবে তাহাদিগের বল ১৫ কলা গ্রহণ করিতে হইবে।

भूष्यानियत्नत छेनाद्रम ।

পুরুষ গ্রহ অর্থাৎ রবি ও মঙ্গল ইহারা মেবরাশির প্রথম ভাগে অর্থাৎ প্রথম দ্রেকাণে অবস্থিত; স্থতরাং ইহানিগের বল ১৫ কলা। বৃহস্পতি ভূলারাশির বিতীর দ্রেকাণে অবস্থিত বলিরা ইহার বল •।•। স্ত্রীগ্রহ অর্থাৎ চক্র ধন্তরাশির ও শুক্র ব্বরাশির প্রথম ভাগে অর্থাৎ প্রেকাণে অবস্থিতি করিতেছে; স্থতরাং এই উভরের বল •।•

ভার দ্লীব এক ভর্বাৎ বৃধ নীনের প্রথম প্রেকানে ও পনি বিধুনরাশির শেব জেভাগে ভব-বিভ থাকার ইহাদিগের বল ০।০।

কেন্দ্রপণকর ও আপোক্লিম কথন।

লগ্ন এবং লথের চতুর্ব, দশম ও সপ্তমস্থানকে কেন্দ্র, লথের বিতীর, পঞ্চম, আইন ও একাদশ স্থানকে পণকর কছে এবং লথের তৃতীয়, বর্চ, নবম ও বাদশ স্থানকৈ আপো-ক্লিম কছে।

> क्क्यानिश्ववरक्षोकः वर्किजिश्मविधिः क्रमार । वदः श्वानवनः श्वाकः निधनः कथारकश्या ॥

শগাবিধ গণনাতে বে গ্রহ কেন্দ্রে অর্থাৎ ১/৪/৭/১০ হানে থাকিবে, তাহার বল ৬০ কলা, আর পণকর অর্থাৎ ২/৫/৮/১১ রাশিতে থাকিলে তাহার বল ৩০ কলা এবং আপোরিষ অর্থাৎ এ৬/৯/১২ রাশিতে অবস্থিতি করিলে ভাহার বল ১৫ কলা। এই প্রকারে হানবল উক্ত হইল। অভঃপর দিখল কথিত হইবে।

मृकीख।

১৮০৯ শকের ১লা বৈশাধ বেলা হুইপ্রহর সময়ে কর্কটলগ্নের কেন্দ্রে অর্থাৎ লগ্ন হুইতে গণনার চতুর্থ স্থান তুলালাশিতে বৃহস্পতি এবং লগ্ন হুইতে গণনার দশম স্থান মেধরাশিতে রবি ও মঙ্গল থাকার ইহাদিগের বল ৬০ কলা। আর ঐ সময়ে শুক্র পণকর অর্থাৎ লগ্ন হুইতে গণনার একাদশ স্থান ব্যরাশিতে থাকার শুক্রর বল ৩০ কলা এবং চন্দ্র হুইতে গণনার আপোক্রিম আর্থাৎ বন্ধ স্থান ধন্ধরাশিতে, বৃধ নবম স্থান মীনরাশিতে এবং শনি লগ্ন হুইতে গণনার বাদশ স্থান মিধুন রাশিতে থাকার ইহাদিগের বল ১৫ কলা স্থির হুইল।

मिश्रेल कथन।

বৃধ এবং বৃহস্পতি লগে অর্থাৎ পূর্বাদিকে থাকিলে, মঙ্গল এবং রবি দশমস্থান অর্থাৎ দক্ষিণদিকে, শনি সপ্তমন্থান অর্থাৎ পশ্চিমদিকে এবং চক্র ভক্ত চতুর্থন্থান অর্থাৎ উত্তর্গাদকে অর্থান্তি করিলে ঐ সকল এই দিখলযুক্ত হইরা থাকে।

দিখলকথনম্।

শনিং কুজার্কে জগুর গিতেক্দৃক্টকৈং ক্রমাৎ। অন্তরোহংশীকুভএগাতভোষামাশাবলং ভবেৎ। শনির দিবলগাবন করিতে হইলে শনির স্ট্রাভাবি ভয়ুভাবের ক্টরাভাবি হইতে হীন করিবে এবং সদল ও রবির দিখলুসাধনহলে বছুভাবের কুটরাপ্তাদি হইতে নলল ও রবির কুটরাপ্তাদি অন্তর করিতে হইবে। আর বুধ এবং বৃহস্পতির দিখলুসাধন সমঙ্কে উক্ত হুই গ্রহের ক্টরাপ্তাদি পৃদ্ধীভাবের ক্টরাপ্তাদি হইতে বিরোগ করিবে। আর ওক এবং চক্রের দিখলুসাধনকালে চক্র ও ওক্রের ক্টরাপ্তাদি কর্মভাবের ক্টরাপ্তাদি হইতে হীন করিবে। অন্তরকরণ সমরে ধাহার ক্ট হইতে বে ক্টরাপ্তাদি বিরোগ করিতে হইবে, তহুভরের মধ্যে ধাহা অধিক হইবে, তাহাকে উপরে সংস্থাপন করিয়। বিরোগ করিবে। অন্তর করিয়। শেব বদি ছয় রাশির অধিক থাকে, তাহা হইলে পুনরার তাহা হাদশ্রাশি হইতে হান করিবে। পরে অন্তর করিলে শেব বে রাশি থাকিবে, তাহাকে তিল হারা পুরণ করত অংশের সহিত যোগ করিয়। যোগান্ধকে তিন হারা ভাগা করিয়। বে কলাদি লাভ হইবে, তাহাই সেই গ্রহের দিখল।

দিখলগণনার দৃষ্টান্ত।

এই খণ্ডের ৭৫ পৃষ্ঠার নিধিতামুসারে ১৮০৯ শকের ১লা'বৈশাথ বেলা ছুইপ্রছর সমরের পূর্ব্বোক্ত ভত্নভাব অর্থাৎ লয়ক ট অভাব । ১৪ রাজাদি হইতে তাৎকালিক শনিক ট বাংলা ৪৭।৫৮ রাখ্যাদি হীন করিলে বে ১০।৩২।৩৬ অংশাদি অবশিষ্ট থাকে, তাহাকে ৩ বারা ভাগ করিলে ০ কলা ৩১ বিকলা লব্ধ হয়; ইহাই শনির পূর্ব্বদিখল। ঐ সময়ের বছুভাব খ। ২৫: ६৬ রাখাদি হইতে রবির ক্ট ।।। ২৫। ৪৬ রাখাদি হীন করিলে বে৬ রাশি অবশিষ্ট ধাকে, এই ৬ রাশিকে ৩০ বারা গুণ করত গুণফল ১৮০ কে ৩ বারা ভাগ করিলে ৬০ কলা লব্ধ হয়; ইহাই রবির দক্ষিণদিখল এবং ঐ বন্ধুভাব হইতে মঙ্গলের তাংকালিক ক্ট •াহাহ গান্ত রাশ্রাদি হীন করিলে ৫৷হচাহচা৪২ অবশিষ্ট থাকে, পরে ইহার রাশি ৫ কে ৩০ বারা ৩৩০ করত ৩৩০ফল ১৫০ অংশের সহিত ঐ ২৮।২৮।৪২ षःशांकि त्यांत्र कतित्व त्व ১१४।२४।८२ षःशांकि इत्र, जाशांकि ७ वाता जात्र कतित्रा ६৯।२३ वनामि इहेन; हेहाहे मन्यान पूर्विमियन। जै नमाइ नश्चमान अ। अ०।०।०। त्रानामित्र ৰুধের তাৎকালিক ক্ষুট ১১৷৩৷৩৯৷১৫ রাখ্যাদি হইতে হীন করিলে যে ১৷২৭৷১৮৷৪১রাখ্যাদি শবশিষ্ট থাকে, ইহার রাশি ১কে ৩০ ছারা ৩৩৭ করত গুণফলের সহিত ২৭।১৮।৪১ জংশাদি বোপ করিলে ৫৭।১৮৪১ অংশাদি হয় ; ইহাকে ৩ ছারা ভাগ করিয়া ১৯া৬ কলাছি হইল; ইহাই বুধের পশ্চিম্দিখল। একপ পূর্ব্বোক্ত সময়ের সপ্তমভাব ৯।৬।২০।৩৫ রাখ্যাদি ইইতে বৃহস্পতির তাৎকালিক কুট ৬১১১২১১৮ রাঞ্চাদি হীন করিলে যে ২៛২৪।৫৯।১৬ ম্বশিষ্ট থাকে, ইহার রাশি ২ কে ৩০ হার। গুণ করত গুণফলের সহিত ২৪।৫৯।১৬ শংশাদি বোগ করিলে e৪ie৯i১৬ সংশাদি হয়, ইহাকে ৩ ছারা ভাগ করিরা ২৮i২+ क्नामि हहेन ; हेहारे बुरुव्याजित शिक्तमिथन । जात उद्धात जांदकानिक स हे शशास्त्र

রাঞ্চাদি হইতে উক্ত সমরের দশমভাবেদ কুট ০।০।৫৪৪৬ রাঞ্চাদি হীন করিলে বে ১।১।৫২।৪২ রাঞ্চাদি অবলিট থাকে, উহার রাশি ১ কে ৩০ বারা ৩০ করত ৩০ কল ৩০ অংশের সহিত ১।৫২।৪২ অংশদি বোস করিলে ০১।৫২।৪২ অংশদি হর; ইহাকে ৩ দিরা তাগ করিরা ১০।৩৭ কলাদি হইল; ইহাই ওজের উত্তরদিখল এবং চজের তাংকালিক কুট ৮।৫।৩৯।২ রাঞ্চাদি হইতে ঐ সমরের দশমভাবের কুটরাঞ্চাদি ০।০।৫৫।৪৬ হীন করিলে ৮।৪।৪৩।১৬ অবলিট থাকে, কিন্তু এই অবশিটাক ৬ রাশির অধিক হওরার ইহাকে ১২ রাশি হইতে হীন করিরা অ২৫।১৬৪৪ রাঞ্চাদি হইল। পরে ইহার রাশি ০ কে ৩০ বারা ৩০ করিরা ওপকল ১০ অংশের সহিত ২৫।১৬৪৪ অংশাদি বোগ করিলে ১১৫।১৬৪৪ অংশাদি হর। ইহাকে ৩ বারা ভাগ করিরা লক্ষ ওলংক কণাদি হইল; ইহাই চজের উত্রদিখল।

তিথি কাহাকে বলে এবং ঐ তিথি বেদ্ধপে গণনা করিতে হর, দৃষ্টাস্ত সহ তাহা এই ফলিজ-জ্যোতিষের প্রথম খণ্ডেই বর্ণিত হইরাছে। তথাপি পাঠকবর্ণের বিদিতার্থ এছলে সংক্ষেপে ক্থিত হইতেছে।

শুক্লাভিথি,—১ প্ৰতিপদ, ২ বিতীয়া, ও তৃতীয়া, ৪ চতুৰ্থী, ৫ পঞ্চনী, ৬ বঞ্জী, ৭ সপ্তনী, ৮ আইনী, ৯ নবনী, ১০ দশনী, ১১ একাদনী, ১২ বাদনী, ১০ এবেদনী, ১৪ চতুৰ্দনী ও ১৫ পূৰ্ণিয়া।

क्षाजिबि,— ১৬ প্রতিপদ, ১৭ বিতীরা, ১৮ তৃতীরা, ১৯ চতুর্থী, ২০ পঞ্চমী, ২১ বল্লী, ২২ সপ্তমী, ২৩ অইমী, ২৪ নবমী, ২৫ দশমী, ২৬ একাদশী, ২৭ বাদশী, ২৮ অব্যোদশী, ২৯ চতুর্দশী ও ৩০ অমাবস্থা।

ভতগ্রহ অর্থাৎ চক্র, বুধ, বৃহস্পতি ও গুক্র ইহারা গুরুপক্ষে বলবান্ এবং পাপগ্রহ রবি, বলব ও শনি ইহারা ক্রঞ্পক্ষে বলবান্ হয়। অর্থাৎ গুরুপক্ষের প্রতিগদ অবধি প্রতিদিন ও কলা করিয়া গুভগ্রহের বল বৃদ্ধি পার, স্মৃতরাং গুভগ্রহণণ পূর্ণিমাতে সম্পূণ ৬০ কলা বলবান হইয়া থাকে। ঐরপ পাপগ্রহের বল ক্ষ্পপক্ষের প্রতিপদ অবধি ৪ কলা করিয়া স্থিদি আইকে থাকে এবং অমাবস্থাতে তাহারা সম্পূর্ণ ৬০ কলা বলবান্ হয়।

শব কালবলং বক্ষ্যে পক্ষাবিবলভেনতঃ। রবীক্ষোশ্চান্তরন্ত্যাঞ্জঃ পক্ষ-শীর্যাং ভবেদিধাঃ। সদ্ধাহাশ্যক পাপানাং ভখলং মন্টিভশ্যুতং।

পকাদি বলতেকে প্রহদিগের কালবল কথিত হইতেছে। রবির ক্ট হইতে চক্রক্ট হীন করিবে। হীন করণে অবোগ্য হইলে চক্রক্ট হইতে রবিক্ট হীন করিবে। হীনাবশেব বদি হব রাশি হইতে অধিক হব, ভাহা হইলে বাদশ হইতে ভাহা পুনরার অন্তর করিব। শেব রাশি থাকিবে ভাহাকে বিশ বারা পুরণ করত অংশের সহিত মিশ্রিত করিবে। পরে সেই অংশাদিকে তিন বারা ভাগ করিয়া বাহা লব্ধ হইবে, তাহাই চন্দ্রের পক্ষবল। ঐ পক্ষবলই শুভ গ্রহদিগের পক্ষবল বলিয়া পরিগৃহীত হইবে এবং ঐ পক্ষবলকে বৃষ্টি হইজে হীন করিয়া বাহা শেব থাকিবে, তাহাই পাপগ্রহগণের পক্ষবল বলিয়া নির্দিষ্ট হইবে। *

शक्रवन माध्यात मुक्कोन्छ।

পূর্ব্বোক্ত রবিক্ষুট •।• ৫৫।৪৬ হইতে চল্লের ক্ষুট ৮।৫।০৯।২ হীন করিলে এ২৫।১৬।৪৪ রাঞ্চাদি অবশিষ্ট থাকে। পরে ইহার রাশি ৩ কে ৩• ছারা গুণ করিরা গুণকল ৯• অংশের সহিত ২৫।১৬।৪৪ যোগ করিলে ১১৫।১৬।৪৪ অংশাদি হয়। উহাকে ৩ দিয়া ভাগ করিয়া লক্ক ৩৮।২৫ কলাদি হইল; ইহাই শুভগ্রহ অর্থাৎ চন্দ্র, বুধ, বুহস্পতি গু শুক্রের পক্ষবল। আর ঐ ৩৮।২৫ কলাদিকে ৬০ হইতে হীন করিলে যে ২১।৩৫ কলাদি অবশিষ্ট থাকে, তাহাই পাপগ্রহ অর্থাৎ দ্বি, মঙ্গল ও শনির পক্ষবল।

অহুক্রাংশে বলং ষষ্টিজ্ঞ স্থি ভানোঃ শনেঃ ক্রমাৎ। রাজেরিন্দোর্ভুগোর্ভুমিপুত্রস্থ তৎ সদা গুরোঃ ॥

ষদি দিবদে জন্ম হয়, তাহা হইলে দিনমানকে সমান তিন ভাগে বিভক্ত করিরা তাহার প্রথম ভাগে জন্ম হইলে বুধের ৬০ কলা বল, দ্বিতীয় ভাগে জন্ম হইলে রবির ৬০ কলা বল ও তৃতীয় ভাগে জন্ম হইলে শনির ৬০ কলা বল গ্রহণ করিবে। আর বিদি রাত্রিতে জন্ম হয়, তাহা হইলে রাত্রিমানকে তিন ভাগ করিয়া প্রথম ভাগে চন্দ্রের ৬০ কলা বল, দ্বিতীয় ভাগে ত্ত্রের ৬০ কলা বল, তৃতীয় ভাগে মঙ্গলের ৬০ কলা বল জানিবে এবং দিন ও রাত্রি এই উভয় সময়েই বৃহস্পতির ৬০ কলা বল গ্রহণ করিবে।

দিবাত্রিভাগবল গণনার দৃষ্টাস্ত।

পুর্ব্বোক্ত ১৮০৯ শকের ১লা বৈশাধ দিব। ছই প্রহরের সময় অর্থাৎ দিবসের মধ্যতাগে জন্ম হইরাছে বলিয়া রবির বল ৬০ কলা এবং দিবারাত্রি ষ্টিদ্ওমধ্যে জন্ম হইলে বৃহস্পতির বল ৬০ কলা হায়, এজন্ত এছলে বৃহস্পতির বল ৬০ কলা জানা যাইতেছে।

অন্তর্তে,—নিশি শশিকুলসৌরা: সর্বদা জ্লোহহ্নি চাল্ডে বছলসিতগতা: আঃ জুরসৌম্যা: ক্রমেশ।
 আয়ননিবসহোরামাসশৈ: কাজবীর্ত্ত শক্তভ্চরাদ্যা বৃদ্ধিতা বীর্যবস্তঃ । বৃহক্ষাতকং।

চক্র, মঙ্গল এবং শনি ইহারা রাত্রিতে বলবান, বুধ দিবারাত্রে এবং অক্যান্ত এই অর্থাৎ রবি, বৃহস্পতি ও ডক্র ইহারা দিবাভাগে বলবান হর। পাপএহগণ কৃষ্ণক্তি এবং ভঙ্গ্রহগণ জ্বপক্ষে বলবান হইর। গাকে। এতদ্ভিন্ন বে এই বখন বে বৎসরের, বে মাসের, যে দিনের এবং বে হোরার অধিপতি হইর। খাকে, ভখন সেই গ্রহই বলবান হয়।

निन, मक्क, न्थ, दृहन्निष्ठि, अकः, इत्स अ तिवि हैदाहा शत शत वशक्राय वनवान् इतः।

আরি দিবা ছইপ্রহরের সমর জন্ম চইয়াছে বলিয়া অভাক্ত গ্রহ অর্থাৎ চক্র, মসল, বুধ, ডক্র ও শনি ইহাদিগের বল • শৃত কলাদি।

বর্ধাধিপতি, মাসাধিপতি, দিনাধিপতি ও কালহোরাধিপতির বল গণনার সংস্কত বলার অপ্রে বর্ধাধিপতি, মাসাধিপতি, দিনাধিপতি ও কালহোরাধিপতি মেরূপে গণনা ক্সরিতে হর, একণ তাহাই ক্ষিত হইতেছে।

বর্ষ।ধিপতিগণনা।

শাকর ত্রিগুণীক্রত্য ছৌ দত্বা মুনিনা হরেৎ।
শেষো রব্যাদিতে। বর্ষাধিপঃ প্রোক্তো মনীবিভিঃ।

জাতকার্ণব:।

শকালান্তকে ৩ দারা গুণ করিয়া গুণফলের সহিত ২ বোগ করত বোগজান্তকে । দারা হরণ করিবে, পরে যাহা অবশিষ্ট থাকিবে, রবি অবধি গণনায় তাহাই বর্ষাধিপতি হইবে অর্থাৎ ১ অবশিষ্ট থাকিলে রবি, ২ থাকিলে চক্ত ইত্যাদি।

মাসাধিপতিগণনা।

শাকং চতুঃষত্তিযুগেল্প ১৪৬৪ হীনং পুজেল্প ১২ নিশ্বং রবিমাসযুক্তং। ত্রিশ্বং ত্রিযুক্তং নগণেষিতঞ্জ সুর্য্যাদিতো ভাক্ষরমাসনাধঃ॥

জাতকাৰ্বঃ।

শকালার হইতে ১৪৬৪ হীন করিয়া যাহা অবশিষ্ট থাকিবে, তাহাকে ১২ দারা ওণ করিয়া গুণফলের সহিত বৈশাধ অবধি যত সৌরমাস গত হইয়াছে, তাহা ধোগ করিবে। অনস্কর বোগলারকে ও দারা গুণ করিয়া গুণফলের সহিত তিন যোগ করত যোগলারকে ৭ দিয়া হরণ করিলে যাহা অবশিষ্ট থাকিবে, রবি অবধি গণনার তাহাই সৌরমানাণি পতি, অর্থাৎ ১ অবশিষ্ট থাকিলে রবি, ২ থাকিলে চন্দ্র ইত্যাদি। স্নাতকার্ণবমতে বর্ষাণি পতি ও মাসাধিপতি গণনা করা অতি সহল্প বিধায় ইহার দৃষ্টান্ত এক্তলে দেওলা গেল না।

অক্তপ্রকারে বর্ষাধিপতি ও মাসাধিপতি গণনা।

কলিগভদিনরন্দং রামশৈলাগ্নি ৩৭০ হীনং খ্যুগখনর ৫০৪০ শিষ্টং খাগ্নি ৩০ ভি: খাল্রামে: ৩৬০। ক্রমত ইহ যদাপ্তং বি ২ কি ০ নিশ্নং সচন্দ্রং ১ শিশ-রিভি ৭ রবশিষ্টং মালবর্ষেশ্বরৌ ভঃ ।

সিদ্ধান্তরহান্তর মতাহাসারে গণিত দিনবুন্দের সহিত ১৭১৩৭৯২ বোগ করিলে ক্রি

দিনবৃদ্ধ হয়। এতি বিষয় এই সংশোধিত ফলিত-জ্যোতিবের ২র থণ্ডে বিশেষরূপে বর্ণিত হইরাছে। কলির ঐ দিনবৃদ্ধ হইতে ৩৭০ বিরোগ করিলে বাহা অবলিট থাকিবে, তাহাকে ৫০৪০ ঘারা ভাগ করিরা ভাগাবশিষ্টকে পৃথক্ চুই ছানে রাখিয়া একটাকে ৩০০ ঘারা ভাগ করিবে। উক্ত ভাগকলঘরের মধ্যে যেটাকে ৩৩০ ঘারা ভাগ করা হইরাছে, তাহাকে ৩ ঘারা এবং যেটাকে ৩০ ঘারা ভাগ করা হইরাছে, তাহাকে ৩ ঘারা এবং যেটাকে ৩০ ঘারা ভাগ করা হইরাছে, তাহাকে ২ ঘারা ৩০ করিয়া ৩০ফলের সহিত পৃথক্ পৃথক্রপে ১ যোগ করিবে। ঐ যোগজারঘরকে পৃথক্ পৃথক্রপে ৭ দিয়া ভাগ করিলে যে ছইটা ভাগলের থাকিবে, তাহাই বর্যাধিপতি ও মাসাধিপতি অর্থাং যেটাকে ৩ ঘারা ৩০ করা হইরাছে, তাহাকে ৭ ঘারা ভাগ করিয়া যাহা অবশিষ্ট থাকিবে, সেইটা বর্ষাধিপতি এবং যাহাকে ২ ঘারা ৩০ করা হইরাছে, তাহাকে ৭ ঘারা ভাগ করিয়া যাহা ভাগলের থাকিবে, তাহাই মাসাধিপতি। ঐ বর্ষাধিপতি ও মাসাধিপতি রবি হইতে গণনা করিতে হয় অর্থাৎ যদি ১ অবশিষ্ট থাকে, তাহা হইলে রবি, ২ থাকিলে চক্ত ইত্যাদি।

বর্ষাধিপতি গণনার দৃষ্টাস্ত।

১৮০৯ শকের বর্ষাধিপতি জানিতে হইলে পূর্ব্বোক্ত দিনাস্তরহত্তের মতাস্থারে গণিত দিনবৃদ্দ ১৮৮১৯৮ কে ১৭১০৭৯২ এর সহিত যোগ করিলে ১৮২১৯১০ হয়; ইহাই কলির দিনবৃদ্দ। পরে ইহা হইতে ৩৭৩ হীন করিলে ১৮২১৫৩৭ অবশিষ্ট থাকে। ইহাকে ৫০৪০ থারা ভাগ করিয়া ভাগশেষ যে ২০৯৭ রহিল, তাহাকে ৩৬০ থারা ভাগ করিলে গদ্ধ হয়, ইহাকে ৩ থারা ভাগ করেত ভাগদেলের সহিত ১ যোগ করিয়া ১৬ হইল। ইহাকে ৭ থারা ভাগ করিয়া অবশিষ্ট ২ রহিল। ইহা থারা জানা গেল যে, ২ অর্থাৎ চক্ত ১৮০৯ শকের বর্ষাধিপতি।

মাসাধিপতি গণনার দৃষ্টান্ত।

১৮০৯ শকের বৈশাধের মাসাধিপতি গণনা করিতে হইলে পুর্ব্বোক্ত কলির দিনর্দ্দ ১৮২১৯১০ হইতে ৩৭৩ হীন করিলে বে ১৮২১৫৩৭ অবশিষ্ট থাকে, তাহাকে ৫০৪০ ঘারা ভাগ করিয়া ২০৯৭ অবশিষ্ট রহিল; ইহাকে ৩০ ঘারা ভাগ করিলে ৬৯ লব্ধ হয়। এই ৬৯ কে ২ দিয়া গুণ করত গুণকলের সহিত ১ যোগ করিয়া ১৩৯ হইল। ইহাকে ৭ ঘারা ভাগ করিয়া অবশিষ্ট ৬ রহিল; ইহাই মাসাধিপতি অর্থাৎ জানা গেল যে, গুক্র এ শক্ষের বৈশাধের মাসাধিপতি।